www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

# अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 19 ■ 1-15 अगस्त, 2011

**संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट**
**सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका**

*अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।*

**❐ सदस्यता शुल्क :**

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

**❐ विज्ञापन सहयोग :**

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

**❐ सम्पर्क सूत्र :**

**अणुव्रत महासमिति**
**अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग**
**नई दिल्ली–110002**

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

- लोकतंत्र और नागरिक अनुशासन — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 3
- स्वस्थ लोकतंत्र के चार आधार — *आचार्य महाश्रमण* — 5
- वन्दे मातरम् — *ज्ञान भारद्वाज* — 7
- पद्दलित क्यों हैं आजाद आदमी — *सुरेश आनन्द* — 8
- जरा! याद करो कुर्बानी — *कुसुम जैन* — 10
- राष्ट्रवाद के पुरोधा — *डॉ. रामसिंह यादव* — 12
- मेवाड़ की परिक्रमा - अणुव्रत के संदर्भ में — *मुनि राकेशकुमार* — 14
- उतार-चढ़ाव भरा है लोकपाल बिल का इतिहास — *आशीष वशिष्ठ* — 16
- स्वतंत्रता पर परतंत्रता का आवरण — *डॉ. हीरालाल छाजेड़* — 19
- स्वतंत्रता दिवस और हमारा दायित्व — *डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी* — 20
- बच्चों में घटता लिंगानुपात — *डॉ. विनोद गुप्ता* — 22
- भारतीय जनपदों का विकास-काल — *डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार* — 24
- कुर्सीप्रधान देश बनता जा रहा है हिन्दुस्तान — *रामस्वरूप रावतसरे* — 27
- अहिंसा के सजग साधक — *मुनि सुखलाल* — 28
- अणुव्रत समितियां — *अणुव्रत डेस्क* — 29-36


## ■ स्तंभ


- संपादकीय — 2
- राष्ट्र चिंतन — 4
- प्रेरणा — 13
- झांकी है हिन्दुस्तान की — 11
- कविता — 9, 18, 21, 28
- पाठक दृष्टि — 19
- अणुव्रत आंदोलन — 37-40

www.terapanthinfo.com

संपादकीय

# सही मार्ग की तलाश में जनतंत्र

**''अणुव्रत का अर्थ नैतिकता है। नैतिकता के बिना अहिंसा सिद्ध नहीं हो सकती और अहिंसा के बिना नैतिकता प्रतिष्ठापित नहीं हो सकती।''** आचार्य महाप्रज्ञ के उक्त शब्दों में 64 वर्षीय गणतंत्र जिसमें मैं नैतिकता और अहिंसा दोनों को तलाश रहा हूँ। आज जो हो रहा है, जो कुछ बोला जा रहा है तथा जो सहा जा रहा है, क्या वह अहिंसा और नैतिकता है? वर्तमान माहौल को देखते हुए तो लगता है कि नैतिक और अहिंसक मूल्यों के अर्थ ही बदल गये हैं।

आज अनैतिक और हिंसक व्यक्तियों का बाहुल्य है। ये ही लोग देश की राजनीति, अर्थनीति और विदेश नीति को प्रभावित कर रहे हैं। सत्ता में जिस तरह से भ्रष्ट आचरण को पंख लगे हैं उससे तो यही लगता है कि हम मार्ग से भटक गये हैं। जिस भटके हुए मार्ग पर भारतीय जनतंत्र चल रहा है, उसने आजादी के अर्थ ही बदल दिये हैं। क्या बढ़ता भ्रष्टाचार, भोगवाद और हिंसा ही आजादी है?

भ्रष्टाचार और हिंसा के बढ़ने का कारण यह है कि नैतिक और अहिंसक मूल्यों को विकसित करने का प्रयत्न ही नहीं किया जा रहा है। बाल पीढ़ी को बचपन से ही हिंसा और अनैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिस कारण मानवीय संवेदनाएं विलुप्त हो रही हैं और स्वतंत्र भारत का स्वतंत्र नागरिक कदाचार की गोद में समाता जा रहा है। बढ़ती मूल्यविहीनता को देख यही लग रहा है कि हम अपने मार्ग से भटक गये हैं।

राजा भोज और कवि धनपाल कहीं जा रहे थे। जंगल में रास्ता भटक गए। केवल दो ही रह गए। शेष कारवां पीछे छूट गया। जंगल में भटकते हुए उन्हें एक झोंपड़ी दिखाई पड़ी। दोनों झोंपड़ी के पास गए तो देखा एक बुढ़िया बैठी थी। उन्होंने बुढ़िया से पूछा--''मांजी! धारा नगरी का रास्ता कौन-सा है?''

बुढ़िया बोली--''पहले तुम अपना परिचय दो। तुम कौन हो?''

राजा भोज ने कहा--''हम यात्री हैं।''

''असत्य। यात्री तो दो ही हैं--सूरज और चांद। स्पष्ट है कि तुम सूरज और चांद दोनों में से एक भी नहीं हो।''

राजा ने कहा--''हम शासक हैं।''

''यह भी असत्य है। शासक भी दो ही हैं--इंद्र और यमराज। इन दोनों में से आप कौन हैं ?'' बुढ़िया का चातुर्य राजा को निरुत्तर कर रहा था। उनका हर उत्तर एक नये प्रश्न को जन्म दे रहा था। राजा ने सही उत्तर देते हुए कहा--मैं भोज हूँ और ये कवि धनपाल हैं। हम रास्ता भटक गए हैं। हमें धारा नगरी का रास्ता बताएँ यही अनुरोध है। रास्ता कड़ी कसौटी के बाद मिलता है। राजा भोज को भी कसौटी से गुजरना पड़ा। बुढ़िया ने उन्हें रास्ता बताया।

मार्ग से भटके हुए लोकतंत्र को पुनः पटरी पर लाने के लिए हमें खरी कसौटी पर उतरना होगा। अणुव्रत की आचार संहिता वह कसौटी है जिसे स्वीकार कर हम स्वस्थ राष्ट्र एवं स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में केलवा-राजसमंद में समायोजित हो रहा अणुव्रत आंदोलन का 62वां अधिवेशन हमें यही आह्वान कर रहा है कि नये नेतृत्व के साथ हम एकजुट होकर अनैतिकता एवं हिंसा के घने अंधेरे को चीरते हुए एक दीप जलाकर भारतीय जनतंत्र को सही मार्ग पर ले जाने का प्रयास करें।

**● डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com



# लोकतंत्र और नागरिक अनुशासन

आचार्य महाप्रज्ञ

**लोकतंत्र अ-लोकतंत्रीय उपायों से कभी सक्षम नहीं बनता। उसे सक्षम बनाने का प्रत्यक्ष दायित्व जनता पर है, प्रत्यक्षतर विधायकों पर और प्रत्यक्षतम शासकों पर। दायित्व के आधार पर यह स्वतः प्राप्त होता है--जनता अनुशासित हो, विधायक अनुशासिततर और शासक अनुशासिततम।**

मनुष्य की सभी इच्छाओं का केन्द्र मन है और मन की इच्छा का केन्द्र है स्वतंत्रता। मन अपनी इच्छा से चलना चाहता है। वह अपने क्षेत्र में दूसरों का हस्तक्षेप नहीं चाहता। यह सार्वभौम स्वतंत्रता मन का शाश्वत स्वभाव है।

व्यक्ति यदि अकेला ही होता, तो वह अपनी सार्वभौम स्वतंत्रता का उपयोग कर पाता लेकिन आज वह अकेला नहीं है। वह सामाजिक जीवन जी रहा है। इसीलिए उसकी स्वतंत्रता सीमित है। चाहे-अनचाहे उसमें दूसरों का हस्तक्षेप भी होता है। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक जीवन स्वतंत्रता और परतंत्रता का मिश्रित रूप है।

प्रजातंत्र व्यक्ति को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता देता है। किन्तु आर्थिक स्वतंत्रता के बिना क्या सामाजिक या राजनैतिक स्वतंत्रता फलित होती है? गरीबी के कारण न जाने कितने लोग आज भी अनेक परतंत्रताओं में जकड़े हुए हैं। चिन्तन की स्वतंत्रता के बिना भी ऐसा ही होता है। अशिक्षित लोग भी विवशता की पकड़ से मुक्त नहीं होते।

मैं जिस भाषा में सोचता हूं। उसमें जनतंत्र का स्वरूप कुछ दूसरा है, वर्तमान स्वरूप से भिन्न और बहुत भिन्न। मैं निर्वाचन पद्धति को देखता हूं तो लगता है यह जनतंत्र है और जब शासन प्रणाली को देखता हूं तो लगता है कि यह कठोर राजतंत्र है।

जिस शासन में नियंत्रणों का अधिक भार, शासन का अधिक दबाव और कानून का अधिक विस्तार हो, क्या वह जनतंत्र हो सकता है?

सीमित नियंत्रण, सीमित दबाव और सीमित कानून--इनका समन्वित रूप है जनतंत्र। असीम इच्छा, असीम प्रयत्न और असीम उच्छृंखलता--इनका समन्वित रूप है मनुष्य का स्वभाव।

प्राकृतिक रूप में मनुष्य-स्वभाव और जनतंत्र की पद्धति में मेल नहीं है, किन्तु उनका मेल बिठाया जाता है। मनुष्य कुछ स्वभाव से बदलता है और कुछ जनतंत्र। नियंत्रण का थोड़ा विस्तार और इच्छा का थोड़ा संकोच, दबाव का थोड़ा विस्तार और प्रयत्न का थोड़ा संकोच--यह जनतंत्र का आकार बनता है। आज का जनतंत्र इस आकार का नहीं है, इसलिए जनता और शासन--दोनों ओर से अधिक दबाव आ रहा है।

मैं नहीं कहता कि जनता का दबाव कम हो और सरकार का दबाव बढ़े, या सरकार का दबाव कम हो और जनता का दबाव बढ़े। ये दोनों विकल्प जनतंत्र के लिए स्वस्थ नहीं है। उसकी स्वस्थता इसमें है कि दोनों ओर का दबाव घटे। जनतंत्र में निरंकुश शासक और निरंकुश जनता दोनों खतरनाक होते हैं। इस खतरनाक स्थिति के लक्षण अनेक घटनाओं में प्रकट हो रहे हैं। दुकानों की लूट, अग्निकाण्ड, शस्त्रों का प्रयोग, पथराव और गोलियों की बौछार--ये अनुशासित नागरिकों के चरणचिह्न नहीं हैं। सरकारी

www.terapanthinfo.com



निर्णय के विरुद्ध वैधानिक उपाय काम में लिए जाते हैं, यह अनुचित नहीं है, किन्तु अराजकतापूर्ण स्थिति का निर्माण उचित भी नहीं है। इसमें जनतंत्रीय प्रणाली को आघात पहुंचता है और एकाधिनायकता को बल मिलता है। सरकारी निर्णय सभी पक्षों को प्रिय लगें, यह संभव नहीं। अप्रिय निर्णय का विरोध न हो, यह भी जनतंत्र में असंभव है। संभव यह है कि विरोध की पद्धति वैधानिक एवं शालीन हो। जनता को अनुशासन-विहीन बनाने में शायद किसी भी दल का हित नहीं है। आज एक दल को जनता की उत्तेजनापूर्ण और अनुशासन-विहीन प्रवृत्तियों का सामना करना पड़ रहा है, कल किसी दूसरे-तीसरे दल को भी करना पड़ सकता है।

जनतंत्र का भविष्य इस प्रश्न पर निर्भर नहीं है कि शासन किस दल का है? उसका भविष्य इस प्रश्न पर सुरक्षित है कि उसकी जनता अनुशासित है और हर परिस्थिति का अनुशासित ढंग से समाना कर सकती है। शासक लोग भी आग्रह से मुक्त होकर जनता की स्थिति को जानना न चाहें, वस्तुस्थिति के साथ आंख-मिचौनी करें तो निश्चित रूप से अ-लोकतंत्रीय प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलता है। यत्र-तत्र विधान-सभा की घटनाएं भी अनुशासन के प्रति अनुराग उत्पन्न करने में सफल नहीं हुई हैं। फिर केवल जनता से अनुशासन और संयम की आशा कैसे की जाए? सामंजस्य, समन्वय और सह-अस्तित्व की बात केवल अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ही अपेक्षित नहीं है। पहले उनकी अपेक्षा राष्ट्र में है, विभिन्न राजनैतिक दलों में है। विशेष रूप से सार्वजनिक महत्त्व की समस्याओं के समाधान के समय है। लोकतंत्र अ-लोकतंत्रीय उपायों से कभी सक्षम नहीं बनता। उसे सक्षम बनाने का प्रत्यक्ष दायित्व जनता पर है, प्रत्यक्षतर विधायकों पर और प्रत्यक्षतम शासकों पर। दायित्व के आधार पर यह स्वतः प्राप्त होता है--जनता अनुशासित हो, विधायक अनुशासिततर और शासक अनुशासिततम।

भारतीय जनता का बहुत बड़ा भाग अशिक्षित है। यह कहना कठिन है कि जो अशिक्षित हैं, वे अनुशासित नहीं हैं और जो शिक्षित हैं, वे अनुशासित हैं। हमारे विद्यालयों में लोकतंत्र के शिक्षण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है, इसलिए जनता से विशिष्ट अनुशासन की आशा ही कैसे की जा सकती है?

वर्तमान वातावरण में जो परिणाम सामने आ रहे हैं, उनसे भिन्न परिणामों की आशा नहीं की जा सकती। इन घटनाओं की पुनरावृत्तियों से हमें न आश्चर्यचकित होने की जरूरत है और न खिन्न होने की, किन्तु एक पाठ लेने की जरूरत है। वह है लोकतंत्रीय शिक्षण की समुचित व्यवस्था। मैं इसमें अधिक सफलता देखता हूं कि हमारा ध्यान वर्तमान की घटनाओं पर ही न अटके अपितु जिन कारणों से वे घटित हो रही हैं, वहां तक पहुंचे और उनके निवारण में लगे।

## राष्ट्र चिन्तन

- मैं मुम्बई की जनता को पहुंचे सदमे और उनकी नाराजगी को समझता हूं। मैं उनकी पीड़ा और गुस्से में शामिल हूं। मैं मुंबई की जनता के साथ एकजुटता दिखाने यहां आया हूं। मैं आश्वासन देता हूं कि सरकार भविष्य में इस तरह के हमलों को रोकने के लिए कारगर कदम उठाएगी। साथ ही मुंबई बम धमाकों में मारे गए लोगों के परिजनों के लिए दो-दो लाख और गंभीर रूप से घायलों को एक-एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता की घोषणा करता हूं।

  ***--डॉ. मनमोहन सिंह,*** *प्रधानमंत्री*

- दिल्ली के रामलीला मैदान में कालेधन के खिलाफ धरने में योगगुरु बाबा रामदेव तथा उनके समर्थकों पर आधी रात को किए गए लाठी चार्ज और आंसू गैस के इस्तेमाल पर सुप्रीम कोर्ट ने जवाब मांगा है। कोर्ट ने कहा कि पुलिस ने लाठी चार्ज से इंकार किया है लेकिन चित्रों से पता चलता है कि पुलिस उपायुक्त की मौजूदगी में पुलिस यह कार्रवाई कर रही है। पुलिस बताए कि आधी रात को सोते हुए लोगों पर ऐसी सख्त कार्रवाई करने की क्या जरूरत पड़ गई थी। कोर्ट ने दिल्ली पुलिस से निम्न सवाल किए--
  -- पुलिस ज्यादतियों के खिलाफ योग गुरु के समर्थकों की शिकायत पर प्राथमिकी क्यों नहीं दर्ज की गई?
  -- 1 जून से 3 जून के बीच ऐसा क्या हुआ कि पुलिस को रामदेव का कार्यक्रम बंद करवाना पड़ा?
  -- तंबुओं से घिरे स्थल से लोगों को बाहर निकालने के लिए आंसू गैस और पानी की धार का इस्तेमाल क्यों किया गया?
  -- रात को डेढ़ बजे लोग सो रहे थे तो पुलिस ने लाठियां क्यों चलाई?
  -- चित्रों से पता चलता है कि पुलिस उपायुक्त किसी से बातचीत कर रहे थे, क्या वह कहीं से निर्देश ले रहे थे?

  ***-- सुप्रीम कोर्ट***

- मेरी पार्टी शुरू से ही भ्रष्टाचार और कालेधन की विरोधी रही है। सरकार को भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने और कालेधन की वापसी के लिए कारगर कदम उठाने चाहिएं। सरकार को किसी के दबाव में नहीं आना चाहिए, पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध अतिशीघ्र कदम उठाने चाहिएं।

  ***-- रामविलास पासवान,*** *अध्यक्ष : लोकजन शक्ति*

www.terapanthinfo.com

**लोकतंत्र में प्रशासक जनता ही होती है। जनता के द्वारा निर्वाचित व्यक्ति ही शासन संभालता है। जनता के द्वारा ही जनता का शासन होता है। ऐसी स्थिति में शासन चलाने वाले व्यक्ति अच्छे आएं, उनका स्तर ऊंचा हो तो देश का भला हो सकता है। सरकार के लिए दो बातें आवश्यक हैं--स्थिरता और स्वच्छता। गतिशीलता को भी स्थिरता का आधार अपेक्षित होता है। स्थिरताविहीन गतिशीलता हो ही नहीं सकती। यदि गति करना है तो किसी स्थिर तत्व का आलंबन लेना ही होगा। चक्का घूमता है, कील स्थिर रहती है। लेकिन कील की स्थिरता चक्के की गति में सहयोगी बन जाती है।**

# स्वस्थ लोकतंत्र के चार आधार

**आचार्य महाश्रमण**

लोकतंत्र प्रशासन की एक सुंदर प्रणाली है। यह प्रणाली प्रायः अहिंसा पर आधारित है। लोकतंत्र में अनेक लोग होते हैं इसलिए कभी वैमत्य भी हो सकता है और एकमत्य भी हो सकता है। किन्तु सरकार में स्थिरता रहनी चाहिए। वैमत्य के कारण अथवा पारस्परिक विद्वेष के कारण सरकार गिर जाती है तो कठिन स्थिति पैदा हो जाती है। पांच वर्षों के कार्यकाल के लिए एक सरकार सत्ता संभालती है किंतु जब बीच में ही चुनाव की स्थिति बन जाती है तो उसमें न जाने राष्ट्र की कितनी शक्ति खर्च हो जाती है। इस मध्यावधि चुनाव की स्थिति को अच्छा नहीं माना जा सकता। पांच वर्षों तक एक सरकार नहीं चलने का प्रमुख कारण है कि लोकतंत्र में अनेक दल हो जाते हैं और वे स्थिति को खराब कर देते हैं। जहां अनेक दल साथ हों वहां राष्ट्रहित की भावना हो, अनपेक्षित विरोध न करने की भावना हो और अगर विरोध भी हो तो सत्य के लिए, देशहित के लिए हो तो वह विरोध भी लाभदायी बन सकता है। जो विरोध मात्र सत्ता पर आसीन सरकार को गिराने के लिए ही किया जाता है वह विरोध राष्ट्र के लिए अहितकर बन जाता है।

इन दिनों भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सरकार में अस्थिरता एवं मलीनता की स्थिति बनी हुई है। मैं कई बार सोचता हूं कि एक पार्टी मजबूत आ जाए तो सरकार निर्विघ्न रूप से चल सकती है। अनेक दल हों और साथ में अनेकांत हो तो कोई कठिनाई वाली बात नहीं लगती। किंतु अनेकांत के अभाव में अनेक दलों का होना लाभदायी नहीं लगता। अनेकांत-विहीन अनेक पार्टियों के हो जाने से सरकार की मजबूती में अंतर आ जाता है। लोकतंत्र में गिरावट भी आ सकती है। अनेक दलों की व्यवस्था में जब स्वार्थपूर्ति में खतरा दिखाई देता है तो लगाम खींच ली जाती है और सरकार गिरा दी जाती है। कुछ दलों के आधार पर सरकार का पतन भी हो सकता है और कुछ दलों के आधार पर सरकार बनी भी रह सकती है। जहां इस प्रकार की स्थिति होती है वहां सरकार को जैसे-तैसे बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। ऐसी स्थिति राष्ट्र के लिए हितकारी और मंगलकारी नहीं हो सकती।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अहमदाबाद में प्रवासित आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किए। वार्तालाप के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा--''अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने धर्म और संप्रदाय की समस्या के संदर्भ में कहा था कि धर्म को पहले स्थान पर और संप्रदाय को दूसरे स्थान पर रखा जाए। तभी देश का भला हो सकेगा और समस्याओं का समाधान हो सकेगा। वर्तमान संदर्भ में मैं इस बात को इस प्रकार बदलकर कहना चाहता हूं कि राष्ट्र का स्थान पहला हो और दल का स्थान दूसरा हो, तभी देश की समस्याओं का समाधान हो सकेगा।'' यह बात सुनते ही डॉ. कलाम अत्यंत भावविभोर होकर बोले--''आचार्यजी! आप संप्रदाय से ऊपर उठे हुए हैं। आपके पास जो भी नेता आए, उन्हें यह बात जरूर बताएं।''

अंग्रेजी में कहा गया है--लोकतंत्र में कर्त्तव्य-परायणता नहीं होती, अनुशासन-बद्धता नहीं होती तो लोकतंत्र का देवता विनाश अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। लोकतंत्र में कर्त्तव्यपरायणता हो, अनुशासनबद्धता हो और राष्ट्रहित की भावना हो तो लोकतंत्र बहुत अच्छा काम कर सकता है।

लोकतंत्र में प्रशासक जनता ही होती है। जनता के द्वारा निर्वाचित व्यक्ति ही शासन संभालता है। जनता के द्वारा ही

www.terapanthinfo.com



जनता का शासन होता है। ऐसी स्थिति में शासन चलाने वाले व्यक्ति अच्छे आएं, उनका स्तर ऊंचा हो तो देश का भला हो सकता है।

सरकार के लिए दो बातें आवश्यक हैं--स्थिरता और स्वच्छता। गतिशीलता को भी स्थिरता का आधार अपेक्षित होता है। स्थिरताविहीन गतिशीलता हो ही नहीं सकती। यदि गति करना है तो किसी स्थिर तत्व का आलंबन लेना ही होगा। चक्का घूमता है, कील स्थिर रहती है। लेकिन कील की स्थिरता चक्के की गति में सहयोगी बन जाती है। आदमी सीढ़ियां चढ़ता है, गति करता है किंतु सीढ़ियां स्थिर रहती हैं इसलिए आदमी ऊपर चढ़ने में सफलता प्राप्त कर लेता है। सरकार में यदि अस्थिरता रहती है तो वह देश के लिए नुकसानदेय बन सकती है और स्थिरता होती है तो वह जनता के विकास में सहयोगी बन जाती है। सरकार में यदि स्थिरता है किंतु अस्वच्छता है तो भी विचारणीय बात हो जाती है। इसलिए स्थिरता भी हो और स्वच्छता भी हो, दोनों तत्वों का समावेश हो तो कुछ हित की बात हो सकती है। जैसे पानी में अस्थिरता हो और मलीनता हो तो पानी के भीतर क्या है, देखा नहीं जा सकता। वैसे ही सरकार में अस्थिरता और अस्वच्छता हो तो देशहित की बहुत आशा नहीं की जा सकती। इसलिए देश के हित के लिए, व्यक्ति के हित के लिए लोकतंत्र स्वच्छ हो, अनेकांत और अहिंसा पर आधारित हो, एक-दूसरे को गिराने का लक्ष्य न हो बल्कि सहयोगपरक दृष्टिकोण हो तो लोकतंत्र देश के लिए वरदायी बन सकता है और हमारा हिन्दुस्तान विकासशील देश से विकसित देशों की श्रेणी में आ सकता है।

नदी के दोनों किनारों पर दो नगर बसे हुए थे। एक नगर की प्रजा बहुत सुखी थी, राज्य का बहुत विस्तार हो रहा था। चारों तरफ उसकी यशोकीर्ति फैल रही थी। दूसरे नगर की प्रजा दुःखी थी, राज्य का विस्तार भी नहीं था और उपद्रव भी फैल रहे थे। पहले नगर के अधिकारी से सुख-संपन्नता का कारण पूछने पर उसने कहा--मेरे पास चार चौकीदार हैं--1. सत्य 2. प्रेम 3. न्याय 4. त्याग। पहला चौकीदार मुझे कभी भी असत्य बोलने नहीं देता जिसके कारण मैं प्रजा का विश्वासपात्र बना हुआ हूं। दूसरा चौकीदार मुझे घृणा और तिरस्कार से बचाता है जिसके कारण मैं सबके साथ प्रेम से बोलता हूं। इसलिए प्रजा मुझे बहुत स्नेह, सत्कार और सहयोग देती है। मेरा तीसरा चौकीदार मुझे अन्याय से दूर रखता है। नीतिपूर्वक कमाई के कारण मेरे राज्य में धन की बहुत वृद्धि हुई है। चौथा चौकीदार मुझे हमेशा स्वार्थ चेतना से ऊपर उठाए रखता है। इसलिए मेरा यश चारों दिशाओं में फैल रहा है।

भारत की जनता में भी सत्य के प्रति आस्था हो, प्रेमपूर्ण व्यवहार हो, न्यायमार्ग पर चलने का साहस हो और त्याग के पथ पर बढ़ने का संकल्प हो तो देश का बहुत विकास हो सकता है।

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए
संकल्प करें
❐
मैं रिश्वत नहीं दूंगा।
मैं व्यवहार और व्यवसाय में प्रामाणिक रहूँगा।

आवाज़ उठाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ

अणुव्रत आन्दोलन

www.terapanthinfo.com

# वन्दे मातरम्

ज्ञान भारद्वाज

यदा कदा बेटे-बेटियों की जिद व जिज्ञासा पूरी करने हेतु कई बातें ऐसी अहम् बन जाती हैं जिनका कालान्तर में राष्ट्रीय महत्व स्थापित हो जाता है। यही वन्दे मातरम् गीत के साथ भी हुआ। वास्तव में वन्दे मातरम् गीत की रचना का श्रेय प्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय को तो जाता ही है साथ ही उनकी बेटी भी श्रेय की पात्र हैं। वन्दे मातरम् गीत की रचना उन्होंने अपनी बेटी की जिद व जिज्ञासा शांत करने के लिए ही उनके आग्रह पर की थी।

कहते हैं कि अपने उपन्यासकार पिता को मातृभूमि की भक्ति में मुदित व मगन देख कर उनकी बेटी ने जिद पकड़ ली कि मुझे भी तो बताओ कैसी है मातृभूमि जिसके पीछे आपमें दीवानगी आई हुई है। बेटी की जिद या यों कहिए कि अपरोक्ष प्रेरणा से उपन्यासकार बंकिम बाबू ने अपने मन में उमड़े भावों को शब्द देकर इस गीत की कड़ियां सजा कर अपनी बेटी से कहा कि इस गीत से बंग भूमि उत्साह अतिरेक से दीवानी होकर नाचेगी और भारत वर्ष इससे स्फूर्ति लेगा।

वन्दे मातरम् के रचियता बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपनी बेटी के अलावा अपने भतीजे से भी कहा था कि वन्दे मातरम् महान और अमिट रचना है। यह देश के हृदय पर राज करेगा और आज उनका कथन साकार हो रहा है। इस रचना को सर्वप्रथम विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर ने स्वर दिया। यानि सुस्वर में गाया और आज तक इसे उसी तरन्नुम में गाया जाता है। जिसने भी सर्वप्रथम गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर से वन्दे मातरम् गान को सुस्वर सस्वर सुना वह जोश से भर गया एवं इस गीत के हर शब्द में मातृभूमि के दर्शन पाये। यद्यपि कुछ मित्रों ने वन्दे मातरम् गीत में समाहित संस्कृत शब्दों की बहुलता को नापसंद किया। पर बंकिम बाबू अपनी बात पर अडिग रहे। स्वाधीनता संग्राम के दिनों में क्रांतिकारी अपनी गुप्त बैठकों एवं कार्यक्रमों में वन्दे मातरम् गाकर प्रेरणा पाते थे एवं वन्दे मातरम् शब्द का जोश के साथ सामूहिक उद्घोष भुजा उठाकर करते थे।

यह भी ज्ञातव्य है कि शहीदों ने फांसी के तख्ते पर अपने जीवनकाल के मातृ-वंदना के अंतिम शब्द के रूप में 'वन्दे मातरम्' का उद्घोष कर एवं वन्दे मातरम् गाकर मातृ भक्ति का भावनात्मक साक्षात्कार व साथ ही हंसते-हंसते मृत्यु का साक्षात्कार कर राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया। बंगाल की शस्त्र क्रान्ति का प्रेरणा स्त्रोत भी वन्दे मातरम् ही था। वन्दे मातरम् के रचियता बंकिम चन्द्र का जन्म 2 जून, 1838 को चौबीस परगना जिसकी धन्य धरती स्वाधीनता संग्राम में सुर्खियों में रही है के छोटे से गांव कांटालपाडा में हुआ था। सन् 1857 की क्रान्ति में लेखक की लेखनी ने क्रान्तिकारियों के जोश में उबाल ला दिया। लेखक बंकिम बाबू मां काली के अनन्य भक्त थे। यही कारण है कि उनकी लेखनी में मातृ वंदना के रूप में अपने को उजागर किया। लेखक के प्रसिद्ध उपन्यास ''आनन्द मठ'' जिसमें वन्दे मातरम् समाहित है का प्रारंभ भी मातृ प्रसंग से तथा उपसंहार भी भारत माता के गौरव गान से ही है। जो उनकी मातृभक्ति का प्रमाण है।

फिरंगी शासकों ने वन्दे मातरम् की भावना व शक्ति को पहचान कर कूटनीति से इसे समाप्त करने का असफल प्रयास किया था। वन्दे मातरम् की स्वर-शक्ति से कुछ लोग घबरा भी गये थे और साम्प्रदायिकता की आड में इसका विरोध भी किया था। फलस्वरूप 26 अक्टूबर 1937 को वन्दे मातरम् गीत के निम्नांकित दो पद ही गाये जाने का निर्णय राष्ट्रीय नेताओं ने लिया।

वन्दे मातरम्
सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलां, मातरम्!
वन्दे मातरम्
शुभ्र ज्योत्सनां, पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्!
वन्दे मातरम्।

24 जनवरी 1950 को संविधान निर्मात्री परिषद के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने काफी विचार-विमर्श के बाद सदन के फैसले के बारे में कहा कि शब्दों और संगीत की ''जन गण मन के रूप में ज्ञात रचना भारत का राष्ट्रगीत है और वन्दे मातरम्, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।'' जन गण मन के साथ ही समान रूप से आदरणीय है। इसकी भी जन गण मन के समान ही मान्यता होगी।

*बी-78, हवेली ज्ञान द्वार,*
*सेठी कॉलोनी, जयपुर - 302004*

www.terapanthinfo.com



# पद्दलित क्यों हैं आजाद आदमी

सुरेश आनंद

**अगर राजनीतिज्ञ व राजनेता और भारतीय प्रशासनिक अधिकारी विदेश ों का परित्याग कर महात्मा गांधी का दर्शन शासन का विस्तार नहीं करेंगे, तो यह कभी नहीं माना जायेगा कि भारत में सचमुच में कभी आजादी आयी है या आजादी आ जाएगी? भारतीय आत्मा हमेशा धिक्कारेगी? महात्मा गांधी की मृत आत्मा स्वर्ग में भी कभी अपने शिष्यों को आशीर्वाद नहीं देगी? चूंकि महात्मा गांधी ने राष्ट्र में असमानता नहीं बल्कि समानता का समर्थन किया था? अगर इस पर चिंतन नहीं किया गया तो आजाद आदमी सदैव अपने आपको पद्दलित ही मानते रहेंगे?**

हम भारतीय स्वाधीनता के चौंसठ वर्षों के बाद अब पैंसठवी वर्षगाँठ मना रहे हैं। भारतीय लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभाएं सभी प्रसन्न हैं और उन्हें लगता है भारत को सोने की चिड़िया आखिरकार मिल ही गई है?

यही हकीकत भी है सभी सांसद, विधायक महात्मा गांधी की मूर्ति के सामने रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम ही नित्य गाते तो हैं, पर आंखें मूंदकर गाते हैं। धृतराष्ट्र की तो आँखें नहीं थी। संजय ही महाभारत का हाल बताता था। इसी तरह राजनीतिज्ञ यही तो करते हैं। बेचारों को मालूम ही नहीं है कि स्वाधीन भारत में कितने आदमी पददलित हैं? महात्मा गांधी के कितने ही दरिद्रनारायण मंदिरों में भगवान के सामने हथेली पसारे बैठे हैं। कितने बच्चे, कितनी अबलाएं कितने वृद्ध रोटी मांगने को मोहताज से घूमते हैं?

वे तो अपनी ही रोजी-रोटी के लिए महात्मा गांधी का पूजन करते हैं? तभी तो अब किसी राजनीतिज्ञ ने अपनी रोजी-रोटी एक लाख महीना कर ली है, तो किसी ने पचास हजार महीना कर ली है। हर लोकसभा और विधानसभा में उनके लिए भोजनालय भी हैं, जहाँ मामूली राशि में भोजन उपलब्ध है। उन्हें लगता है गांधी के दरिद्रनारायण अब वे ही माने जायेंगे? इसीलिए तो आम आदमी अज्ञानी या मूर्ख हैं जो अपनी आजादी का जश्न नहीं मनाते हैं? यह तो सिर्फ सांसद, विधायक, न्यायाधीश अधिकारी शि ाक्षक ही मनाते रहे हैं। यह सभी आजादी के दिन तभी तो सबको खदेड़कर पन्द्रह अगस्त को जश्न मनाते रहे हैं। फिर अपने लिए अल्पाहार भोजनालय का शासन की ओर से आयोजन भी करते हैं?

तभी तो बाकी सभी बूढ़े या वृद्ध माताएं किसी बैंक के सामने एक तारीख से दस तारीख तक बैठे-बैठे एक सौ रुपये से दो सौ रुपये माहवारी के लिए बैठे-बैठे थक जाते हैं। भूखे-प्यासे होकर लौट भी जाते हैं। दूसरे दिन फिर बैंक के सामने पसर जाते हैं। यही तो उनकी आजादी का जश्न है?

कभी यही लोग पोस्ट ऑफिस के सामने बैठे डाकिए को निहारते रहतें हैं जिससे कि वह हर माह उन्हें पचास से दो सौ रुपये माहवारी की व्यवस्था कर दे? वे गांव से आते हैं। शहर में आजादी का यही तो जश्न है? वे इसी को पैन्शन भी कहते हैं?

भारतीय आजादी के आम आदमी विगत चौंसठ वर्षों से तभी तो आजादी का इसी तरह जश्न मनाते जा रहे हैं? और इसी को आजादी कहते हैं।

तभी तो हम अखबारों में पढ़ते हैं गांव के कितने ही कृषक आजादी के नाम पर आत्महत्या करते रहे हैं? चूंकि वे आजाद देश के किसान जो हैं?

महात्मा गांधी कहते थे भारत की आत्मा गांव में बसती है। तभी तो हमारी सरकारें चौंसठ वर्षों से गांव खाली कराती जा रही हैं? पूंजीपति और सरकार उन्हें नंगा करती रही हैं? कितने गांव खाली करा लिए गए हैं। गांव के लोग अपनी भूमि, खेती, मकान, झोपड़ी सब छोड़कर पलायन कर चुके हैं। अब उनके नाम भूमि, झोपड़े नहीं हैं। नगर महानगर हो गए हैं। करोड़पतियों के कारखाने खुल गए हैं। यही तो आजादी का उद्देश्य माना जाने लगा है?

महात्मा गांधी ने देश को खादी इसीलिए पहनायी थी जिससे जिंदगी भर कपास बुनकर धुनकर रंगरेज खादी बनाते रहे। सुतार, लुहार, चरखे, करघे, लूम सरेआम बनाते रहे। लगता है सांसद, विधायक, राजनीतिज्ञ, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री सभी को लगता था अगर देश के पददलित आदमियों को व्यवस्थित कर दिया जावेगा तो स्वतः उनकी ही व्यवस्था कहाँ कैसे होगी? इसीलिए महात्मा गांधी को पलायन करते ही आजादी के तमाम आदमियों को कई भागों में विभाजित कर दिया गया।

इसीलिए विनोबा भावे के भूदान,

www.terapanthinfo.com



ग्रामदान नष्ट कर दिए गए। जय प्रकाश नारायण को भी नहीं माना। आजादी के नाम पर जो आए उन्हें पददलित कर दिया गया।

तात्पर्य यह है कि आजादी के चौंसठ वर्षों में देश के तमाम पददलित आदमी कितने मोहताज हो गए हैं? बेचारे समझ ही नहीं पा रहे हैं आजादी का मतलब क्या है?

तभी तो आजादी मिलने के पश चात भी गांव वीरान हो रहे हैं। नगर, महानगर हो रहे हैं? पूंजीपति मालिक बनते जा रहे हैं। शिक्षा जो राम, कृष्ण को गुरूकुलों में दी जाती थी, वह नष्ट कर दी गई। वेद पुराण उपनिषद मृतप्राय हो गए हैं। अब तो केवल किताबी शिक्षा दी जा रही है और शिक्षा के नाम पर व्यवसाय करने के लिए व्यापारी पैदा हो गए हैं। अंकों के नाम पर शिक्षा का व्यवसाय चलता है। जो अधिक अंक लाएगा वह पढ़ा-लिखा माना जायेगा। माँ बाप अपने बेटे को नम्बर लाने के लिए फिर से उसी कक्षा में पढ़ाने को भेजता है। बच्चा हीन भाव में उतरता चला जाता है। तभी तो कितनों ने ही आत्महत्या भी कर ली है?

सारांश यह है कि आजाद देश के माता-पिता, छात्र-छात्राएं, किसान, शिक्षक, लड़के-लड़कियां कोई भी आजादी का सही अर्थ ही नहीं समझ पा रहे हैं? हत्या, आत्महत्या, भ्रूणहत्या करके आजादी का मापदंड ऊपर ही ऊपर चढ़ाते जा रहे हैं। सरकार विदेश ाी शिक्षा, विदेशी भाषा और विदेशी वस्त्रों में देश को बदलने में तीव्रगति से अपने को महानतम समझती जा रही हैं और व्यापारी बनकर नोट कमाते जा रहे हैं?

क्या कोई भारतीय आजादी का सही अर्थ समझेगा या समझाएगा? क्या कोई महात्मा गांधी को पुनः जीवित कर सकेगा? जिससे आजाद भारत के पददलित आदमी अपने को यथार्थ आजादी में परिवर्तित कर सकें?

अगर राजनीतिज्ञ व राजनेता और भारतीय प्रशासनिक अधिकारी विदेश ों का परित्याग कर महात्मा गांधी के दर्शन व शासन का विस्तार नहीं करेगें तो यह कभी नहीं माना जायेगा कि भारत में सचमुच में कभी आजादी आयी है या आजादी आ जाएगी? भारतीय आत्मा हमेशा धिक्कारेगी? महात्मा गांधी की मृत आत्मा स्वर्ग में भी कभी अपने शिष्यों को आशीर्वाद नहीं देगी? चूंकि महात्मा गांधी ने राष्ट्र में असमानता नहीं वरन् समानता का समर्थन किया था? अगर इस पर चिंतन नहीं किया गया तो आजाद आदमी सदैव ही अपने आपको पददलित ही मानते रहेगें?

***आनंद परिधि, एल 62***
***पं. प्रेमनाथ डोगरा नगर,***
***रतलाम (म.प्र.)***

## भारत माता के कर्णधारों आओ रे!

**बिरदीचन्द पोखरना**

गणतंत्र दिवस उल्लास से मनाओ रे,
यह राष्ट्रीय पर्व, सब पर्वों से न्यारा है।
स्वाधीनता से ही देश में सच्चा स्वराज्य आया है,
अब तो जागो! जागो, भारत मां के वीर सपूतों।
धर्म की दुहाइयां, प्रान्त की बुराइयां।
भाषा की लड़ाइयां, पाट दो ये खाइयां।।
अत्याचार, बलात्कार एवं भ्रूणहत्याओं से देश को बचाना है।
सरेआम द्रौपदी की लुट रही लाज, आंखें मूंद क्यों बैठे हो।।
भारत के वीर जवानों आगे बढ़ो, आगे बढ़ो।
तारों की परछाइयों में अंधकार की अमराइयों में,
उगते सूरज और ढलती शाम को आतंककारियों ने हमें ललकारा है।
विस्फोटों की चिंगारियों से, बन्दूक और बारूदों से।।
तोप और तलवारों से खूनी खंजरों से खेल रहे हैं ये होली
जब मैदान में उतरेगी झांसी की रानी।
बिलाव की मांद में जाकर ये छिप जाएंगे।।
गांधी का है फरमान, गणाधिपति तुलसी का है वरदान
नशामुक्त भारत बनाकर अणुव्रत का जाल फैलाओ रे।
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह को अपनाकर देश बचाओ रे।।
विश्व बन्धुत्व के भाव जगाकर अणुव्रती बन जाओ रे।
आचार्य महाश्रमण का है यह संदेश।
गंगा की तरह पावन बन पर्यावरण बचाओ रे।।
राजनेताओं को अब समझाओ रे, गांधीवादी बन जाओ रे।
भ्रष्टाचार, व्यभिचार, मिलावट और घूंसखोरी से देश को बचाओ रे।
भारत मां की शान बढ़ाओ रे।
स्वतंत्र दिवस धूमधाम से देश में मनाओ रे।।

***पूर्व शिक्षा प्रसार अधिकारी, धानमंडी, किशनगढ़ शहर (राज.)***

www.terapanthinfo.com

आजादी

# जरा! याद करो कुर्बानी

कुसुम जैन

**ऐसे हजारों लोग हैं जिन्होंने आजादी के यज्ञ में अपने-अपने प्रयत्नों और हितों की आहुति दी। उनका पुण्य स्मरण हममें कुछ चेतना जगाये, इस आशा के साथ स्वतंत्रता दिवस पर प्रस्तुत है एक विशेष लेख--**

स्वतंत्रता दिवस!
आजादी का पर्व!

लेकिन क्यों आज यह राष्ट्रीय पर्व तीस-चालीस वर्षों पूर्व जैसा जन-जन को आंदोलित नहीं कर पाता? क्यों अब वह महज एक खानापूर्ति या कैलेंडर की सरकारी लाल छुट्टी मात्र बनकर रह गया है।

कारण आईने की तरह साफ है। भ्रष्टाचार तब भी था पर इतना व्यापक नहीं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने तो घोषणा की थी कि काला-बाजारियों को लैंप पोस्ट पर फांसी पर चढ़ा दिया जायेगा।

पर पिछले पचपन-छप्पन वर्षों में हुआ यह कि ऐसे ही लोगों की जमात सत्ता के सूत्र का संचालन करने वाली बन गयी। अब तो भ्रष्टाचार की खबर लोगों को आश्चर्यचकित भी नहीं कर पाती है। सबने उसे आज के सामाजिक जीवन की अनिवार्यता मान लिया है।

पहले भ्रष्टाचार इतना संगठित नहीं था। वह व्यक्तिगत स्तर पर ही व्याप्त था। पर आज भ्रष्टाचार एक संगठित व्यवसाय बन गया है। ऊपर से नीचे तक सबके हिस्से बंधे हुए हैं। पकड़ा जाता है 'गरीब' बाबू या छोटा अफसर, लेकिन यह भ्रष्टाचार ऊपरी तबके तक कितना व्याप्त है, यह सरकारी विभागों के उच्च-स्तरीय अफसरों के रंगे हाथों पकड़े जाने की खबरें स्पष्ट करती हैं। लोगों में भ्रष्टाचार को लेकर एक पस्त-हिम्मती व्याप गयी है। यह 'पस्त हिम्मती' देश के भविष्य के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

पर देश! देश क्या है? उसकी किसे फिक्र है। आज तो हर नेता और हर दल के लिए जैसे देश और कुछ नहीं, उसके अपने निहित स्वार्थ ही हैं। देश की बात आदर्शवादी लोग करते हैं। जिस तरह से 'धर्म' या 'मजहब' केवल स्वार्थों की पूर्ति का माध्यम बना लिया गया है, उसी तरह देश भी और उसकी गरीब एवं पददलित जनता भी। 'आरक्षण' के नाम पर नेताओं और दलों ने समाज को विभिन्न वर्गों में बांट दिया है। कितने नेता और दल, दलित या पिछले वर्ग के समूह के लिए गुणवत्ता वाले प्राथमिक स्कूल या माध्यमिक स्कूल संचालित करते हैं। दलितों और गरीबों के बच्चों के लिए क्या आरक्षण की बैशाखी उन्हें अपने पैरों पर चलने में समर्थ बना सकेगी?

आजादी के पहले महाराष्ट्र के एक गांव में एक रूधा जाधव नाम के व्यक्ति हुए हैं। वे अपनी योग्यता के बल पर रेलवे में केबिन मैन बने। अपने बेटों को उन्होंने बिना किसी आरक्षण की बैशाखी के समाज में योग्य बनाया। उनके एक पुत्र शासन में मुख्य सचिव पद पर नियुक्त हुए और दूसरे ने रिजर्व बैंक में एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी संभाली।

'आमच्या बाप आणि आम्ही' शीर्षक मराठी की एक कृति में रूधा जाधव के जीवन की प्रेरक यशगाथा है। उत्तर भारत के कितने लोगों ने रूधा जाधव की यह कृति पढ़ी। हमारे विचार से तो प्रत्येक दलित या पिछड़े वर्ग के पिता को ही नहीं, जाति-धर्म के परे वंचित समुदाय के हर पिता को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। वह 'कर्मयोग' की अनूठी पुस्तक है।

वर्तमान नेताओं का काम तो भावनाओं की आग सुलगाकर अपनी रोटियां सेकना है। 'आरक्षण' का रामबाण तभी कारगर सिद्ध होगा जब हम प्राथमिक स्तर से दलित या पिछड़े वर्ग पर गरीब वर्ग के बच्चों को ऊपर उठाने के लिए सचमुच मेहनत करेंगे। मंदिरों पर करोड़ों रुपये फूंकने से तो बेहतर है कि हर जनपद में उच्च गुणवत्ता वाली शालाओं की स्थापना का सिलसिला शुरू किया जाए। अन्यथा विषमता की खाई बढ़ती ही रहेगी। पर यदि यह सोचा जाए कि यह विषमता ही कुछ लोगों को सत्ता तक पहुंचाने की सीढ़ी है, तो उसे क्यों खत्म किया जाएगा।

आजादी के पर्व पर प्रस्तुत है ऐसे अनाम लोगों के प्रसंग, जिन्होंने अपने स्तर पर स्वाधीनता के आंदोलन में भाग

लिया। उनमें से एक हैं तानी नामक दलित युवती का प्रसंग-- महाराष्ट्र के कुछ क्रांतिकारियों ने हथियार खरीदने के लिए एक स्टेशन को लूटने की योजना बनायी। तय किया गया कि चाबी से तिजोरी खोली जाए। पर नकली चाबी कैसे बने? इसमें मदद की एक दलित युवती ने। स्टेशन मास्टर सुरा-सुंदरी का शौकीन था। जब वह नशे में धुत था तो तानी ने एक साबुन की टिकिया पर चाबी का छापा ले लिया और उसे क्रांतिकारियों को दे दिया। वे अपनी योजना में सफल भी हुए। पर पकड़े गये। तानी बच गयी। उसे संतोष था कि उसने क्रांतिकारियों की कुछ तो मदद की।

ननापुर में सन् 1942 की सशस्त्र क्रांति के एक नेता मगनलाल बागड़ी भी थे। वे हिन्दुस्तानी लाल सेना के सर सेनापति थे। हिन्दुस्तानी लाल सेना को खाकसारों का भी समर्थन था। मगनलाल बागड़ी भूमिगत थे। वे भोंसला राजाओं के एक उजाड़ महल में छिपे हुए थे। खाकसार शेख मोहम्मद याकूब उनके मित्र थे। एक दिन मगनलाल बागड़ी को एक गुप्त बैठक में भाग लेने ननापुर आना था। गांव में एक बैलगाड़ी का इंतजाम किया गया और उनकी हिफाजत के लिए याकूब साहब की नवविवाहिता पत्नी को भी बैठा दिया गया।

ननापुर की राह में पुलिस वालों ने बैलगाड़ी की तलाशी लेनी चाही। लेकिन याकूब साहब की पत्नी कुलसुम बीबी ने इसका विरोध किया। कहा कि बैलगाड़ी में उनके बीमार पति हैं। गाड़ी का पर्दा हटाकर वे उनकी बेइज्जती न करें। पुलिस वाले मान गये।

अपने शोध प्रबंध 'हिन्दुस्तानी लाल सेना' में ननापुर के प्रख्यात और निर्भीक पत्रकार सत्यनारायण शर्मा ने इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखा है--''यह घटना इस बात की प्रतीक है कि निर्धारित लक्ष्य तक पहुंचने के लिए हिन्दू और मुसलमानों के बीच पूर्ण विश्वास पैदा किया जा सकता है। एक मुस्लिम युवती एक हिन्दू योद्धा के साथ जाती है और थोड़ी देर के लिए ही सही, उसे अपना पति कहती है। बाद में मगन लाल सबसे पहले कुलसुम से ही राखी बंधवाते थे।''

इस प्रसंग को पढ़ते वक्त आज का परिदृश्य शर्मसार करने वाला लगता है। आज तो न केवल हिन्दू एवं मुसलमान में वरन समूचे समाज को जातियों, उपजातियों के बीच बांटने का एक सुनियोजित कार्यक्रम चल रहा है। जिसका उद्देश्य है किसी न किसी तरह किसी न किसी सत्ता के केन्द्र पर काबिज होना, चाहे वह पंचायत हो या फिर संसद।

आजादी के पर्व पर आम जनता को आत्मावलोकन की जरूरत है कि कहीं वह किसी का हथियार तो नहीं बन रहे हैं। नेताओं से आत्मालोचन की आशा व्यर्थ है।

***बी-5/263, यमुना विहार, दिल्ली-110053***

## झाँकी है हिन्दुस्तान की

- अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) द्वारा मान्यता प्राप्त इंजीनियरिंग और प्रबंधन कॉलेजों में गरीब तबके के पांच फीसदी छात्रों को इसी सत्र से शिक्षण शुल्क से छुटकारा मिल जाएगा। एआईसीटीई ने इस बाबत निर्देश जारी कर दिए हैं। यह प्रावधान सभी सरकारी और निजी कॉलेजों पर लागू होगा। परिषद के इस आदेश का उल्लंघन करने पर कॉलेजों के खिलाफ कार्रवाई होगी और उनकी मान्यता भी रद्द की जा सकती है।
  हमारे देश में एआईसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों की संख्या दस हजार से ज्यादा है। इनमें सात हजार प्रबंधन और इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। बाकी फार्मेसी, एमसीए और होटल मैनेजमेंट के कॉलेज हैं। इन कॉलेजों में 20 लाख से ज्यादा छात्र पढ़ते हैं। छात्रों को पूरे कोर्स के दौरान यह छूट मिलेगी। लेकिन अन्य शुल्क देने पड़ेंगे।

- दिल्ली सरकार ने प्रेगनेंट महिलाओं की डिलिवरी के लिए अस्पताल ले जाने और फिर वापस घर लाने के लिए फ्री एंबुलेंस सर्विस मुहैया कराने का फैसला किया है। खास बात यह है कि एंबुलेंस की यह सुविधा गरीब और अमीर यानी हर वर्ग की प्रेगनेंट महिलाओं के लिए है। यह योजना 15 अगस्त से लागू होगी। दिल्ली की सी.एम. शीला दीक्षित एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. ए.के. वालिया ने बताया कि दिल्ली सरकार के पास इस वक्त करीब 70 एंबुलेंस हैं, जिन्हें इस काम में लगाया जाएगा। अगर किसी वजह से गर्भवती महिलाओं को यह सुविधा नहीं मिली तो उन्हें सरकार की ओर से वाहन का किराया दिया जायेगा।
  दिल्ली में रहने वाली गरीब तबके की प्रेगनेंट महिलाओं को सरकारी अस्पतालों में सामान्य और ऑपरेशन से होने वाली डिलीवरी की मुफ्त सुविधा भी मिलेगी। सरकार की 'जननी शिशु सुरक्षा योजना' के तहत मुफ्त दवाएं और नवजात शिशु का सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों में मुफ्त इलाज भी शामिल है।

# राष्ट्रवाद के पुरोधा

डॉ. रामसिंह यादव

**स्वाधीनता-दिवस युगद्रष्टा महर्षि अरविन्द का जन्म दिन है। उनका जीवन केवल साहस, तप और त्याग की समग्र अभिव्यक्ति भी है। स्वर्ग के जिस आनन्द को वे अपने जीवन में उतार लाए थे, उससे धरती के कण-कण को उजागर कर देने की साधना उन्होंने की। आज वही दिन मशाल लेकर क्षितिज पर खड़ा है।**

''15 अगस्त, मेरा अपना जन्मदिन है। इसके भारतीय स्वाधीनता का दिन हो जाने का मैं यह अर्थ नहीं लेता कि यह कोई आकस्मिक संयोग है, बल्कि यह लेता हूं कि ये मेरा पथ-प्रदर्शन करने वाली दिव्य शक्ति द्वारा उस कर्म की स्वीकृति और उस पर अपनी मुहर है, जिसे लेकर मैंने जीवन में पदार्पण किया था''....अरविन्द।

यह हर्ष की बात है कि देश की स्वाधीनता के जन्मदिन के साथ प्रमुख गौरव क्षेत्रों में नव विकास के पुरोधा का जन्मदिन भी जुड़ा है। महर्षि अरविंद सन् 1872 में 15 अगस्त को ही पाश्चात्य संस्कृति से पूर्ण प्रभावित बंगाली परिवार में पैदा हुए थे। अधिकांश शिक्षा-दीक्षा इंग्लैंड में संपन्न हुई, पर उनका शक्तिमंत स्वरूप तभी जाग उठा था। भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा में प्रथम श्रेणी पाकर भी वे घुड़सवारी की परीक्षा में नहीं गये।

फिर वे भारत माँ की गोद में वापस लौटे। बड़ौदा राज्य की सेवा में प्रविष्ट हुए फिर बड़ौदा कॉलेज में आकर राष्ट्रवाद के समर्थन में लेखमालाएं लिखी, कविताएं लिखी, पद्यनाट्य लिखे और कालिदास का अंग्रेजी में अनुवाद किया। अनवरत कार्य करके तमाम विषयों में पारंगत हुए और यहीं से उन्होंने राष्ट्रीय अस्मिता के जागरण का शंख फूंका।

स्वाधीनता की दीप्त मशाल लिये वे कलकत्ता आए, नेशनलिस्ट पार्टी का संगठन सूत्र संभाला 'वन्दे मातरम्' पत्र के सहकारी संपादक बने और शब्दों से नवचेतन्य की आग बरसाते हुए भी कानून के पंजे से बचे रहे।

नेशनल कॉलेज के आचार्य पद से इस्तीफा दिया और 1907 की सूरत कांग्रेस में राष्ट्रवादियों की कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में तिलक खपर्डे और लाला लाजपतराय के साथ उपस्थित हुए।

आग जली, देश की जगती जवानी ने शस्त्र धारण किया। अरविन्द इस संग्राम के सैनानी के रूप में 5 मई सन् 1908 को बंदी बनाये गये। अलीपुर षड़यंत्र केस चला, कितने कठिन अभियोग थे। जीवन और मृत्यु के बीच झूलते हुए क्षण। पर इसी समय अंतःस्थित योगी ने अपने को अभिव्यक्त किया। जेल में ही उन्होंने वासुदेव का साक्षात्कार किया और अतिमानस की संभावना पर विवेकानंद की वाणी सुनी। इधर केस में देशबंधु चितरंजनदास ने उनकी पैरवी की और वे दोषमुक्त हुए।

अब एक नया कुंवारा पथ उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। भगवान के आदेशानुसार वे विभिन्न नाटकीय परिस्थितियों में पाण्डिचेरी चले आए। फिर तो चुने साधकों के साथ नये विकास के लिए सतत योग साधना का काल है। 24 अप्रैल 1920 को माताजी भी वहां आ गयी और 24 नवंबर 1926 को अरविन्द ने सिद्धि प्राप्त कर ली। वे अतिमानसिक चेतना को जीवन-धारा में उतार लाने के लिए एकांतवास में चले गये। तब से 5

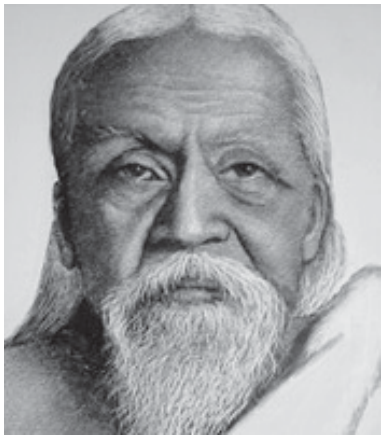

दिसंबर 1950 के स्वेच्छाकृत महाप्रस्थान के पूर्व तक एकांत में ही रहे।

**राष्ट्रवाद के पुरोधा :**

इंग्लैंड से ही भारतीय सिविल सर्विस की अनिच्छा भारतीय मजलिस की स्वराज्य चर्चाएं, 'कमल और कटार' नामक क्रांतिकारी समिति में योग, अरविंद की प्रबल राष्ट्रश्रद्धा के चिह्न हैं। फिर बड़ोदा के 'इन्दुप्रकाश' पत्र की लेखमाला में उन्होंने स्वाधीनता के लिए आवेदन निवेदन की नीति छोड़कर शक्ति से राज्य प्राप्ति का आह्वान किया। कण-कण को मां की तरह पूजने की भावना जगाई। वे दरिद्र ग्राम्य, अशिक्षित में राष्ट्रात्मा को जगाने के लिए कटिबद्ध हुए। पूर्ण स्वराज्य की कल्पना से हीन युग में निर्भीकता, अर्थनीति में ग्राम समितियों के आधार पर समाज निर्माण और युवकों को आगे बढ़ा देना, कितना कठिन काम था। गांवों में भाषण देते हुए घूमे, विद्रोह की ज्वाला जलाई। कांग्रेस के तमाम जिला, प्रांतीय और भारतीय अधिवेशनों में उनकी वज्रवाणी गूंजी, विराट् जन सभाओं में उन्होंने कहा-- 'राष्ट्रवाद क्या है? वह एक राजनीतिक कार्यक्रम मात्र नहीं है, राष्ट्रवाद एक धर्म है जो भगवान की देन है, राष्ट्रवाद अमर है वह मर नहीं सकता। भगवान मारे नहीं जा सकते।'

**एकता की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि :**

राष्ट्रवाद का यह ओजस्वी रूप मानव एकता की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के रूप में सामने आया है। उन्होंने एकता की ऐतिहासिक परम्परा का आशामय रूप

हमारे सामने रखा है--अर्थ, श्रम, राजनीति और विधान में समाज अधिक सापेक्ष होता जा रहा है। इसके बीच से ही जो चेतन धारा व्यक्ति से कुटुम्ब, ग्राम, समाज, देश तक आयी है वही उसे आत्मा के आधार पर समग्र भूमिका एकता की ओर भी ले जाएगी। व्यक्तिगत इच्छा से ऊपर उठने का सिद्धांत, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में स्वार्थ त्याग का सिद्धांत भी बन सकता है। इस आध्यात्मिक स्तर पर आधारित एकता, भौतिक समानता, नैतिक बंधुत्व और धार्मिक आत्मीयता से अधिक समग्र होगी।

**मंत्रद्रष्टा कवि और समीक्षकः**

अरविन्द इसी व्यापक आत्मीयता की राह से मंत्रद्रष्टा की भूमिका में अवतीर्ण हुए। आचार्य, कवि और अनुवादक तीनों विधाओं से नये युग के साहित्य का सूत्रपात किया। 'भावी कविता' नामक आलोचना पुस्तक में उन्होंने काव्य के चरम आदर्श मंत्र काव्य की प्रतिष्ठा की है। मंत्र काव्य का तात्पर्य है कि प्रत्येक अनुभूति को व्यक्त करने के लिए एक आदर्श छन्द तथा प्रणाली है और उसे ही पकड़ पाना काव्य सिद्धि है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कोई भी नैतिक, सामाजिक तथा परम्परागत विधान काव्य पर नहीं लादा है। उनकी संकलित कविताओं में काव्य की ऐतिहासिक प्रगति के चिह्न, रहसिल प्रेरणाओं की क्रमिक गहनता के आधार पर सृजन के प्रतीक हैं। नीलपंछी, स्वप्नतरी इसी युग की अमर प्रतीक कविताएं हैं। इसी समय उन्होंने भारतीय तथा ग्रीक कथाओं पर आधारित काव्य लिखे। अनुवाद के रूप में अरविंद ने एक ही कविता का कई रूपों में अनुवाद कर ईमानदारी की शिक्षा दी है। पाश्चात्मक शिल्पपूर्णता में भारतीय भाव भूमिका का अवतरण इसके पूर्व संभव नहीं हो सका था। अंग्रेजी छन्द परम्परा में उन्होंने प्रयोगों से छन्दों को नया वजन दिया है और अंग्रेजी में अंतिम अधूरा महाकाव्य 'सावित्री' आज भी आलोचकों के लिए प्रतिमान बना हुआ है। पर सबसे कम समझी गई है उनकी कला समीक्षा। भारतीय तथा पाश्चात्य कला पद्धतियों पर उनका दृष्टिकोण समन्वयवादी है। वे मानते हैं कि प्राचीन वैभव का स्थान कला की अर्थ सूक्ष्मता तथा कोमलता ने ले लिया है। चित्रों के संकेत और क्रियान्विति, सत्ता की सुंदर आकृतियों और रंजित प्रभावों में आत्मा के विचरण के आनंदबोध भारतीय षडंगों के प्रकाश में नया रूप ग्रहण करते हैं। कला का उच्चतर लक्ष्य जीवन और प्रकृति के रूपों द्वारा सत्ता की अभिव्यक्ति भी है। भारतीय कला में अति भौतिकता के अभाव, रेखाओं के भाव विस्तार, बहिर्मुख चिह्नों का हल्कापन, भंगिमाएं और संयोजन इन सबके रहस्य को उन्होंने खोला है। अजन्ता पूर्व से लेकर अवनीन्द्र तक की कला के वे पारखी और पकासो के व्याख्याकार और आलोचक दोनों रहे हैं। ग्रीक कला के संतुलन और सौन्दर्य गठन के वे प्रशंसक हैं।

**नये क्षितिज के द्रष्टा :**

अरविन्द वेद और उपनिषद साहित्य के विषय में भी परम्परावादी नहीं हैं। उन्होंने वेदों की प्रकृतिवादी पाश्चात्य व्याख्या तथा सायण आदि की कर्मकाण्डीय व्याख्या से भिन्न पथ अपनाया है। उनकी दृष्टि में वेद उस आध्यात्मिक ज्ञान के लिए माना हुआ नाम है जहां तक मानव मन की गति हो सकती है। वे ऋषि सूक्त के निर्माता ही नहीं वरन् एक सनातन सत्य और अपौरूषेय ज्ञान के द्रष्टा थे। ऋग्वेद ही मानव विचार के उस प्रारंभ काल से आया उपदेश ग्रंथ है जिसके अवशेष एलूसि नियन तथा आर्फिक रहस्य वचन थे। जाति का आध्यात्मिक और सूक्ष्म मानसिक ज्ञान ऐसे प्रतीक चिह्नों से ढका हुआ था जो अनधिकारी पुरुषों से छुपा रहता है, पर दीक्षितों को प्रगट हो जाता था। इसके प्रमाण में अरविन्द ने अग्नि, ऊषा, इन्द्र, विश्वदेव आदि की व्याख्याएं दी हैं। जैसे वैदिक सोम है, आनन्द और अमरता का अधिपति सूर्य सविता है, रचियता और पोषक वृहस्पति है आत्मा की शक्ति। अरविन्द ने स्वयं वैदिक मंत्रों का सही अर्थ प्रस्तुत किया है। उन्हीं के प्रकाश में कांपलि शास्त्री ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक पर (सिद्धन्जनभाष्य) तथा नलिनीकान्त गुप्त ने मधुछन्दा की मंत्रमाला लिखी और अम्बालाल पुराणी का वैदिक कोष अभी चल रहा है।

पर ये सब रूप जिसके आधार पर खड़े हैं वह है उनकी योग साधना, एक नये योग पथ का निर्माण और उसका निर्देशन। उनका योग पूर्णयोग, संपूर्ण विश्व चेतना में दिव्य जीवन की प्रतिष्ठा चाहता है। सृष्टि भगवान की लीला का आनन्द है और भगवान जड़ से लेकर अनन्त स्वरों पर अपने को अभिव्यक्त कर रहे हैं। पहले मात्र जड़ था, फिर प्राण चेतना उतरी, फिर मनस् आया और आज मानसिक स्तर पर अंतरात्मा की और उन्मुख होकर हम अतिमानस, सत्य, ऋत्यं वृहत् की ओर जा सकते हैं। जिस तरह एक नये तत्व के प्रवेश पर एक नया रूप भी आता है, उसी तरह अतिमानस को धारण करने के लिए नये प्रकार की देह होगी। सीमित मन से इसकी कल्पना उतनी ही कठिन है जितनी बंदर के लिए मानवीय विकासों की कल्पना। अब तक का विकास प्रकृति साधित ही था, पर आज वह चेतन रूप से भी साधित किया जा सकता है। इसी चेतना साधित, रूपांतर के सर्वांगीण प्रयास को अरविन्द ने पूर्ण योग का नाम दिया है। मानव विकास के तमाम बिखरे प्रयासों का अरविन्द ने इस साधना पथ में समन्वय किया है। यहां संपूर्ण जीवन ही योग है। यहां शरीर की अवहेलना नहीं, जीवन का त्याग नहीं और मन से भय नहीं। एक नये क्षितिज के द्रष्टा के रूप में अरविन्द सबसे अधिक प्रभावित हैं। उनका जन्मदिन राष्ट्र की स्वाधीनता के साथ-साथ उनके चिरन्तन स्वप्न की प्रभा किरणों का वाहक भी है।

***14, उर्दूपुरा, उज्जैन (म.प्र.)***

# मेवाड़ की परिक्रमा-अणुव्रत के संदर्भ में

**मुनि राकेशकुमार**

वि.सं. 2013 के फाल्गुन मास में गुरुदेव आचार्य तुलसी चुरू में विराजमान थे और मैं भी साथ में था। वहां अणुव्रत महारथी देवेन्द्र भाई कर्णावट ने दर्शन किये। उन्होंने राजसमंद के गांवों में अणुव्रत का प्रचार करने की दृष्टि से एक योजना प्रस्तुत की। उस योजना की क्रियान्विति के लिए मुझे मेवाड़ भेजने का अनुरोध किया। उस समय मेरा अध्ययन बहुत व्यवस्थित चल रहा था। गुरुदेव ने मुझे देवेन्द्र कर्णावट के समक्ष बुलाया और कहा--राजसमंद जिले के गांवों में अणुव्रत का कार्य करना है। उस कार्य के लिए तुम्हें मेवाड़ भेजने का विचार है। मैंने निवेदन किया--एक वर्ष पूर्व आपने मुझे जलगांव भेज दिया। इससे भी मेरे अध्ययन की धारा में गतिरोध उत्पन्न हुआ। कृपा कर एक-दो वर्ष मुझे आपके सान्निध्य में ही रहने का अवसर प्रदान करें। गुरुदेव ने मुझे समझाते हुए कहा--पुस्तकीय अध्ययन से भी बड़ा अध्ययन जनता के मनों को पढ़ना है। गांवों में रहने और काम करने से बहुत अनुभव मिलते हैं। गांधीजी अपने आश्रम के हर कार्यकर्ता से प्रारंभ में सेवा का छोटा काम कराते थे। अणुव्रत के कार्य के साथ मेवाड़ में तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह का कार्य भी करना है। इस प्रकार गुरुदेव ने वात्सल्य पूर्ण शब्दों से मेवाड़ के लिए मेरे मानस का निर्माण किया। दूसरे दिन देवेन्द्र भाई के निवेदन पर व्याख्यान में मेवाड़ की ओर मेरा विहार घोषित कर दिया।

पिछले दो-तीन वर्षों से आचार्यश्री के साथ रहते हुए भी मैं अणुव्रत के कार्य में संलग्न था। पर मेरे अध्ययन का क्रम सुचारु रूप से चलता रहा। मेवाड़ यात्रा से मेरे जीवन की दिशा बदल गई। मेवाड़ अणुव्रत के लिए ऊर्वर भूमि है, यह मैंने पहले भी सुना था। वहां पहुंचने पर मुझे इसका प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। हर गांव में शिक्षक, विद्यार्थी, व्यापारी, राज-कर्मचारी व किसान आदि बड़ी सहजता से सम्पर्क में आते तथा श्रद्धा से अणुव्रत के नियम ग्रहण करते। वहां की जीवन-शैली में सत्संग के प्रति सहज उत्साह था। कभी-कभी तीनों समय कार्यक्रम आयोजित होते, सैकड़ों व्यक्तियों ने पूर्ण या आंशिक रूप से अणुव्रत की आचार-संहिता स्वीकार की। जहां भी जाना होता वहां विद्यालयों में अणुव्रत के कार्यक्रम आयोजित होते। कई विद्यालयों में अणुव्रत विद्यार्थी परिषद् का संगठन बना, जिसके माध्यम से छात्र वर्ग में अणुव्रत का सुन्दर कार्य हुआ।

मेवाड़ में प्रवेश के बाद देवगढ़, आमेट व कुम्भलगढ़ तहसील के छोटे-बड़े पचासों गांवों का स्पर्श करते हुए हम राजसमंद तहसील पहुंचे। सबसे पहले तेरापंथ की जन्मभूमि केलवा जाना हुआ। देवेन्द्र भाई तथा उनके सहयोगी कार्यकर्ता मिले तथा भावी कार्यक्रम पर विचार-विमर्श हुआ। केलवा में दो-तीन दिन बाद एक विराट सार्वजनिक सम्मेलन का आयोजन होने वाला था। सम्मेलन में तत्कालीन वित्त मंत्री तथा सुप्रसिद्ध गांधीवादी विचारक हरिभाऊ उपाध्यक्ष मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होने वाले थे। विधानसभा के उपाध्यक्ष निरंजननाथ आचार्य कार्यक्रम के आयोजक थे। जब आयोजकों को केलवा में हमारे आने की सूचना मिली तो उन लोगों ने सम्मेलन में उपस्थित होकर मंगल आशीर्वाद देने का निवेदन किया। कार्यक्रम का आयोजन बहुत व्यापक स्तर पर था। कार्यकर्ताओं ने हमारी व्यवस्था पर पूरा ध्यान रखा। हम दो संत कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। हरिभाऊ एवं अन्य प्रमुख लोगों के आने के साथ हम भी पहुंच गए। संयोजक निरंजननाथ ने गुरुदेव तुलसी व अणुव्रत का परिचय देते हुए मुझे भाषण के लिए आमंत्रित किया। उस समय ध्वनिवर्द्धक यंत्र का उपयोग नहीं होता था। मैंने खड़े होकर भाषण दिया। जनता ने बहुत शांति से सुना। मैंने अणुव्रत की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा--आज देश में जनतंत्र शासन प्रणाली है। इसमें सबको आगे बढ़ने का अधिकार है। पर जो चंद्रमा के समान आचरण करता है, वह आगे बढ़ सकता है, समाज में लोकप्रिय हो सकता है। चन्द्रमा के राज्य में तारे, ग्रह, नक्षत्र सभी चमकते हैं, वह सबको विकास करने का अवसर देता है। इसलिए सभी उसे देखना चाहते हैं, पर सूरज अकेला ही चमकता है। वह किसी ग्रह, नक्षत्र को चमकने का अवसर नहीं देता। वह अकेला ही चमकना चाहता है। इसलिए आंखें उसे देखना नहीं चाहती यदि भूल से भी किसी की आंखें उस ओर चली जाती हैं तो पुनः मुड़ जाती हैं। (मेरे इस कथन पर मुख्य अतिथि सहित उपस्थित सभी भाई-बहनों ने हर्ष ध्वनि की)

मैंने आगे कहा--हमें अपने हितों और अधिकारों के साथ दूसरों के हितों और अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। अणुव्रत का दर्शन समता और समानता के सिद्धांत पर आधारित है। सबको नशा, मिलावट व अस्पृश्यता इत्यादि बुराइयों से मुक्त रहना चाहिए तथा अपने गांव को इनसे मुक्त बनाना चाहिए।

हरिभाऊजी ने सामाजिक समानता, साक्षरता, रूढ़ि-उन्मूलन, अनुशासन व चरित्र निर्माण की चर्चा करते हुए मेरे भाषण की भी चर्चा की। उन्होंने गुरुदेव तुलसी के प्रति हार्दिक श्रद्धापूर्ण उद्गार प्रकट किए और सबको अणुव्रत के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। इस प्रसंग से हजारों लोग स्वतः परिचित हो गए। कार्यक्रम में बोलने वाले सभी वक्ताओं ने अणुव्रत के प्रति मंगल उद्गार प्रकट किए।

दूसरे दिन प्रातःकाल अंधेरी ओरी में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। वित्त मंत्री हरिभाऊ, विधानसभा उपाध्यक्ष निरंजननाथ आचार्यश्री व अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी उसमें सम्मिलित हुए। हरिभाऊ ने संक्षेप में अनुशासन के महत्त्व पर बोलते हुए आचार्य भिक्षु को श्रद्धांजलि अर्पित की। केलवा के साप्ताहिक प्रवास के पश्चात् निकटवर्ती अनेक छोटे गांवों में जाना हुआ। वहां रात्रिकालीन कार्यक्रमों में हर समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित होते। केलवा के कार्यक्रम से अधिकतर लोग अच्छे परिचित हो गए थे। लगभग दो सप्ताह में आसपास के गांवों की परिक्रमा करने के

बाद हम कांकरोली पहुंचे। वहां तहसील पंचायत समिति की ओर से पंचों, सरपंचों का अणुव्रत सम्मेलन आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप देने में आचार्य निरंजननाथ का हार्दिक सहयोग था। अनेक पंचों ने आहार शुद्धि, नशामुक्ति के संकल्प ग्रहण किये।

गांधी सेवा सदन राजसमंद के सामने हमारे चातुर्मास का स्थान निश्चित था। उस समय राजनगर-कांकरोली के मध्य एक भी तेरापंथी परिवार नहीं था। देवेन्द्र भाई के निवास स्थान का निर्माण भी बाद में हुआ था। चातुर्मास स्थल के पीछे चारण और राजपूत जाति के परिवार रहते थे। वहां समय-समय पर प्रवचन का कार्यक्रम होता रहा। उस कॉलोनी के अधिकतम परिवारों ने आहार-शुद्धि व नशामुक्ति के संकल्प ग्रहण किए। कुछ भाई बहुत नशा करने वाले थे। उनके जीवन में बिल्कुल परिवर्तन हो गया। निकटवर्ती खटीक और रैगर बस्ती में भी सप्ताह में एक बार प्रवचन माला शुरू हुई। अनेक परिवारों ने हिंसा और नशे से दूर रहने के नियम ग्रहण किए।

चातुर्मास का समय एक स्थान में स्थिरता का होता है। किशोर नगर का यह चातुर्मास विहार चर्चा में बीता। सप्ताह में लगभग पांच दिन राजनगर, कांकरोली के गांवों में जाने का मेरा कार्यक्रम रहता। जहां जाना होता वहां पहले दिन गांधी सेवा सदन के दो-तीन कार्यकर्ता पहले दिन जाकर भूमिका बनाते, दूसरे दिन मेरे साथ पदयात्रा करते। सुबह का कार्यक्रम वहां विद्यालय में होता, दोपहर में गांव के भाई-बहिनों में प्रवचन का कार्यक्रम होता। गांवों में अणुव्रत के नियमों को अपनाने की प्रेरणा दी जाती, मुख्यतः नशा, मृत्युभोज व अस्पृश्यता दूर करने पर बल दिया जाता। इसके साथ ही गांधी सेवा सदन के कार्यकर्ता साक्षरता, ग्राम संगठन, रोजगार प्रशिक्षण पर उपस्थित लोगों का मार्गदर्शन करते। पूरे चातुर्मास में यह कार्यक्रम व्यवस्थित चलता रहा। भाणा, लोहाणा आदि चार गांवों में अणुव्रत का यह कार्यक्रम सघन रूप से आगे बढ़ने का निर्णय हुआ। वहां के प्रमुख किसान, शिक्षक व ग्रामसेवक उस कार्य के साथ संगठित रूप से जुड़े।

रविवार का व्याख्यान आचार्यश्री की आज्ञा से राजनगर, कांकरोली व धोईन्दा में होता। तीनों स्थानों पर साध्वीश्री का चातुर्मास था। सभी साध्वियों का व्यवहार बहुत उदार था। गांवों के इस प्रचार कार्य के माध्यम से सैकड़ों व्यक्ति अणुव्रती बने। कई गांवों में मृत्युभोज नहीं करने का निर्णय हुआ। राजसमंद तहसील के सैकड़ों व्यक्ति अणुव्रती बने। हजारों व्यक्ति अणुव्रत के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े।

चातुर्मास की समाप्ति का गुरुदेव का लिखित संदेश प्राप्त हुआ। उसमें संकेत था, राजसमंद के कार्य से मैं संतुष्ट हूं। वहां का श्रावक समाज भी बहुत प्रसन्न है। इस कार्य को आगे भी चालू रखना है। पर चातुर्मास के बाद एक बार यहां दर्शन करना है।

चातुर्मास की समाप्ति पर राजनगर में मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम में विभिन्न गांवों के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। वहां से गुरुदेव के दर्शनार्थ विहार किया। उस वर्ष का मर्यादा महोत्सव लाडनूं था, पर गुरुदेव उस समय सरदारशहर विराज रहे थे, वहां हमने दर्शन किए। मेवाड़ के कार्यक्रम के लिए प्रसन्नता प्रकट करते हुए 18 हजार गाथाओं का पुरस्कार प्रदान किया। वहां से लाडनूं पदार्पण हुआ। वहां मर्यादा महोत्सव के दिन राजसमंद के कार्य के लिए कृपा पूर्ण उद्‌गार फरमाते हुए कांकरोली चातुर्मास का निर्देश प्रदान किया।

मेवाड़ का सामाजिक संगठन आज बहुत व्यवस्थित है। उस समय मार्गवर्ती अनेक गांवों में सामाजिक वैमनस्य था। गुरुदेव के आशीर्वाद से सामाजिक वैमनस्यता दूर करने में हमें अच्छी सफलता मिली। क्योंकि सामाजिक जीवन में शान्ति और समरसता का विकास करना अणुव्रत के कार्यक्रम का प्रमुख अंग है। इस समस्या के समाधान में वरिष्ठ श्रावक तख्तमल कच्छारा का जो सहयोग मिला उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

पिछले वर्ष जिन गांवों में अणुव्रत का कार्य हुआ था, वहां पुनः भ्रमण किया गया। जिन लोगों ने संकल्प ग्रहण किये थे उन्हें व्यक्तिशः संभाला गया। कांकरोली चातुर्मास में सर्वधर्म सम्मेलन का विशाल आयोजन भी हुआ। राजसमंद क्षेत्र के अनेक विद्यालयों में अणुव्रत छात्र परिषद् का गठन हुआ। उनके माध्यम से विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण का कार्य सुचारु रूप से आगे बढ़ा।

कांकरोली चातुर्मास के बाद भीलवाड़ा में भ्रमण किया। गंगापुर तथा भीलवाड़ा के विद्यालयों, पंचायत कार्यालयों व सरकारी दफ्तरों में अणुव्रत से सम्बन्धित कार्यक्रम और गोष्ठियां भी आयोजित हुई। वहां अनेक प्रबुद्ध और उदार विचार के लोगों से मिलना हुआ। जिनमें तत्कालीन जिलाधीश नारायण सिंह मेहता का नाम मेरी स्मृति में आज भी है। नारायणजी गुरुदेव तुलसी के विचारों और अणुव्रत कार्यक्रमों की चर्चा सुन बहुत प्रभावित हुए। वे अपनी पत्नी के साथ कार्यक्रमों में आने लगे। मेहता स्वयं अणुव्रत बने तथा उनके सहयोगी कई सरकारी अधिकारियों ने नशामुक्ति के संकल्प स्वीकार किए। मेहताजी सेवानिवृत्ति के बाद सी-स्कीम जयपुर में स्थायी रूप से रहने लगे एवं आखिर समय तक अणुव्रत से जुड़े रहे।

उदयपुर में प्राध्यापकों और विद्यार्थियों से विशेष सम्पर्क हुआ। अनेक विद्यालयों में अणुव्रत के कार्यक्रम आयोजित हुए। अनेक प्राध्यापक अणुव्रती बने। महाराणा भोपाल कॉलेज में अणुव्रत विद्यार्थी परिषद् का संगठन बना। अनेक प्रतिभाशाली और निष्ठावान विद्यार्थी अणुव्रत के साथ जुड़े, उनमें वरिष्ठ कार्यकर्ता डॉ. सोहनलाल गांधी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उदयपुर में हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई धर्मगुरुओं से निकट सम्पर्क बना। असके बाद वे अणुव्रत के कार्यक्रमों में बराबर भाग लेते रहे।

उदयपुर चातुर्मास के बाद हम शीघ्र ही राजसमंद क्षेत्र में आए। मेवाड़ में जो हमारा मुख्य कार्यक्षेत्र था। वहां गणाधिपति आचार्य तुलसी का आगामी चातुर्मास होने वाला था। वहां सम्पर्क में आए लोगों को चातुर्मास में लाभ लेने की प्रेरणा दी गयी। सायरा में मेवाड़ प्रवेश के अवसर पर मैंने गुरुदेव का स्वागत किया। तब गुरुदेव ने अणुव्रत के कार्य के लिए प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा--मुनि राकेशकुमार ने मेवाड़ में रहकर अणुव्रत का व्यापक कार्य किया है। राजसमंद तहसील में रचनात्मक कार्य के लिए ठोस भूमिका का निर्माण हुआ है। कार्यकर्ताओं को उसे आगे बढ़ाना है।

# उतार-चढ़ाव भरा है लोकपाल बिल का इतिहास

**आशीष वशिष्ठ**

आजकल जिस लोकपाल बिल की चर्चा आज देश भर में हो रही है वह लोकपाल बिल आज से लगभग चार दशक पूर्व ही पैदा हो चुका था। लोकपाल बिल के प्रारूप और निर्माण को लेकर आज भले ही सरकार और सिविल सोसायटी के बीच घमासान मचा हो लेकिन असल में इस बिल की संकल्पना, प्रारूप और रूपरेखा हमारे नेताओं ने काफी पहले ही बना ली थी। लेकिन सरकार की उदासीनता, नौकरशाहों की काम टालू प्रवृत्ति और खुद को कानून के फंदे से बचाने के लिए नेताओं ने लोकपाल बिल को फुटबाल बना डाला है। कई दफा राज्यसभा और लोकसभा में पेश होने के बावजूद भी यह बिल अभी तक सरकारी फाइलों में इधर-उधर धक्के और ठोकरें खाने को मजबूर है। आजादी के डेढ़ दशक के भीतर ही देश में बढ़ती भ्रष्टाचार की समस्या के प्रभावशाली समाधान के लिए देश के प्रमुख व्यक्तियों और न्यायविदों ने ओम्बड्समैन जैसी किसी संस्था को भारत में भी विकसित करने की मांग शुरू कर दी। प्रशासनिक सुधार आयोग ने इस मुद्दे पर गहन रूप से विचार किया और 1966 में इसने अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किए 'हम सोचते हैं कि देश की विशिष्ट परिस्थितियों के मद्देनजर देश की जनता की शिकायतों को दूर करने के लिए दो विशेष संस्थाओं के प्रावधान काफी प्रभावशाली और पर्याप्त साबित होंगे। एक ऐसी संस्था का गठन हो जो केन्द्र और राज्य के मंत्रियों और सचिवों के प्रशासनिक कार्यों की जांच करे। साथ ही, एक दूसरी संस्था का भी गठन हो जो केन्द्र और राज्यों के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रशासनिक कार्यों की जांच करे। इन सभी संस्थाओं को कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका से स्वतंत्र होना चाहिए।' पहली संस्था को लोकपाल के नाम से तथा दूसरी संस्था को लोकायुक्त के नाम से जाना जाए। दुर्भाग्य का विषय है कि भारत में लोकपाल की सृष्टि दीर्घकाल से टलती आ रही है, यद्यपि इस दिशा में ठोस कदम उठाने का दिखावा अवश्य किया जाता रहा है। देश के लोक प्रशासन में तेजी से फैलते भ्रष्टाचार के प्रति सरकार की बढ़ती उदासीनता के कारण 'ओम्बड्समैन' के प्रकार की किसी संस्था की स्थापना के लिए 1966 से ही हवा बह निकली थी। प्रशासनिक सुधार आयोग ने, जो 1966 में मोरारजी देसाई की और बाद में के. हनुमन्थैया की अध्यक्षता में गठित किया गया था, शिकायतों के समाधान की आवश्यकता को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की थी। इस आयोग ने अपने प्रथम प्रतिवेदन में ही लोकपाल एवं लोकायुक्त के द्विस्तरीय तंत्र की स्थापना की संस्तुति की थी। इस विधेयक की मूल अवधारणा है ऊंचे पदों पर विराजमान व्यक्तियों को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाना और उनके विरूद्ध लगे आरोपों की जांच करने के लिए एक स्वतंत्र मशीनरी का प्रावधान करना। भारत सरकार ने प्रशासनिक सुधार आयोग की इस सिफारिश को स्वीकार करते हुए पहली बार 9 मई, 1968 को संसद में लोकपाल और लोकायुक्त विधेयक प्रस्तुत किया था।

**देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायापालिका में दिनों-दिन बढ़ता भ्रष्टाचार अत्यधिक चिंता का विषय है। हमारे देश में नेताओं के लिए अब तक कोई आचार संहिता नहीं बनायी गयी है। भारत में अभी तक भ्रष्ट राजनीतिज्ञ पर अभियोग लगाने के लिए नियमित तंत्र नहीं है। ऐसे में बिगडैल, भ्रष्ट नेताओं और नौकरशाहों पर नकेल कसने के लिए लोकपाल रूपी संस्था की शीघ्रातिशीघ्र स्थापना होनी चाहिए।**

लोकपाल के लिए की गयी प्रथम संस्तुति को चार दशक से अधिक समय व्यतीत हो चुका है। लेकिन फिर भी, काफी ढोल पीटने के बावजूद भी लोकपाल का प्रादुर्भाव नहीं हो पाया है। लोकपाल विधेयक का काफी उतार-चढ़ाव वाला लम्बा इतिहास है। 'जन शिकायतों के निवारण की समस्या' पर अपनी अंतरिम रिपोर्ट में प्रशासनिक सुधार आयोग ने 1966 में 'लोकपाल' और 'लोकायुक्त' के गठन की सिफारिश की। 'लोकपाल' और 'लोकायुक्त' 'ओम्बड्समैन' शब्द के हिन्दी नाम हैं। 'ओम्बड्समैन' एक स्कैन्डिनेवियन संस्था है जिसकी स्थापना पहली बार स्वीडन में 1809 में अन्याय, भ्रष्टाचार और पक्षपात की जांच करने के लिए की गई थी। भारत में लोकपाल विधेयक पर संसद की स्वीकृति पाने के लिए अब तक नौ बार कोशिश की गई है (1968, 1971, 1977, 1985, 1990, 1996, 2001, 2005 और 2008 ), लेकिन ऐसा नहीं हो

सका। कभी लोकसभा भंग हो गई, तो कभी विधेयक की समय सीमा समाप्त हो गई। 1985 में न तो लोकसभा भंग हो गई और न ही विधेयक को वापस ले लिया गया। विधेयक को संसद में प्रस्तुत करने के पीछे नेताओं का सिर्फ एक उद्देश्य था कि--जनता में यह धारणा बनाना कि वे (राजनीतिक दल) अपने चुनावी वादों के प्रति निष्ठावान हैं। इस विधेयक के बार-बार निरस्त होने की वजह थी--प्रशासनिक प्रवृत्तियों और राजनीतिक इच्छा शक्ति का अभाव। लोकपाल की नियुक्ति के लिए आवश्यक कानून बनाने का वर्तमान प्रयास दसवां होगा। अभी तक ग्यारह राज्यों ने लोकायुक्त की नियुक्ति की है, परन्तु उनके अधिकार तथा प्रभाव भिन्न-भिन्न हैं। इस विषय पर कर्नाटक का कानून आदर्श प्रतीत होता है।

सत्ता में आने के तुरंत बाद जनता पार्टी की सरकार ने देश के सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार मिटाने के लिए लोकपाल नामक अधिकारी की स्थापना का वचन दिया था। प्रथम जनता सरकार (1977-79) ने जुलाई 1977 में लोकसभा में प्रस्तुत अपने लोकपाल बिल में भारत के प्रधानमंत्री को भी लोकपाल की जांच की परिधि में लाने का प्रस्ताव किया था। स्मरणीय है कि 1966 में प्रशासकीय सुधार आयोग ने प्रथम बार भारत में 'ओम्बड्समैन' जैसी संस्था की स्थापना का सुझाव दिया था। तत्कालीन शासन इस प्रकार की संस्था की स्थापना के संबंध में काफी समय तक उदासीन रहा लेकिन 1971 में उसने लोकसभा में 'लोकपाल विधेयक' प्रस्तुत किया। किंतु लोकसभा के विघटन के साथ ही यह विधेयक स्वतः ही समाप्त हो गया। इस विधेयक में प्रधानमंत्री के विरूद्ध आरोपों की जांच के संबंध में कोई व्यवस्था नहीं थी। जनता सरकार ने जुलाई 1977 में लोकसभा में यह विधेयक प्रस्तुत किया। इस विधेयक की दो प्रमुख विशेषताएं थीं--प्रथम, प्रधानमंत्री भी

**आजादी के बाद अगर घोटालों, कांड़ों और घपलों का इतिहास खंगाला जाए तो कदम-कदम पर विधायिका ही गुनाहगारों के साथ खड़ी दिखाई देती है। विधायिका को भली-भांति मालूम है कि अगर देश में भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए लोकपाल की व्यवस्था होगी तो उसकी गर्दन नपना तय ही है।**

लोकपाल के क्षेत्राधिकार से बाहर नहीं है अर्थात् प्रधानमंत्री के विरुद्ध भी भ्रष्टाचार के आरोप की जांच करने का अधिकार लोकपाल को प्रदान किया गया था। यह व्यवस्था सर्वथा उचित है। आपातकाल के दौरान जो अनुचित कार्य हुए थे, उन्हें देखकर यह नितांत आवश्यक था कि स्वच्छ प्रशासन की दृष्टि से प्रधानमंत्री के मामले में भी लोकपाल को जांच का अधिकार दिया जाय। दूसरा, जांच करने के लिए लोकपाल की अपनी स्वयं की प्रशासनिक व्यवस्था होगी। इसका अर्थ यह है कि लोकपाल को अपने कार्यों के लिए नियमित शासन-तंत्र पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रहेगी। सरकार ने कुछ ढुलमुल रवैये के बाद इन सिफारिशों को मान लिया और लोकसभा में लोकपाल विधेयक पेश कर दिया। संसद भंग कर दिये जाने के साथ ही यह विधेयक समाप्त हो गया। प्रधान मंत्री का पद इस विधेयक के क्षेत्र से बाहर रखा गया था। विडम्बना यह है कि किसी भी सरकार ने लोकपाल संबंधी प्रस्ताव का सार्वजनिक रूप से विरोध नहीं किया है, और फिर भी इसे आवश्यक कानून बनाने के लिए सक्रियता नहीं दिखायी है।

वर्तमान में विश्व के 70 से अधिक देशों मे ओम्बड्समैन (लोकपाल) नामक व्यवस्था भ्रष्टाचार के विरूद्ध सफल प्रयोग मानी गई है। कुछ देशों में तो लोकपाल संस्था ने भ्रष्टाचार उन्मूलन में आगे आकर मानवधिकारों की रक्षा और आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र की विसंगतियों से जूझने की भी पहल की है। भारत में भ्रष्टाचार के खात्मे के सुझाव देने के लिए बनी समिति की यह एक प्रमुख सिफारिश थी कि लोकपाल एवं लोकायुक्त का गठन किया जाए, ताकि आर्थिक अनियमितताओं विशेषकर राजनीतिक भ्रष्टाचार पर काबू पाया जा सके। लेकिन यहां लोकपाल बिल पिछले चालीस वर्षों से संसद में पास होने का इंतजार कर रहा है। वास्तविकता यह है कि दिनों-दिन भ्रष्टाचार सिर चढ़ कर बोलने लगा है।

आजादी के बाद अगर घोटालों, कांड़ों और घपलों का इतिहास खंगाला जाए तो कदम-कदम पर विधायिका ही गुनाहगारों के साथ खड़ी दिखाई देती है। विधायिका को भली-भांति मालूम है कि अगर देश में भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए लोकपाल की व्यवस्था होगी तो उसकी गर्दन नपना तय ही है। ऐसा भी नहीं है कि कोई एक ही दल लोकपाल पर टालमटोल कर रहा है पिछले चालीस सालों में कई दलों की सरकारें आई और गई। लेकिन मजबूत और कड़े लोकपाल, की पहल किसी भी राजनीतिक दल ने नहीं की। समाजसेवी अन्ना हजारे द्वारा लोकपाल बिल की मसौदा समिति में सिविल सोसायटी को शामिल करवा कर एक सख्त कानून और लोकपाल के दायरे में प्रधानमंत्री को लाने की जो मुहिम चलाई है, उसकी सिफारिशें किसी भी दल को मंजूर नहीं हैं।

असल में सरकार ने प्रस्तावित बिल का जो ड्राफ्ट तैयार किया है उसके अनुसार प्रधानमंत्री को लोकपाल के दायरे से बाहर रखा गया है। इसके अलावा लोकपाल की चयन समिति में पांच

सत्ताधारी पक्ष के होंगे और सात राजनीतिक नुमाइंदे होंगे। लोकपाल को हटाने का भी अधिकार सरकार के पास रहेगा। जबकि सीबीआई सरकार के नियंत्रण में रहेगी। प्रधानमंत्री के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों की जांच सीबीआई के पास रहेगी। सांसद भी लोकपाल के दायरे से बाहर रहेंगे। सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के जज लोकपाल के दायरे से बाहर रहेंगे। निचली अदालत भी लोकपाल के दायरे से बाहर रहेगी। सिविल सोसायटी की तरफ से पेश जन लोकपाल विधेयक के मसौदे में फोन टेप, रोगेटरी लेटर जारी करने और भ्रष्टाचार की गुंजाइश कम करने के लिए कामकाज के तौर-तरीकों में बदलाव को लेकर सिफारिशें की गई हैं। लेकिन सरकार की तरफ से पेश लोकपाल बिल के मसौदे में इन मुद्दों का जिक्र तक नहीं है। अन्ना हजारे की टीम की तरफ से पेश मसौदे में सभी सांसदों द्वारा घोषित संपत्ति के ब्यौरे की जांच करने के लिए प्रस्तावित लोकपाल को आधुनिक साज-ओ-सामान उपलब्ध कराने की पेशकश की गई है। जन लोकपाल बिल में इस बात का भी जिक्र है कि लोकपाल की एक बेंच भारतीय टेलीग्राफ एक्ट के सेक्सन पांच के तहत एक मान्यता प्राप्त संस्था होगी। जिसे टेलीफोन और इंटरनेट जैसे माध्यमों के जरिए भेजे जा रहे संदेशों और डॉटा की निगरानी करने और उसे इंटरसेप्ट करने का अधिकार हासिल होगा। प्रस्तावित लोकपाल और उसके अफसरों की शक्तियों और उसके कामकाज को लेकर सिविल सोसायटी के ड्राफ्ट में कहा गया है कि जिन मामलों में जांच रुकी हुई है, उनमें लोकपाल किसी बेंच को रोगेटरी लेटर जारी करने के लिए अधिकृत कर सकता है। गौरतलब है कि रोगेटरी लेटर भारतीय अदालत द्वारा किसी विदेशी अदालत को लिखी जाने वाली चिट्ठी है, जिसमें न्यायिक सहायता मांगी जाती है। कुल मिलाकर छह महत्वपूर्ण बिंदुओं जिनमें लोकपाल के दायरे में प्रधानमंत्री, सीबीआई, सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के जज, निचली न्यायपालिका को लाए जाने को लेकर तीखे मतभेद सिविल सोसायटी और सरकार के बीच गहरे मतभेद हैं। सरकार का पक्ष है कि वो ऐसा नहीं चाहती है कि संविधान की मूल भावना को ठेस पहुंचे। सिविल सोसायटी पर गंभीर आरोप लगाते हुए सरकार ने कहा कि वह ऐसी किसी समानांतर सरकार बनने नहीं दे सकती जो किसी के प्रति भी जवाबदेह नहीं हो।

देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायापालिका में दिनों दिन बढ़ता भ्रष्टाचार अत्यधिक चिंता का विषय है। हमारे देश में नेताओं के लिए अब तक कोई आचार संहिता नहीं बनायी गयी है। भारत में अभी तक भ्रष्ट राजनीतिज्ञ पर अभियोग लगाने के लिए नियमित तंत्र नहीं है। ऐसे में बिगडैल, भ्रष्ट नेताओं और नौकरशाहों पर नकेल कसने के लिए लोकपाल रूपी संस्था की शीघ्रातिशीघ्र स्थापना होनी चाहिए। सरकार आगामी मानसून सत्र में लोकपाल विधेयक को संसद में पेश करने पर अडिग है। लेकिन सरकार, सिविल सोसायटी और अन्य राजनीतिक दलों के बीच विचार-विमर्श का जो लबोलुआब है वह यह है कि लोकपाल बिल संसद में पेश तो हो सकता है लेकिन वह कानून का रूप ले पाएगा इसकी संभावना बहुत क्षीण है। सरकार ये तो चाहती है कि लोकपाल बिल का निर्माण हो लेकिन सरकार ने लोकपाल बिल का जो प्रारूप तैयार किया है वो लूला, लंगड़ा, अधूरा और निकम्मा है। लोकपाल बिल पर जो ग्रहण आज से चार दशक पूर्व लगा था वो ग्रहण छूटने की शुभ घड़ी अभी आती हुयी दिखाई नहीं दे रही है। और जो विचार और सिफारिशें आज से लगभग चालीस साल पहले की गई थी वो पूर्व की भांति फाइलों में धूल खाने को मजबूर रहेंगे।

***बी-96, इंदिरा नगर,***
***लखनऊ - 226016 (उ.प्र.)***

# यह आत्मा की पुकार है

**सत्यनारायण भटनागर**

उपभोक्तावाद की आंधी के बीच,
शांत अन्ना हजारे कहां से आ गए।
वृद्ध आदमी के साथ युवा जगह पा गए
युवा मुट्ठी तान क्यों खड़े हैं पास उनके
अन्ना हजारे गांधी जैसे क्यों दिखते हैं।
गांधी क्यों जन्म ले लेते हैं हर वक्त?
गुजरे जमाने की चीज हैं वे तो,
समय बहुत आगे जा रहा है।
पीछे से ये आवाज क्यों आ रही है
गांधी कभी मरता नहीं है।
गांधी है एक विचार का नाम,
विचार में होते हैं कर्म के बीज
बीज मौसम आते ही,
बन जाते हैं पुष्प और फल
वे खिल उठते हैं मुस्कान लिए,
बीज वृक्ष बनकर लहलहा उठते हैं।
उन्हें कैद नहीं किया जा सकता
गांधीजी की आत्मा जाग जाती है।
समय के साथ गांधी मर नहीं सकता,
आधुनिकता की चमचमाहट में
कितना ही विस्मृत करो उसको
वह हमारी आत्मा की पुकार है
वह सदा सजग रहती है।
हमारे साथ दिन रात
अन्ना हजारे जागते रहो,
हम हैं तुम्हारे साथ-साथ।

***2 एम.आई.जी. देवरा***
***देवनारायण नगर***
***रतलाम (म.प्र.) 457001***

# स्वतंत्रता पर परतंत्रता का आवरण

**डॉ. हीरालाल छाजेड़**

आजादी के छः दशक पश्चात देश की जो तस्वीर उभर कर सामने आ रही है वह उस तस्वीर से बिल्कुल भिन्न है, जिसकी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हमारे बलिदानी नेताओं व देशवासियों ने कल्पना की थी। उस तस्वीर या स्वप्न की प्रासंगिकता भविष्य में भी बनी रहेगी। एक सुन्दर भारत की कल्पना जिसमें विचारधाराओं की भिन्नता के बावजूद एक प्रगतिशील, धर्मप्रधान, समता-समानता, असाम्प्रदायिक मेलजोल के वातावरण का सरस समाज, गरीब-अमीर की खाई कम हो, सभी को सुखपूर्वक जीने का अधिकार मिले, एक ऐसा भारत बनाने की आजादी के आंदोलन के परवानों की इच्छा थी।

गणतंत्र दिवस समारोह पर देश में चारों ओर इसकी महानता के गौरवगान गाये जाते हैं तथा विकासशील व परिपक्व होते लोकतंत्र की यशोगाथा का बखान खूब बढ़-चढ़कर किया जाता है। क्या वास्तव में ऐसा हो पाया है? और हम इस महान देश के महान निवासी बन पाये हैं। यदि इसका उत्तर सकारात्मक होता तो शायद हमारे देश की तस्वीर ही कुछ और होती और भारत आज विकसित देशों की अग्रिम पंक्ति में आ गया होता। किन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है।

देश के वर्तमान नेता मौके की तलाश में रहते हैं, ऐसा भी कह सकते हैं। केवल नेता ही नहीं अफसर-अधिकारी, साधारण नागरिक भी भ्रष्टाचार व अनैतिक कार्य करने में पीछे नहीं रहते हैं, सभी अपना घर भरने में लगे हुए हैं।

संसद में भले ही हमारे नेता एक-दूसरे के अनैतिक कार्यों पर कीचड़ उछालने में लगे हों किन्तु वे सभी चोर-चोर मौसेरे भाई हैं। उन्हें देश की प्रगति की कोई चिंता नहीं है। गरीब ज्यादा गरीब होता जा रहा है और अमीरों की तिजोरियों में धन रखने की जगह नहीं है अतः पैसा देश के बाहर स्विस बैंकों में भेजा जा रहा है। चारों ओर भ्रष्टाचार व घोटालों की गूंज सुनाई दे रही है। लोकतंत्र शर्मसार हो रहा है, संसद का सत्र ठप्प पड़ा है, सबको अपनी पार्टी व कुर्सी की चिंता है। जनता विवशतावश मूक बनकर देख रही है

भ्रष्टाचार पहले भी था पर आज जितना व्यापक नहीं। आज का परिदृश्य शर्मसार करने वाला लगता है। आज न केवल भ्रष्टाचार बल्कि साम्प्रदायिक शक्तियां भी उग्र हो रही है। न केवल हिन्दू और मुसलमान वरन समूचे समाज को जातियों-उपजातियों के बीच बांटने का एक सुनियोजित कार्यक्रम चल रहा है। जिसका एक मात्र उद्देश्य सत्ता के केन्द्र पर स्थापित होना है। फिर चाहे वह पंचायत हो या फिर संसद। आज जनता को ठगा जा रहा है उसे हथियार बनाकर नेता अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं।

हिंसा-अराजकता, बलात्कार की घटनाएं समाचार-पत्रों में प्रमुख पृष्ठों पर प्रतिदिन देखने को मिलती हैं, तब ऐसा अनुभव होता है कि सरकार या प्रशासन नाम की चीज देश में है या नहीं। क्या देश भगवान भरोसे चल रहा है? करुणा, दया, सेवा, सहिष्णुता, सरलता आदि बातें मानव-मस्तिष्क से गौण हो गई हैं।

क्या हमारे देश की स्वाधीनता की चाह रखने वाले, अपने प्राणों की आहुति देने वाले नेताओं ने कभी ऐसे स्वाधीन देश की कल्पना भी की थी। वास्तव में तो स्वतंत्रता पर परतंत्रता का आवरण चढ़ा हुआ है।

***जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार***
***नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)***

## पाठक दृष्टि

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-15 जून 2011 का अंक देखा, तो देखता ही रह गया। यह भ्रष्टाचार के विरुद्ध सही दिशा में उठा कदम है। आचार्य तुलसी से लेकर आज तक 'अणुव्रत' ने सदा अपना मानवता का धर्म निभाया है--मुझे अणुव्रत का भ्रष्टाचार-शिष्टाचार अंक स्मरण आता है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज में आपके सहभागी बनने पर 'अणुव्रत' परिवार का हार्दिक अभिनंदन, बधाई। यह कदम समय की मांग है। रामदेवजी के अभियान में भी अणुव्रत परिवार के मुनिश्री को मंच पर देखकर आनन्द हुआ था तथा आंदोलन के लिए प्रेरणा मिली थी। मंगलकामनाओं सहित।

***-- सत्यनारायण भटनागर,*** *रतलाम (म.प्र.) 457001*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक का आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव अंक पढ़ा। अंक में महाश्रमणजी के बाह्य एवं आंतरिक रूपों का अद्‌भुत वर्णन किया गया है। सभी लेखक धन्यवाद के पात्र हैं। महाश्रमणजी कम बोलते हैं सुनते ज्यादा हैं, यह मैं साक्षात पहले ही देख चुका हूं। डॉ. महेन्द्र कर्णावट का संपादकीय तो हमेशा ही प्रेरणादायी होता है। डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' का लेख अंतस को छू लेने वाला है। अंक में प्रकाशित सभी लेख अच्छे हैं। आप सदा चिरायु हों, इसी भावना के साथ।

***-- विजयसिंह कोठारी***

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-15 अप्रैल 2011 का अंक पढ़ा। मुनि जयंतकुमार का लेख ''गांवों की दयनीय दशा'' बेहद पसंद आया। मुनिश्री ने गांवों की दशा का सही चित्रण किया है। अणुव्रत का लक्ष्य है समाज व देश सुधार एवं भ्रष्टाचार को दूर करने का। हाल ही में अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान शुरू किया है। अतः जितनी भी नैतिक एवं धार्मिक शक्तियां हैं उन्हें एकजुट होकर देश में व्याप्त भ्रष्टचार को मिटाने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

***-- चन्दनमल चिंडालिया, अहमदाबाद-गुजरात***

# स्वतंत्रता दिवस और हमारा दायित्व

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'

15 अगस्त 1947 भारतीय इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित है। लम्बी दासता के बाद अनगिनत क्रान्तिकारियों के त्याग और बलिदान से स्वतंत्रता के विमान ने भारत भूमि पर दस्तक दी थी। एक तरफ जहां चन्द्रशेखर आजाद, असफाक उल्लाखां, वीर कुंवर सिंह, भगतसिंह आदि हंसते-हसंते आजादी के परवाने हो गये तो दूसरी तरफ गोपालकृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय आदि ने अदम्य जीवटता के साथ अंग्रेजों से लोहा लिया था। ''आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।'' हम इसे लेकर रहेंगे। तिलक के ये शब्द अंग्रेजों को चुनौती देते थे। साईमन कमीशन के बहिष्कार के समय लाला लाजपतराय पर अंग्रेजों के जुल्मों-सितम व लाठीचार्ज के बाद भी उनके स्वर मुखरित हुए। मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी की चोट ब्रिटिश साम्राज्य के लिए कील साबित होगी। कितना अदम्य उत्साह था, कितनी जीवटता थी और मातृभूमि के प्रति कितना प्रेम था कि मरते समय भी वे ब्रिटिश साम्राज्य के पतन की बात सोच रहे थे। गोखले ने तो लम्बे समय तक आजादी के संग्राम के नेतृत्व के लिए महात्मा गांधी के रूप में एक सुयोग्य शिष्य दिया। जिन्होंने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि के माध्यम से अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। गांधीजी ने पूरे विश्व को दिखा दिया कि अहिंसा की ताकत क्या होती है। लॉर्ड माउण्ट बेटन ने स्वयं अहिंसा शक्ति की तारीफ करते हुए कहा था कि हमारे 50 हजार हथियारों से युक्त सिपाही एक तरफ और गांधी की अहिंसा एक तरफ, अन्ततः गांधी के अहिंसा की जीत हुई।

हम आजाद हो गये हमारे क्रान्तिकारियों ने आजाद भारत के लिए जो सुनहरा स्वप्न देखा था क्या वह स्वप्न साकार हुआ है? यह एक अहम प्रश्न है। क्या क्रान्ति पुरोधाओं ने भ्रष्ट आजाद भारत की कल्पना की थी? क्या असुरक्षित महिलाओं वाले भारत की इच्छा की थी? क्या मौत को गले लगा रहे किसानों वाले भारत की कल्पना की थी? क्या हिंसक आक्रोश को व्यक्त करने वाले लोगों के देश की कल्पना की थी? शायद नहीं। गांधीजी ने तो अपने असहयोग आन्दोलन के चौरी-चोरा काण्ड के कारण हिंसक होने से इसलिए वापिस ले लिया था कि हमें हिंसा के द्वारा प्राप्त आजादी नहीं चाहिए। यदि राष्ट्रपिता बापू ने देश की आजादी के लिए अपने सफलतम आन्दोलन में हिंसा को स्थान नहीं दिया तो स्वतंत्र भारत में हिंसा क्यों? क्या आज के सत्ताधीश स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास से अनभिज्ञ हैं? क्या बापू की इच्छा का आदर करने का दायित्व उनका नहीं है। देश सेवा की शपथ लेने वाले ये नेता भ्रष्टाचार को क्यों बढ़ावा देते हैं? क्यों हमारे नेता ए. राजा एवं दयानिधि मारन बनते हैं? क्या गांधीजी ने आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर इसलिए किया था कि हम भ्रष्टतम दस देशों में अपना स्थान सुरक्षित करायें। हर 15 अगस्त को हम तिरंगा झण्डा फहराते हैं, क्रान्तिकारियों को याद करते हैं, लम्बे-चौड़े भाषण दे देते हैं, और स्वतंत्रता दिवस को मनाने की औपचारिकता पूरी कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। क्या यही हमारा कर्त्तव्य है? क्या आजाद देश के नागरिकों का यही दायित्व है? क्यों नहीं अपने पूर्वजों से सबक लेकर हम अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हैं? यदि भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि की तरह अपनी कुर्बानी नहीं दे सकते और गांधी की तरह सर्वस्व त्यागकर राष्ट्रहित का कार्य नहीं कर सकते किन्तु लाल बहादुर शास्त्री की तरह अपने परिवार के भरण-पोषण के साथ निष्ठा और ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का तो निर्वाह कर सकते हैं। प्रत्येक पन्द्रह अगस्त को हमें कुछ संकल्प के साथ अपने दायित्व निर्वहन करने होंगे।

प्रत्येक भारतवासी को भारतीय कहलाने में गर्व की अनुभूति होनी चाहिए किन्तु दुर्भाग्य से प्रान्त, जिले, तहसील, गांव और परिवार तक अपने आपको भी सीमित कर हम विकृत मानसिकता का परिचय देते हैं। हमें यह सोचना चाहिए कि यदि भारतमाता नहीं रहेगी तो कौन-सा प्रान्त, जिला परिवार का अस्तित्व रह पायेगा। असली आजादी तो उस दिन होगी जब देश का प्रत्येक नागरिक धर्म, वर्ग, नस्ल, एवं जाति के चक्कर से ऊपर उठकर अपने नाम के साथ उपनाम भारतीय लगायेगा। कुटिल राजनीतिज्ञ वोटों के लिए धर्म, जाति, सम्प्रदाय में बांटकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं। ऐसे नेताओं का सामूहिक बहिष्कार जनता द्वारा किया जाना चाहिए जो देशवासियों को भारतीयता से अलग करते हों। अतः हम पहले भारतीय हैं फिर और कुछ हैं, यह अहसास हमें होना चाहिए और यही हमारा प्रमुख दायित्व है।

आचार्य तुलसी ने स्वतंत्र भारत में नैतिक आदमी की कल्पना की थी। उनका

मानना था कि आजाद भारत चाहे कितना भी समृद्ध क्यों न हो जाये यदि नैतिकता नहीं होगी तो गुलामी को रोका नहीं जा सकता। जब-जब भारतवासी आम्भी, जयचन्द, मीरजाफर बनते रहेंगे तब-तब गुलामी को रोका नहीं जा सकता। अच्छे और नैतिक आदमी के लिए उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का शंखनाद 1949 में किया था। उनका मानना था कि असली आजादी तभी सम्भव होगी जब देश के लोग नैतिक होंगे। उन्होंने यह भी कहा था कि मुझे "जैन" नहीं "मैन" चाहिए। एक जैनाचार्य यदि अच्छे आदमी की बात करता है तो इसका मतलब उसके लिए देशहित सर्वोपरि है। "संयममय जीवन" और "सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।" आचार्य तुलसी के इन उद्घोषों को सत्ताधीश राष्ट्र का सूत्र वाक्य बना और तदनुरूप यदि कार्यक्रम बनाकर क्रियान्विति करते तो शायद आज देश भ्रष्टतम दस देशों में न होकर अच्छे दस राष्ट्रों में गिना जाता। अतः प्रत्येक व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह अच्छा आदमी बनकर राष्ट्र की सेवा करे। अन्ना हजारे के रूप में आज भी हमारे आदर्श हैं, जिनकी एक आवाज पर दिल्ली के जन्तर-मन्तर में लाखों की भीड़ जुट जाती है। सिविल सोसायटी के लोगों ने देश को जगाने का एक छोटा-सा प्रयत्न किया है। जनलोकपाल बिल के माध्यम से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने की एक जीवन्त कल्पना की है। किन्तु भ्रष्ट नेता इस बिल को अपने लिए अभिषाप समझकर इसे किसी भी हालत में बनने देना नहीं चाहते। वे जन समर्थन के दवाब में लोकपाल बिल चाहते हैं किन्तु ऐसा बिल चाहते हैं ताकि वे पाप भी कर सकें और उनका कोई बाल भी बांका न कर सके। अतः भारतवासियों का यह भी दायित्व है कि अन्ना हजारे को जन समर्थन देकर जन लोकपाल बिल को पास करायें और इन भ्रष्ट नेताओं पर अंकुश लगाने में अपना योगदान दें।

देशका प्रत्येक व्यक्ति अच्छाई चाहता है, कोई भी बुराई नहीं चाहता। किन्तु विडम्बना यह है कि अच्छाई दूसरों के लिए चाहते हैं। जब स्वयं अच्छा बनने की बात आती है तो पीछे रह जाते हैं। हम यह तो चाहते हैं कि लोग सत्य बोलें, अहिंसा के मार्ग पर चलें किन्तु जब बात अपने लिए आती है, तो पीछे हट जाते हैं, यही प्रत्येक समस्या का कारण हैं। अतः हमारा दायित्व है कि हम हर अच्छी बात अपने और अपने घर से शुरू करें। संभवतः ऐसा करने में कोई बाधा नहीं है, यह हमारे अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत है। धीरे-धीरे हमारे कदम आगे बढ़ सकेंगे। पुनः आचार्य तुलसी याद आते हैं, जिन्होंने यह कहा था कि "हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा।" अतः हम अपने सुधरने की बात सोचें तो धीरे-धीरे युग में बदलाव आयेगा। दूसरा हमारा कर्त्तव्य यह भी है कि जिसे हम अपने लिए बुरा समझते हैं वह दूसरों के लिए न करें। "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्। अर्थात् जिसे हम अपने लिए प्रतिकूल समझते हैं वह दूसरों के लिए बिल्कुल न करें।

अस्तु स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए जहां तिरंगा झण्डा फहरायें, क्रान्तिकारियों को याद करें और यह संकल्प भी लें कि हम भारतीय हैं, भारतीय रहेंगे और अपने आचार व्यवहार से देश का मान-सम्मान बढायेंगे। एक सभ्य नागरिक एवं सुसंस्कृत देश भक्त के रूप में स्वयं जीवन-यापन करेंगे और दूसरों को भी ऐसा ही जीवन यापन के लिए प्रेरित करते रहेंगे। पारदर्शिता और जवाबदेही हमारे जीवन का आधार बने। बस इसी संकल्प की क्रियान्विति के साथ हम स्वतंत्रता दिवस का स्वागत करें।

***निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय***
***जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय***
***लाडनूं (राजस्थान)***

# फहरा तिरंगा है

मनायें जश्न हम मिलकर, आज फहरा तिरंगा है।
सजा आज़ादी के सिर पर, सदा सेहरा तिरंगा है।।

यहां आये विदेशी भी, जिन्हें अपना लिया हमने।
दिलों पर छा गया उनके, अजी गहरा तिरंगा है।।

ये भौतिकवाद, फैशन का घुला है जहर मौसम में।
रहा वंदन में वन्दे मातरम्, चेहरा तिरंगा है।।

आज बारूद के ढेर पर जा बैठी है यह दुनिया।
अमन की राह पर फिर भी, अडिग ठहरा तिरंगा है।।

रहे हावी यहां हर वक्त, घुसपेंठ और आतंकी।
मगर सीमा पर चौकस, हर घड़ी पहरा तिरंगा है।।

हे माता भारती! कुर्बान तुम पर, लाल हम तेरे।
'अनोखा' आस्मां ऊंचा, लहर लहरा तिरंगा है।।

● **फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'**
***जाट गली, कांकरोली-313324***
***जिला- राजमसंद (राजस्थान)***

# बच्चों में घटता लिंगानुपात

**डॉ. विनोद गुप्ता**

केन्द्र और राज्य सरकारें देश में बच्चियों के पक्ष में लाख नगाडे बजाए, पर भारतीय समाज के कान पर जूं तक रेंगती नजर नहीं आ रही है। हाल ही में जारी जनगणना 2011 के प्रारंभिक आंकड़े इस सच को उजागर करते हैं। एक दशक पहले की जनगणना में भी घटते लिंगानुपात पर समाज के चिंतकों ने जगह-जगह आंसू बहाए थे और इसमें सुधार का वायदा किया था। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि यह अनुपात इस बार और घट गया। आखिर शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद बेटियों के प्रति नफरत क्यों बढ़ रही है? क्यों उनकी भ्रूण हत्या हो रही है?

जहां तक देश की कुल जनसंख्या का प्रश्न है, वह एक अरब 21 करोड़ हो गई है। जिसमें 62 करोड़ 37 लाख पुरुष तथा 58 करोड़ 65 लाख महिलाएं हैं। यद्यपि पिछले 10 वर्षों में भारत का कुल लिंगानुपात 933 से बढ़कर 940 हो गया है, लेकिन बच्चों का लिंगानुपात 927 से घटकर 914 हो गया है। यह अनुपात आजाद भारत का सबसे निचला स्तर है।

देश के 27 राज्यों और केन्द्र-शासित प्रदेशों में बच्चों के लिंगानुपात में वर्ष 2001 की अपेक्षा गिरावट दर्ज की गई। छह साल तक के प्रति 1000 बच्चों में सबसे कम अनुपात हरियाणा में 830 तथा पंजाब में 846 दर्ज किया गया।

यदि महानगरों की बात करें तो कोलकाता की आबादी में छह साल तक के बच्चों की संख्या में गिरावट दर्ज की गई। 2001 की जनसंख्या में लड़कियों की संख्या जहां प्रति एक हजार लड़कों पर 960 थी वह 2011 में घटकर 950 रह गई। मुंबई में भी बेटों की चाहत कम नहीं हुई है। मुंबई जैसे आधुनिक सोच वाले महानगर में लिंगानुपात 837 है।

कन्या भ्रूण हत्या के कारण देश के कुछ हिस्सों में लिंगानुपात गिरकर 800 से भी कम रह गया है। आंकड़े बताते हैं कि 20वीं सदी की शुरुआत से ही लिंगानुपात लड़कों के पक्ष में बढ़ रहा है। शिक्षित महिलाओं में कन्या भ्रूणहत्या का पाया जाना इस मिथक को तोड़ता है कि केवल शिक्षा के प्रसार तथा महिला जागरूकता से लिंगभेद समाप्त किया जा सकता है। गांव में अशिक्षा के बावजूद बेटियां सुरक्षित हैं, जबकि शहरों में उनके प्रति नफरत बढ़ रही है।

विश्व में पहली बार 1970 के दशक के अंत में गर्भ में लिंग परीक्षण तकनीक का विकास हुआ था। तभी से गर्भ परीक्षण के बाद गर्भपात कराने का सिलसिला चल रहा है। भारत में कन्या भ्रूण हत्या की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। भारत के मुंह पर यह तमाचा है कि देश में अब भी रोजाना 2000 कन्या भ्रूणहत्याएं हो रही हैं। सरकार ने स्वीकारा है कि सन् 2001-2005 के दौरान रोजाना करीब 18 से 19 सौ कन्या भ्रूणहत्याएं हुईं। वर्तमान में अनुमान लगाया जा रहा है कि प्रतिदिन लगभग 2000 कन्या भ्रूण हत्याएं हो रही हैं।

कन्या भ्रूणहत्या के कारण हर साल 35 से 40 लाख लड़कियों की कमी हो रही है। अल्ट्रासाउंड स्कैनिंग, अमीनो सेन्टेसिस तथा विट्रो फर्टिलाइजेशन द्वारा गर्भावस्था के दौरान लिंग पहचान की तकनीक ने इस स्थिति को और बदतर बना दिया है।

उल्लेखनीय है कि 1995 में बने जन्म पूर्व नैदानिक अधिनियम प्री नेटल डॉयग्नास्टिक एक्ट-1995 के मुताबिक बच्चे का लिंग पता लगाना गैर कानूनी है जबकि इसका उल्लंघन सबसे अधिक होता है।

दुनिया के सबसे खराब लिंगानुपात वाले देशों में भारत का नाम शामिल है जो कि महिला अधिकारों के प्रति उल्लंघन के लिए भी जाना जाता है। शासन की परस्पर विरोधी विभिन्न नीतियां और महिला अधिकारों के प्रति अज्ञानता कन्या भ्रूण हत्या के लिए काफी हद तक जिम्मेदार हैं।

आज भी लोगों में यह पुरातन धारणा जिंदा है कि लड़का वंश चलाता है और लड़कियां पराया धन हैं। न केवल गरीब परिवारों में बल्कि संपन्न परिवारों में भी वंश चलाने के लिए लड़के की चाह में लड़कियों की भ्रूणहत्या की जा रही है।

भारत में लिंग परीक्षण की सुविधा का दुरुपयोग हो रहा है। एमिनो सेन्टेसिस नामक इस विधि में थैलीनुमा झिल्ली से जिसमें उदरस्थ शिशु तैरता रहता है, उपकरण की सहायता से तरल पदार्थ निकाला जाता है। इस तरल पदार्थ में अविकसित शिशु से आई सजीव कोशिकाएं होती हैं। इन कोशिकाओं पर विभिन्न परीक्षण किये जाते हैं। इनमें क्रोमोसोम परीक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। चूंकि इस पद्धति से लिंग भी ज्ञात किया जा सकता है, अतः इस पद्धति ने लोगों को अपने इस गुण के कारण अधिक आकर्षित किया है। समाज की इस कमजोरी का लाभ तथाकथित धनलोभी चिकित्सकों ने उठाया है। अनेक निजी चिकित्सालय यह सेवा उपलब्ध कराने में लगे हैं। ऊंची फीस लेकर लिंग पहचाने जाते हैं। डॉक्टर गर्भधारण के 15वें या 16वें सप्ताह में परीक्षण करके लिंग ज्ञात करता है। स्पष्ट है, यहां वहीं स्त्रियां जाती हैं जिन्हें पुत्र की आकांक्षा होती है।

कानून तो एक अंधा औजार है, जिससे बच सकने की हजारों तरकीबें हैं। चिकित्सक अपनी रिपोर्ट में केवल भ्रूण की स्थिति व स्वास्थ्य का उल्लेख रिपोर्ट लेने-देने में चिकित्सक और दम्पत्ति दोनों ही विश्वास नहीं करते। भारतीय कानून के तहत 20वें सप्ताह तक गर्भपात वैध होता है और अल्ट्रा साउण्ड तकनीक से बच्चे का लिंग परीक्षण गर्भकाल के 16वें सप्ताह में संभव है, अतएव गर्भपात के लिए दम्पत्ति को एक माह का समय आसानी से मिल जाता है।

महिलाओं की कम संख्या के संकट से जूझ रहे इस देश में बेटियों का एक नया कातिल कहर ढा रहा है। मेडिकल की दुनिया में इस कातिल को भले ही बेबी जेंडर-मेंटर किट का नाम दिया गया हो, लेकिन सुदूरवर्ती गांवों में यह कातिल जंतर-मंतर किट के नाम से मशहूर है। पंजाब में इसकी लोकप्रियता सर्वाधिक है। कुछ दिनों पूर्व ही चेनल-7 ने इस धंधे का भंडाफोड किया था। यह एक ऐसा उपकरण है जिसके माध्यम से केवल पांच हफ्ते की गर्भवती महिला के रक्त के नमूने के परीक्षण से यह पता लगाया जा सकता है कि गर्भ में पल रहा भ्रूण लड़का है या लड़की। खास बात यह है कि यह परीक्षण सात समंदर पार अमेरिका में किया जाता है। इसका नतीजा सिर्फ 48 घंटों के भीतर हासिल किया जा सकता है। इस किट के संबंध में यह दावा किया जाता है कि इसका परीक्षण मरीजों की कसौटी पर 99.9 प्रतिशत खरा उतरा है।

देश में सैकड़ों अल्ट्रासाउंड क्लिनिक बिना रजिस्ट्रेशन के चल रहे हैं। यहां तक कि देश की राजधानी दिल्ली में भी ऐसे क्लिनिकों की संख्या कम नहीं है। यद्यपि अवैध रूप से भ्रूण हत्या करने वाले लोगों, डॉक्टरों व अल्ट्रासाउंड करने वाले डॉक्टरों को दंड देने का प्रावधान है लेकिन कितने लोगों को दंड मिलता है?

कन्या भ्रूणहत्या के लिए पुत्र की चाहत के अलावा भी बहुत से कारण हैं। कन्याओं को बोझ या पराया धन मानना, बढ़ती दहेज प्रथा, धार्मिक व सामाजिक कुरीतियां, घर-परिवार का दबाव आदि भी कम जिम्मेदार नहीं है। कहते हैं कि कन्या के पिता का सिर जिंदगी भर झुका रहता है और सिर झुकाना पुरुष अहम को आहत करता है। कौन पिता लड़की होने पर अपने आपको अपमानित महसूस करना चाहेगा? महिलाओं में बेटे को जन्म न दे पाने पर अपने आपको अधूरा मानने की मानसिकता भी कम दोषी नहीं है।

कन्या भ्रूणहत्या के दुष्परिणाम सामने दिखाई दे रहे हैं। जब जननी ही नहीं होगी तो पुरुष को कौन पैदा करेगा? स्त्री-पुरुष के लैंगिक अनुपात में असंतुलन की वजह से लड़कों को शादी के लिए लड़कियां नहीं मिल पा रही हैं। भविष्य में तो अधिकांश लड़कों को कुंआरा ही रहना पड़ेगा। कन्या भ्रूण हत्या से सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है।

**कन्या भ्रूणहत्या के लिए पुत्र की चाहत के अलावा भी बहुत से कारण हैं। कन्याओं को बोझ या पराया धन मानना, बढ़ती दहेज प्रथा, धार्मिक व सामाजिक कुरीतियां, घर परिवार का दबाव आदि भी कम जिम्मेदार नहीं है। कहते हैं कि कन्या के पिता का सिर जिंदगी भर झुका रहता है और सिर झुकाना पुरुष अहम को आहत करता है। कौन पिता लड़की होने पर अपने आपको अपमानित महसूस करना चाहेगा? महिलाओं में भी बेटे को जन्म न दे पाने पर अपने आपको अधूरा मानने की मानसिकता भी कम दोषी नहीं है।**

जनगणना 2011 के प्रारंभिक आंकड़ों में देश के जिन राज्यों में स्त्री-पुरुष घटा है, उन पर केन्द्र सरकार नकेल कसने की तैयारी कर रही है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक ऐसे 17 राज्य चुने गए हैं, जहां लिंगानुपात बेहद चिंताजनक है। इन राज्यों को लिंगानुपात में खराब प्रदर्शन करने वाले जिलों और ब्लॉक की पहचान करने को कहा जाएगा।

सूत्रों का कहना है कि एक बार राज्य के जिले और ब्लॉक की निशानदेही हो जाने पर वहां पर निगरानी शुरू की जाएगी। इन स्थानों में स्थित स्थानीय नर्सिंग होम और निजी अल्ट्रासाउंड केन्द्रों में गैर कानूनी लिंग परीक्षण करने वाले लोगों की धर-पकड़ के लिए ज्यादा से ज्यादा डॉक्टरों और मेडिकल टीम भेजी जाएगी। इस संबंध में स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक बैठक भी बुलाई है। मामले से जुड़े एक अन्य वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि राज्यों को लिंग जांच जैसे अपराध रोकने के लिए कई अन्य निर्देश भी दिए जाएंगे। मसलन राज्यों में हर एक अल्ट्रासाउंड मशीन का पंजीकरण कर खरीदने वाले पर निगरानी रखी जाए। नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों के लिए तीन साल की कडी सजा और पचास हजार रुपए के जुर्माने का भी प्रावधान करने को कहा जाएगा। बैठक में राज्यों से आए प्रतिनिधियों को यह भी दबाव बनाया जाएगा कि वे अपने यहां सभी नर्सिंग होम और निजी अल्ट्रासाउंड केन्द्रों में फॉर्म-एफ भरवाने का चलन सख्ती से शुरू करें। पीएनडीटी एकट के मुताबिक सोनोग्राफी कराने से पहले मरीज और रेडियोलॉजिस्ट को फॉर्म-एफ भरना जरूरी है। इसमें मरीज के नाम के अलावा सोनोग्राफी करने की वजह और डॉक्टर का ब्यौरा भी मांगा जाता है।

***43/2 सुदामा नगर, रामटेकरी,***
***मंदसौर (म.प्र.) 458001***

# भारतीय जनपदों का विकास-काल

डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

भारतीय, वैदिक किंवा आर्य समाज का विकास भारत वर्ष अथवा आर्यवर्त में शनैः शनैः ही हुआ है। क्योंकि ऋग्वेद में हम केवल जन की ही स्थिति पाते हैं। जन अभी कुलों या कबीले बनने की प्रक्रिया में थे। फिर पशुचारी अथवा वनचारी होने के कारण अभिजन से जनपद की स्थिति के बीच में ही लटके हुए थे। जन-राज्य तो उनके अभी बने ही नहीं थे। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल अपनी पुस्तक 'पाणिनी-कालीन भारत' में ऐसा ही मानते हैं। वैसे भी वैदिक संहिताओं में जनपदवाची नामों अथवा संज्ञाओं का सर्वथा अभाव ही है। शतपथ ब्राह्मण में अवश्य ही एक बार इस शब्द-संज्ञा का उपयोग हुआ है--अथ यत् किंच जनपदे कृतानं, सर्ववः तत् सुलभ।

यदि ब्राह्मणग्रन्थों का रचनाकाल वैदिक संहिताओं के ठीक बाद सातवीं-आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व माना जाये--जैसा कि अधिकांश वैदिक विद्वान और इतिहासकार मानते भी हैं; तो जनपदों के बनने का समय भी यही है। एतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में उत्तर कुरू और उत्तरमद्र जैसे जनपदों का उल्लेख हमें मिलता है--"एतस्यामुदीच्यां दिशि ये के च परेण हिमवन्तं जनपदा उत्तरकुरू उत्तरमद्रा इति वैराज्य एवं तेऽभिषिच्यन्ते" (ऐतरेय ब्राह्मण 8/14) यहाँ पर स्पष्ट रूप से उत्तर कुरू और उत्तरमद्र जैसे जनपदों की अवस्थिति उत्तरदिशा के हिमाच्छादित पर्वतीय प्रदेशों या फिर शीतल रेगिस्तानों में ही बताई गई है। तभी तो हरिदत्त वेदालंकार जैसे इतिहासकारों ने रूस के साइबेरिया को यदि उत्तर कुरू कहा है तो ऐसा होना असंभव नहीं है। क्योंकि महाभारत में भी उत्तर कुरू प्रदेश अथवा जनपद की स्थिति--'हिमवन्ते परतं परः' लिखित है।

अतएव उत्तरकुरू जनपद की स्थिति

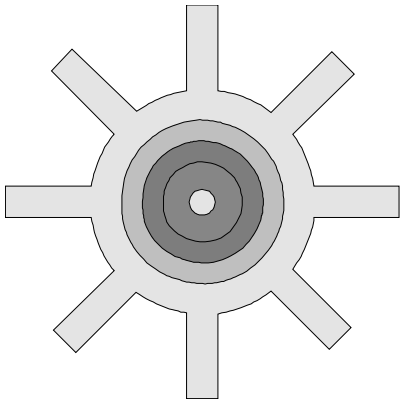

हिमवन्त अर्थात् हिमालय को पार करके उसके सुदूर उत्तर में ही होनी चाहिए। वैसे भी वहाँ पर वैराज्य अथवा अराजक जैसी स्थिति का उल्लेख भी उनकी पिछड़ी हुई राजनीतिक दशा का ही बोध कराता है। अथवा वैराज्य का अर्थ राजविहीन जनतांत्रिक शासन-पद्धति की ओर भी संकेत हो सकता है। क्योंकि प्रायः वैदिक आर्य पुरोहित गणतांत्रिक शासन-प्रणाली के पूर्णतः पक्षधर नहीं थे। उत्तरमद्र जनपद की स्थिति चिनाव से झेलम (वितस्ता) के मध्य स्थित भूभाग में थी। पूर्व मद्र की स्थिति यदि रावी (लाहौर सैक्टर) से लेकर चन्द्रभागा (चिनाव) नदी के मध्यवर्ती प्रदेश में थी; तो उत्तरमद्र राज्य निश्चित ही उससे आगे पश्चिमोत्तर दिशा में ही होना चाहिए और स्यालकोट अथवा शाकल नगरी समेकित पूर्व मद्र राज्य की राजधानी थी ही।

इस प्रकार से जैमिनीय, तैत्तिरीय, गोपथ और सामविधान जैसे ब्राह्मण ग्रन्थों में केवल एक ही बार जनपद शब्द संज्ञा के उल्लेख के कारण हम इस काल को जनपदों की आरंभिक स्थिति ही मान सकते हैं। क्योंकि सातवीं-आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में पहले 1000 ईस्वी पूर्व तक पूर्णतया रचित वैदिक ऋचाओं में तो जनपदों का नाम तक भी नहीं था। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल एक हजार ईसा पूर्व से लेकर पाँच सौ ईसा पूर्व के समय को भारत वर्ष में जनपदों किंवा महाजनपदों के विकास का ही काल मानते हैं। उनके मतानुसार इस काल में आर्यवर्त के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जनपदों का जाल-सा ही फैल गया था। वैसे भी जनपद तत्कालीन जनजीवन के राजनैतिक और सांस्कृतिक तथा आर्थिक जीवन की अनिवार्य इकाई बन गये थे। क्योंकि जहाँ-जहाँ पर भी जनपदीय जीवन संगठित रूप में उभर रहा था, वहीं पर शान्ति, सुव्यवस्था और नीति धर्म की स्थापना हो गई और वहीं-वहीं पुण्य प्रदेश अराजकता किंवा वैराज्यता की स्थिति से ऊपर उठ गये थे; जिस समय नये-नये जनपदों का उन्मेष उत्तर-भारत (उदीच्य) की पावन धरा पर हो रहा था, तभी जनतांत्रिक आदर्श भी लोगों के आचरण में बस गये थे। क्योंकि जनतन्त्र कोरी राजनीतिक प्रणाली ही नहीं अपितु सह-अस्तित्व और स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने की एक कला भी है। जनपदों का भौगोलिक विस्तार उस काल में जहाँ-जहाँ भी था, वही पुनीत धरा पृथ्वी कही जाती थी और उसी के प्रति पावन अनुराग वैदिक ऋषियों किंवा कवियों के मन में उपजा था। तभी तो उन्होंने उत्तरवैदिक काल में रचित अथर्ववेद में 'माता भूमि पुत्रेंऽहं पृथिव्याः' का उदघोष किया था।

उत्तरवैदिक काल में भारत भूमि प्रत्येक जनपद की साझी विरासत थी, क्योंकि वही जनपदों के लिए जननी के समान थी; अतः वही उनकी धात्री धरा थी। जनपद स्वयं में एक राजनीतिक संगठन के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक संगठन भी थे। क्योंकि उनमें सनाभ और सहजात जनों का समवाय

होने से भावों और भाषाओं की समानता भी मौजूद थी तथा धार्मिक मान्यताएं भी लगभग समान ही थीं। फिर भी समानता पर बहुत ज्यादा जोर उस समय नहीं दिया जाता था क्योंकि धार्मिक विश्वास व्यक्तिगत जीवन से सम्बद्ध था। अथर्ववेद में राष्ट्र किंवा राज्य को 'धर्माणं नाना बहुधा विवाचसम्' होते हुए भी 'जनविभ्रति पृथ्वी यथाकसम्' कहा है। अर्थात् अलग-अलग विश्वासों और भाषाओं के रहते हुए भी जनपदीय राष्ट्र एक परिवार के समान ही थे।

500 ईसा पूर्व से लेकर लगभग पाँचवी शताब्दी का कालखण्ड भारतीय समाज में सामन्तकाल का है। अतएव इस काल में कुमुदनी सदृश सरस ये जनपद, सम्राट रूपी मदमस्त गजराजों के द्वारा निर्दलित कर दिए गये थे। भले ही उनकी राजनीतिक सत्ता अवसान को प्राप्त हो गई थी, तथापि उनकी सामाजिक सत्ता उत्तर-भारत के ग्रामीण समाज में आज भी गणगोत्रों और खास-पंचायतों के रूप में जीवन्त देखी जा सकती है। मौर्य साम्राज्य की शिथिलता (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) से लेकर शुंग-कुषाणों से लेकर गुप्तकाल का पूर्व भाग लगभग चौथी शताब्दी तक का समय, इन जनपदों किवां गणराज्यों के फलने-फूलने के लिए स्वर्णिम काल था। क्योंकि इस कालखण्ड के पश्चात हम उत्तर भारत के इन जनपदों की राजनैतिक स्थिति भारतीय इतिहास के क्षितिज पर नहीं पाते। योधेय जैसे शक्तिशाली और विशाल गण-संघ भी इसी क्रूर काल के पश्चात साम्राज्य रूपी सागर में समा गये।

प्राचीन किंवा उत्तरवैदिक काल या फिर पाणिनी के समय में जो जनपदीय सीमा विस्तार था, वह भी पर्याप्त विस्तृत था। क्योंकि तब मध्य एशिया के प्रकण्व (फरगाना) से और कम्बोज तथा बाल्हीक (बैक्ट्रिया) से लेकर सुदूर दक्षिण में गोदावरी नदी तट पर स्थित अश्मक जनपद का उल्लेख यदि हमें मिलता है, तो धुर पश्चिम में सिन्धु-सौवीर और कच्छ जैसे जनपदों का नाम भी मिलता है। इसी प्रकार से पूर्वी भारत में अंग (उडीसा) से लेकर बंग (बंगाल) और असम या कामरूप के पर्वतीय सूरमश की जानकारी हमें पुरालेखों से मिल रही है। ऐसे लगभग पौने दो सौ गणों की चर्चा पाणिनी ने अष्टाध्यायी के सूत्रों में की है।

पुराण प्रोक्त भुवनकोश प्रकार में भारतभूमि के सप्त विभाग किये गये हैं--1. मध्य, 2. प्राच्य (पूर्व) 3. उदीच्य (उत्तर), 4. दक्षिणापथ, 5. अपरान्त (पश्चिम-दक्षिण-गुजरात-महाराष्ट्रादि), 6. विन्ध्यपृष्ठ (पश्चिम-दक्षिण भारत), 7. पर्वतीय। इस प्रकार से पुराण ग्रन्थ पर्याप्त प्राचीन न होकर अर्वाचीन ही हैं; क्योंकि पौराणिक पण्डित भारत के साम्राज्यकालीन भूभाग से पूर्णतः परिचित प्रतीत होते हैं। जबकि पाणिनी मुनि ने उदीच्य (उत्तर) और प्राच्य (पूर्वी) भारत की ही चर्चा अपनी अष्टाध्यायी में बारम्बार की है। उनके द्वारा वर्णित जनपदों किंवा गणराज्यों में यदि प्रकण्व और बाल्हीक वैदेशिक गणराज्य थे, तो कपिशा और कम्बोज आर्यवर्त की सीमाओं से ही संलग्न थे। ये सभी जनपद उनके अनुसार उदीच्य भारत के ही भूभाग थे। इनके साथ मद्र और उशीनर (झंग-मधियाना) जैसे जनपद भी औदिच्य ही थे। भरत जनपद जोकि सरस्वती के तटबन्धों पर आबाद था (वर्तमान हरियाणा कुरूक्षेत्र और हिसार तथा सिरसा जैसे जिलों में) वही तत्कालीन उदीच्य और प्राच्य भारत का विभाजक बिन्दु था।

अतएव कुरू-पांचाल तथा कपिशा और कौशल तथा अजाद या अजाट (जाट) जैसे जनपद ही तत्कालीन मध्यदेश के भाग थे। उनसे पूर्व में मग्ध और विदेह तथा बंग और अंग जनपद थे तो सुदूर पूर्व में शूकमस का पर्वतीय प्रदेश था जोकि अब आसाम का हिस्सा है। सुदूर दक्षिण में अवन्ति और अश्मक जैसे जनपदों की जानकारी पाणिनी मुनि को थी। तो पश्चिमी भारत में शाल्व (बीकानेर-नागौर) सर्वसेन (बाडमेर-जैसलमेर) और मत्स्य (अलवर-जयपुर) और सिन्धु (मुल्तान) तथा सौबीर और शिवि (ब्लूचिस्तान) जैसे पश्चिमी प्रदेशों की जानकारी भी उन्हें थी। उशीनर और शिवि जनपद परस्पर में मिल गये थे; अतएव कालान्तर में उशीनरों का शिवियों किंवा शिथियन- शकों में ही विलय हो गया था। यही लोग आजकल शिरवी कहलाते हैं।

विन्ध्यपृष्ठ अथवा विध्यांचल की पीठ के पीछे केवल अवन्ति या उज्जैन जनपद ही तब तक विकसित हो पाया था। बल्कि महाभारत में जोकि पाणिनी मुनि के समय से लेकर गुप्तकाल (पाँचवी) शताब्दी तक रची जाती रही है; उसमें तो चेदि (खजुराहो) और कुन्ति कौंतवार (ग्वालियर) तथा सुराराष्ट्र (सौराष्ट्र-काठियावाड) तक के जनपदों का उल्लेख है। यही नहीं, वर्तमान गुजरात की कुशावती किंवा द्वारावती (द्वारिका) में अवस्थित सात्वतों किवां वृष्णियों और अन्धकों के वृष्णि-अन्धक संघ का उल्लेख यदि महाभारत में है, तो वह अष्टाध्यायी में भी है। ठाकुर देशराज सिंह जैसे इतिहासकारों ने वृष्णियों और अन्धक यादवों के ज्ञाति नामक गण-संघ से ही वर्तमान की जाट जाति की उत्पति मानी है। यह हम उनके द्वारा लिखित जाट-इतिहास में भलीभांति देख सकते हैं। यह सब बहुत असंभव नहीं है, अज्ञात भले ही हो।

पर्वतीय प्रदेशों किवां जनपदों में हिमाचल के कुल्लू-कांगड़ा से लेकर देहरादून-गढवाल और कुँमायुँ (कूर्मांचल) (कूर्म पुराण) का क्षेत्र पाणिनीकाल (पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व) में त्रिगर्त (कांगडा-ऊना) गब्दिका (लाहौल-स्फीति और लद्दाख (ललाट) तक फैले हुए थे, तो युगन्धर और कालकूट तथा भारद्वाज के जनपद भी पर्वत प्रदेशीय ही थे; जोकि पूर्वोत्तर भारत में विस्तृत थे। पर्वतीय प्रदेशों का ऐसा ही शिराजाल उत्तरी पश्चिमी भारतीय भूभाग (तत्कालीन) के सिन्धु सरिता (नद) से लेकर बाल्हीक (बैक्ट्रिया) कपिशा (चारसद्दा) और कम्बोज (हजारा प्रान्त अफगानिस्तान) तक फैला हुआ था। जिसके अन्तर्गत अभिसार, उरशा, दार्व (राजौरी-पुंछ) बाल्हीक (बैक्ट्रिया-बदख्शा) कपिश (पुष्कलावती) मुञ्जायन (त्येनशान पर्वत) लेम्बाक और हारहूर

तथा आप्रीटितिया अफरीदी जैसे कितने ही उप-जनपदों का उल्लेख पाणिनी मुनि ने अष्टाध्यायी में किया है।

**जनपदों के युगल या जोड़ेः**

पाणिनी मुनि की अष्टाध्यायी के आधार पर तत्कालीन भारतीय भूगोल का अध्ययन करने में तब हमें और अधिक सुविधा होती है, जब कि वे जनपदों अथवा गणों के युगल नामों का उल्लेख सूत्रों में करते हैं। क्योंकि इससे उन निकटवर्ती जनपदों की भौगोलिक सीमा और अवस्थिति आसानी से समझ में आ जाती है। यह कहना नहीं होगा कि सहचर्य-सम्बन्ध से भी हम स्थानों अथवा वस्तुओं के बारे में अनायास ज्ञान प्राप्त करते हैं। ऐसे ही पाणिनी ने अपने सूत्रों में अवन्तयकाः कुन्तिसुराष्ट्राः चिन्ति- सुराष्ट्रा जैसे उदाहरण कार्तकौजयादिगण पाठ में दिये हैं। जिनमें स्पष्टतः ही अवन्ति (उज्जैन) और दक्षिण के अश्मक (अश्वागझ-सहवागझसिहाग) जनपद की स्थिति स्पष्ट हो रही है। इसी प्रकार कुन्ति-सुराष्ट्रा के युग्म से कुन्ति कौंतवार (वर्तमान ग्वालियर) और सुराष्ट्र या सौराष्ट्र-काठियावाड की निकटता प्रतीत हो रही है। यह निकटता उतनी भौगोलिक संभवतः नहीं है, जितनी कि राजनीतिक या फिर रक्त-सम्बन्धी है।

ऐसे ही चिन्ति या चेदि (कालिजंर-खजुराहो के बुन्देलखण्ड जनपद) की निकटता सौराष्ट्र से सिद्ध होती है। वृहदारण्यक उपनिषद में ऐसे ही दो कुरू-पांचाल जनपदों का उल्लेख है। उनकी भौगोलिक सन्निकटता तो स्वयं-सिद्ध है ही। यदि कुरू वर्तमान की मेरठ कमिश्नरी थी; तो पांचाल या प्रत्यग्रथ वर्तमान का रूहेलखण्ड ही था। ये लोग मध्य अफगानिस्तान के लोहितगिरि किंवा रोह (पर्वतीय) प्रदेश से ही इधर आकर आबाद हुए थे। इसीलिए मध्यकाल में ही इनका नाम रूहेलखण्ड हो गया था। महाभारत में अहिच्छत्र (आँवला या बरेली) को ही पांचाल (पूर्व) की राजधानी बताया गया है; तो दक्षिण पांचाल की राजधानी काम्पिल्य या कन्नौज ही थी।

इसी प्रकार से मद्र-गान्धार और वसाति-सिन्धु-सौबीर और बसाति मौलेय जैसे जनपद-युग्मों के नाम हमें अष्टाध्यायी में देखने को मिलते हैं। बाहीक अथवा संयुक्त पंजाब में मद्र जनपद ही सर्वाधिक विस्तृत था; क्योंकि वह गान्धार या कन्धहार (काबुल) की सीमा का स्पर्श करता था। तो वसाति और सिन्धु तथा सौबीर (पामीर का पठारीय प्रदेश) ये भी उत्तरपश्चिमी भारत में आपस में गलबहियाँ करते थे। वसाति जनपद की अवस्थिति अभी तक अज्ञात ही है, अजाद की भांति। यह जनपद भी वैसे वंशी जाटों का हो सकता है, जिस प्रकार से कि शाल्व जनपद के अवशेष भाषान्तर से वर्तमान के हाला (साल्वका हाल्वका, इति पाणिनी) जाटों में मिल रहे हैं। हर्षचरित में वसाति जनपद की स्थिति श्रीकंठ प्रदेश (वर्तमान के कुरूक्षेत्र) में वर्णित है; तो 'सर्वखाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम' के लेखक निहाल सिंह आर्य वसाति वंश को पीछे से होशियारपुर (उदुम्बर) के क्षेत्र से आगत मानते हैं। हो सकता है कि पाणिनी के समय में यह अभिजन सिन्धु-सौबीर और शिवि जनपद (ब्लूचिस्तान) के ही कहीं आस-पास रहा हो।

ऐसे ही शिवि (सिस्तानी शक) भी उशीनरों (मधियाना-झंग) के निकट निवासी बताये गये हैं। इसी प्रकार से शाल्व (हाला) और मद्र (मेडो या भद्रक, भादुओं) की निकटता भी वर्णित है। सत्यवान और सावित्री के मध्य में होने वाले विवाह-सम्बन्ध को भी इन जनपदों को कहीं और निकट ला दिया होगा; जैसा कि महाभारत के सावित्री उपाख्यान से ज्ञात होता है। इसी प्रकार से मत्स्य (अलवर-जयपुर) और मद्रों की निकटता पाणिनी ने बताई है। तो महाभारत में मत्स्ययों का पड़ोसी त्रिगतों को ही बताया गया है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल साल्वों का ही विस्तार छः अन्य उपजनपदों में मानकर उनकी व्यापकता को सिद्ध करते हैं। क्योंकि उन्होंने पाणिनीय साक्ष्यों के आधार पर ही शाल्वों के उदुम्बर, तिलखल और त्रिगर्त तथा शरदण्ड जैसे उपविभाग किये हैं। हमें ऐसा प्रतीत होता है कि अखण्ड आर्यावर्त की पश्चिमी सीमा पर आबाद यही साल्व लोग ही रूस तक जाकर स्लाब बन गये हैं और फिर वहीं से ये लोग मध्य यूरोप में युगोस्लाविया और चैकोस्लाविया तक फैलकर बस गये हैं। गण-संघों को समवाय होना भी युग्म नामों का एक आधार हो सकता है। क्योंकि किसी विशेष बलशाली गण-राज्य अथवा एकतन्त्री साम्राज्य के विरुद्ध दो या दो से अधिक गण मिलकर अपना गण-संघ या संघ राज्य बना लेते थे। जैसे कि सिकन्दर के आक्रमण के समय में मालवों और शूद्रकों (खोकरों) ने मिलकर मालव-शूद्रक संघ की स्थापना कर ली थी। लेकिन बाद में संयुक्त सेनापतित्व के प्रश्न पर उनमें मतभेद होने से वे अलग-अलग ही लड़े थे। अतएव क्षुद्रक (खोखर) एकाकी अभिजितम् जैसा सूत्र हमें पाणिनी के परिवर्ती पतञ्जलि (दूसरी शताब्दी ई.पू.) के महाभाष्य में मिलता है।

इसी प्रकार के एक गण-संघ का नाम हमें अष्टाध्यायी में माद्रेय-जांगल मिल रहा है। यदि मद्र पूर्वी और पश्चिमी पंजाब का तत्कालीन विशालतम गणराज्य था, तो उसकी सीमाएँ पंजाब के लुधियाना (सुनेत) से लेकर वर्तमान बीकानेर संभाग की सीमाओं का अवश्य ही स्पर्श करती होंगी। आज भी बीकानेर के पश्चिमोत्तरी भू-भाग नोहर-भादरा और हनुमानगढ तथा गंगानगर जैसे स्थानों पर भादू गोत्र के जाटों को देखा जा सकता है। जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं कि संस्कृत में मद्रक और भद्रक समान ही संज्ञाएँ हैं। फिर रिवाड़ी-नारनौल के क्षेत्र को एक समय भादानक प्रदेश भी कहा जाता था। अतएव मद्र या संस्कृत के भद्रक ही वर्तमान में भादू लोग हैं जोकि उत्तरी राजस्थान में जाटों में पर्याप्त संख्या में हैं तो योधेयों के उत्तराधिकारी जोहिया या दहिया भी उन्हीं में मिलते हैं।

***सह प्राध्यापकः हिन्दी विभाग गो.ग.***
***द.स. धर्म कॉलेज, पलवल***

# कुर्सीप्रधान देश बनता जा रहा है हिन्दुस्तान

**रामस्वरूप रावतसरे**

अन्ना के बहाने सांस लेने का ठसका इस कदर शुरू हुआ है कि हर कोई अन्ना अन्ना करता हुआ दौड़ लगाने की जुगत कर रहा है। यह दौड़ अन्ना की तरह किसी और के लिये नहीं है बल्कि अपने स्वंय के लिये, ताकि किसी भी बहाने से मंजिल हासिल की जा सके। सबकी अपनी- अपनी दौड़ है। कोई दौड़ने के लिये दौड़ रहा है, कोई दौड़ाने के लिये दौड़ रहा है। ताकि वह दौड़ता रहे और उसका काम आसानी से पूरा हो जाये। अन्ना ने लोकपाल बिल के लिये दौड़ क्या लगाई पक्ष-विपक्ष सभी ने इसे वैतरणी मान कर डुबकी लगाना शुरू कर दिया। जिसे देखो वह लोकपाल के मसोदे को अपनी औकात और क्षमता से आगे निकल कर अमली जामा पहनाने में लगा है। अब यह बात अलग है कि वह अपनी सोच एवं क्षमता से कितना कुछ कर पाता है।

एक तथाकथित समाज सेवक से अन्ना हजारे के आन्दोलन को लेकर बात हो रही थी। अन्ना किस बात को लेकर जन्तर-मन्तर पर बैठे उससे उसे कोई लेना देना नहीं है और ना ही इस बात से मतलब है कि अन्ना द्वारा उठाई गई आवाज का असर आगे होगा या नही, या अन्ना को कोई लाभ भी मिलेगा या नहीं। इससे भी आगे यह कि अन्ना के कारण देश व समाज का कितना लाभ होगा। उसे मतलब है तो इस बात का कि अन्ना के बहाने उसे तव्वजो मिल रही है या नहीं। यदि अन्ना के बहाने उसका कोई मतलब हल नहीं हो रहा है तो उसे सारी व्यवस्था में भ्रष्टाचार नजर आता है। और यदि सारे कानून कायदों को ताक पर रख कर उसका गलत काम भी कर दिया जाता है तो सब कुछ सही है, अन्यथा सब गलत हैं। ऐसे समाज सेवकों की बयार-सी आ गई है।

जब से अन्ना हजारे ने जन्तर-मन्तर पर बैठने का मानस बनाया उस समय उनके मन में क्या कल्पना होगी कि इस देश के देशवासी गांधी की तरह उन्हें भी स्वीकार करगें और भूखे-प्यासे रहकर उनके साथ हो लेंगे। क्योंकि इस लोकपाल बिल से उनके बच्चों का भविष्य जुड़ा है। पर शायद अन्ना भूल गये लगते हैं कि गांधी के समय का हिन्दुस्तान अब नहीं रहा है। गांधी ने जब आजादी के आन्दोलन का बिगुल बजाया था उस समय हिन्दुस्तान कृषिप्रधान देश था अब कुर्सी-प्रधान देश हो गया है। जब गांधी ने चलने की ठानी थी उस समय हर गली और हर नुक्कड़ पर हिन्दुस्तान के सच्चे-सीधे नागरिक थे। आज वहां स्थिति कुछ और ही है। आज सब नेता बन पाने की ललक पाले हुए हैं। सबका उद्देश्य लाभ की सीढ़ियां चढ़ना है। सीढ़ियां चढ़ने के लिये सहारा किस प्रकार का है इससे इन्हें कोई सरोकार नहीं होता है। यही कुछ अन्ना के चारों ओर देखने में आया। यह बात आज तक समझ में नहीं आई कि इस देश से भ्रष्टाचार लोकपाल बिल के आने से कैसे खत्म हो जायेगा। क्या वे ही खत्म करेंगे जो लोकपाल बिल को तैयार करने में लगे हैं या वे जो इसका हर कदम पर विरोध करने में सबसे आगे हैं? पर सत्ता पक्ष खुश है कि उन्हें जो भ्रष्टाचार व महंगाई को लेकर कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था, सभी प्रकार की बदनामी उन्हें भोगनी पड़ रही थी, अब उनका आगामी समय लोकपाल बिल को बनाने-बिगाड़ने में ही आसानी से कट जायेगा। जो निठल्ले थे उन्हें काम मिल गया या गाल बजाने का मौका मिल गया। परेशानी तो उसकी बढ़ी है जो समस्याग्रस्त हैं, जो जी-तोड़ मेहनत करने पर भी दो जून की रोटी का जुगाड़ नहीं कर पा रहा है। खैर जो रैला अन्ना के बहाने चल पड़ा है, वह तभी रुकेगा जब रैले में सम्मिलित लोगों के उचित-अनुचित उद्देश्यों की पूर्ति होती जायेगी।

***चोपड़ा बाजार, शाहपुरा***
***जयपुर (राजस्थान)***

# अहिंसा के सजग साधक

**मुनि सुखलाल**

आचार्य महाश्रमण मेवाड़ में अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। यद्यपि आचार्य महाश्रमण तेरापंथ के आचार्य हैं, पर आपने अपनी अहिंसा यात्रा से यह सिद्ध कर दिया है कि आप सभी धर्मों-संप्रदायों के प्रति सद्भाव रखते हैं। आचार्यश्री के सामने न हिन्दु-मुसलमान का भेद है और न जैन-अजैन का। अपनी यात्रा के अन्तर्गत आपने सर्वधर्म सम्मेलन के रूप में सभी धर्मों-सम्प्रदायों के गुरुओं-प्रतिनिधियों के साथ सौहार्द्र से बातचीत तो की ही पर यदि आपको यदि कहीं किसी भी सम्प्रदाय के मंदिर-मस्जिद में आने का निमंत्रण प्राप्त हुआ तो उसे भी स्वीकार किया। सचमुच आपके मन में इतना सौहार्द्र है कि वे अहिंसा की एक सच्ची नजीर हैं।

बहुत बार लोग चाहते हैं कि आचार्यश्री हमारे आवास में भी अपने चरण-स्पर्श करें। आप प्रायः लोगों को निराश नहीं करते। अनेक बार तो अनेक किलोमीटर का चक्कर लेकर भी आप आस-पास के गाँवों-घरों से स्पर्श करते हैं। पदयात्री होते हुए भी आप यथासंभव अधिकांश लोगों के प्रति अनुकम्पा करते हैं। जहाँ सम्प्रदाय होता है वहाँ उसकी सीमा भी होती है, पर आचार्यश्री सम्प्रदायों की कल्पित सीमाओं से दूर हैं। यही कारण है कि तेरापंथी ही नहीं स्थानकवासी, मंदिर-मार्गो तथा अजैन परिवारों की भावनाओं की आप कद्र करते हैं। उनके घरों में जाते हैं। यही कारण है कि छोटे-छोटें गाँवों में हजारों किलोमीटर दूर से आकर भी लोग आपकी उपासना का लाभ लेते हैं, आपके उपदेशों को श्रद्धापूर्वक वे सुनते हैं। सुनते ही नहीं अनेक लोग उन पर अमल भी करते हैं। अहिंसा यात्रा के दौरान हजारों लोगों ने अनेक प्रकार के व्यसनों से मुक्त होकर अहिंसा के पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प साहस जताया है।

यह सभी लोग जानते हैं कि जैन धर्म का अहिंसा-दर्शन अत्यंत सूक्ष्म है। जैनधर्म में अहिंसा की दृष्टि से पर्यावरण पर जितनी सूक्ष्मता से विवेचन किया गया है वह अत्यन्त दुर्लभ है। आज के युग में पृथ्वी, पानी, अग्नि, वनस्पति आदि के सूक्ष्म जीवों की हिंसा से बचना बहुत मुश्किल है, पर आप उन मुश्किलों का भी सामना कर अपनी अहिंसा निष्ठा का परिचय दे रहे हैं। मनुष्यों, पशु-पक्षियों तथा कीड़ों-मकोड़ों की अहिंसा का ध्यान रखना भी बहुत कठिन है। पर आप तो सूक्ष्म जीवों की अहिंसा के प्रति भी अत्यंत सजग है।

अहिंसा यात्रा में अनेक बार ऐसे प्रसंग आये जब रास्ते की विषमता को मिटाने के लिए सजीव मिट्टी बिछा दी गई तो आचार्यश्री ने वह रास्ता ही बदल दिया। कई बार रास्ते में रजकणों को उड़ने से बचाने के लिए पानी का छिड़काव कर दिया गया तो आचार्य श्री ने अपना रास्ता बदल दिया। कई बार प्रवचन मंच का निर्माण यदि हरियाली-घास पर कर दिया गया तो आचार्यश्री उस मंच पर नहीं बैठे। कभी यदि रास्ता बीजों से संकीर्ण मिला तो आपने उस रास्ते को अस्वीकार कर दिया। दीखने में ये सब बातें बहुत छोटी-छोटी दिखाई देती है, पर पर्यावरण की दृष्टि से इनका बहुत बड़ा मूल्य है। यद्यपि अपनी-अपनी दृष्टि से सभी जैन मुनि इस प्रकार की सूक्ष्म हिंसा से बचने का प्रयत्न करते हैं, पर आचार्यश्री इस दृष्टि से जितने जागरूक हैं वह अहिंसा की अनुपालना का सजग उदाहरण है।

जैन मुनि की चर्या से परिचित लोग सहज ही इन सब छोटी-छोटी बातों का ख्याल भी रखते हैं, पर कभी यदि अजानकारी में ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं तो आचार्यश्री श्रावकों पर दोष नहीं करते हैं अपितु उन्हें अपनी चर्या से परिचित करवाते हैं। आज के हिंसा और सुविधावादी वातावरण में इस प्रकार अहिंसा की लौ जगाना सचमुच अहिंसा यात्रा की बहुत बड़ी उपलब्धि है। ऐसे संतों, आचार्यों की जीवन चर्या से ही जनजीवन में अहिंसा की प्रतिष्ठा हो रही है, हो सकती है। आज के युग में अहिंसा का यह स्पष्ट संदेश अत्यंत आदरणीय है।

## खोट

अंशमात्र मिलकर भी
खरे को खोटा बना देता है
खोट में यह खोट है।

खोटे में सारा का सारा
खरा भी मिल जाए
खोट की खोट नहीं मिटती
खोट में यह खोट है।

खोट की कीमत नगण्य होती है
फिर भी गाजर घास की तरह फैलती है
खोट में यह खोट है।

• • •

## बाजार

यहां सब बिकता है
खरा हो चाहे खोटा
जो खरा नहीं खरीद सकते
वे खोटा खरीद लेते हैं
यह एक विडम्बना ही है
काश! वे भी तत्वज्ञ की तरह
खरा खरीदने की क्षमता अर्जित कर लेते
तो खोट के बाजार यूं न सजते।।

● **गोपाललाल पंचोली**
***'महाप्रज्ञ छाया', 18 कोठी फील्ड***
***शाहपुरा (भीलवाड़ा-राजस्थान)***

# गुजरात राज्य अणुव्रत समिति

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा आलोच्य वर्ष में निम्न प्रमुख कार्यक्रम आयोजित हुए--

1 जुलाई 2010 को 'वक्त है शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार से लड़ने का' बैनर को सार्वजनिक स्थानों पर लगाकर जन-जागृति अभियान चलाया गया। ''पानी बचाओ समय की मांग'' विषयक संगोष्ठी साध्वी कनकरेखा के सान्निध्य में आयोजित की गयी। महापौर कानजी भाई ठाकरे एवं पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर की उपस्थिति में आचार्य महाश्रमण के इंगितानुसार कार्य करने के संदर्भ में विचार गोष्ठी आयोजित हुई।

2 जुलाई 2010 को एक कार्यक्रम आयोजित कर पानी-बिजली-पर्यावरण बचाओ के स्टीकर सूरत, उधना, कामरेज, गांधीधाम, भुज एवं खेड़-ब्रह्मा इत्यादि क्षेत्रों में वितरित किए गए।

9 अगस्त 2011 को गुजरात राज्य निबन्ध प्रतियोगिता का 'युगीन समस्याओं का समाधान है--अणुव्रत' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।

13 सितंबर 2010 को अणुव्रत परीक्षा का आयोजन। जिसमें संयम ही जीवन है जो शांति एवं जीवन के लिए एक उपयोगी अणुव्रत-सूत्र है। कार्यक्रम साध्वी गुणप्रेक्षा, साध्वी संवरविभा एवं साध्वी केवलप्रभा के सान्निध्य में चलाया गया।

26 सितंबर 2010 से 2 अक्टूबर 2010 तक अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का राष्ट्रव्यापी आयोजन हुआ। अहिंसा दिवस पर साध्वीश्री ने कहा सुख का राजमार्ग है--'अणुव्रत' विश्व में चारों तरफ हिंसा आतंकवाद का खुला तांडव हो रहा है इसका स्थायी समाधान है--अहिंसा। संयम में सभी समस्याओं का समाधान निहित है। इस दौरान गुजरात राज्य नशामुक्ति मंडल के संयुक्त तत्वावधान में व्यसनमुक्ति हेतु एक प्रदर्शनी लगाई गयी।

10 नवंबर 2010 को गुजरात राज्य महानगर पालिका के चुनाव के दौरान चुनाव शुद्धि अभियान चलाया गया।

20 नवंबर 2010 को युगीन समस्याओं का समाधान है--अणुव्रत विषयक निबंध प्रतियोगिता रखी गयी। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

18 दिसंबर 2010 को अणुव्रत एवं संयम विषयक कार्यक्रम में समणी ज्योतिप्रभा का उद्बोधन हुआ।

10 जनवरी 2011 को राज्य सरकार द्वारा रेलवे ओवर ब्रिज का नामकरण आचार्य महाप्रज्ञ रेलवे ओवर ब्रिज किया गया। इस अवसर पर राज्य के मुख्यमंत्री की अगवानी में सार्वजनिक स्थलों पर अणुव्रत आचार संहिता के बैनर लगाकर जन-जागरण किया गया।

1 मार्च 2011 को अणुव्रत दिवस का प्रभावी आयोजन किया गया।

12 मार्च 2011 को अणुव्रत नियमों की तस्वीर, अणुव्रत आचार संहिता के बैनर और विद्यार्थी अणुव्रत के फार्म विद्यालयों में वितरित किए गए। समणी विनीतप्रभा के विशेष श्रम से सलाल, अम्बाजी आदि स्कूलों में हजारों विद्यार्थियों और शिक्षकों ने अणुव्रत के संकल्प स्वीकारे।

15 मार्च 2011 को आचार्य महाप्रज्ञ की प्रथम पुण्यतिथि पर गुजरात के अनेक क्षेत्र--पालनपुर, डीसा, भुज, गांधीधाम, बरोड़, सूरत, उधना सहित 25 शहरों में अहिंसा यात्रा विषय पर निबंध प्रतियोगिता हेतु पत्राचार किया गया।

9 मई 2011 को 'अणुव्रत जीवन में प्रयोगशाला बने' विषय पर अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर की उपस्थिति में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

1 जून 2011 को समणी विनीतप्रज्ञा के सान्निध्य में तम्बाकू निषेध दिवस का आयोजन हुआ इस अवसर पर अनेक लोगों ने अणुव्रत के संकल्प स्वीकार किए।

6 जून 2011 को साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा के इंगितानुसार विश्व पर्यावरण दिवस को अणुव्रत के बैनर तले मनाया गया। इसमें पानी बचाओ का स्लोगन प्रस्तुत कर क्षेत्र के अनेक सार्वजनिक स्थलों पर अभियान चलाया गया।

26 जून 2011 को अणुव्रत आचार संहिता के बैनर भुज, गांधीधाम के लिए शांतिलाल बागरेचा को भिजवाए गए। 27 जून को गुजरात विधानसभा के विधायकों को अणुव्रत पत्रिका भिजवाए जाने के संदर्भ में प्रयास किये जा रहे हैं। 28 जून को साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा के सान्निध्य में क्षेत्र में पानी बचाओ स्टीकरों का वितरण करवाया गया। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति ने इस वर्ष अपनी नियमित बैठकों का आयोजन किया तथा केन्द्रीय इंगितानुसार कार्यक्रमों की आयोजन की।

***--जवेरीलाल संकलेचा (अध्यक्ष)***

# दरभंगा जिला अणुव्रत समिति

दरभंगा जिला अणुव्रत समिति द्वारा निम्न कार्यक्रम आयोजित किए गए--

15 अगस्त 2010 को झंडा दिवस का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। इसमें सैकड़ों बालक- बालिकाओं ने भाग लिया।

7 सितंबर 2010 को कन्या भ्रूणहत्या रोकथाम हेतु शिविर का आयोजन कैम्ब्रिज स्कूल, कमतौल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन रंजीत प्रसाद उपप्रमुख जाले ने किया।

2 अक्टूबर 2010 को गांधी जयंती के अवसर पर अक्षर ज्योति कमतौल में अहिंसा प्रशिक्षण द्वारा मनोबल विकास का कार्यक्रम रखा गया। शिविर का उद्घाटन ग्राम पंचायत के मुखिया मोहन बैठा ने किया।

14 नवम्बर 2010 को कैम्ब्रिज स्कूल टेक्टार में बाल मजदूरों की मुक्ति एक पहल विषयक सेमिनार का आयोजन हुआ। इसमें 51 पुरुष एवं 28 महिलाओं ने भाग लेकर अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

12 दिसंबर 2010 को अहियारी पंचायत में स्वयंसेवकों के माध्यम से क्षेत्र के सभी विद्यालयों में जीवन विज्ञान, विद्यार्थी अणुव्रत नियम, व्यसनमुक्ति का अभियान चलाया गया।

26 जनवरी 2011 को गणतंत्र दिवस पर एक चित्रकला प्रतियोगिता अक्षर ज्योति कमतौल में आयोजित की गयी।

12 मार्च 2011 को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन डॉ. चितरंजन शर्मा के निर्देशन में 118 मरीजों का परीक्षण कर दवाइयां वितरित की गयी।

28 अप्रैल 2011 को नशामुक्ति परिचर्चा का आयोजन किया गया।

17 मई 2011 को सोतिया एवं ब्रह्मपुर में वृक्षारोपण का क्रम रखा गया। इस अवसर पर लगभग 133 पेड़ लगाये गये।

6 जून 2011 को नारी उत्पीड़न रोकने हेतु एक संगोष्ठी का आयोजन कैम्ब्रिज स्कूल टेक्टार में रखा गया। इसमें 48 पुरुष एवं 31 महिलाओं ने भाग लिया।

***-- कमतौल, (दरभंगा-बिहार)***

# देवघर जिला अणुव्रत समिति

गत एक वर्ष से जिला अणुव्रत समिति देवघर के अध्यक्ष डॉ. ए.पी. सिंह के निर्देशन में अणुव्रत कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस दौरान छात्रों को सदस्य बनाना, अणुव्रत गीत का प्रचार-प्रसार करना, अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार व अहिंसा समवाय के अंतर्गत युवा संगठन तैयार किया गया तथा नशामुक्त ग्राम बनाने के क्रम में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गए। डॉ. हीरालाल श्रीमाली पहाड़ों पर बसे आदिवासी पहाड़िया जनजाति के बीच पहाड़ों पर भी गये एवं वहां कई कुरीतियों को देखा।

समिति के तत्वावधान में पांच जिलों में अणुव्रत का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। प्रमुख रूप से मुरारी प्रसाद सिंह एवं उत्तम कुमार सिंह इस कार्य में सराहनीय श्रम कर रहे हैं। यहां के आदिवासियों एवं जनजातियों में शराब पीने की कुप्रथा है। इस कुप्रथा को मिटाने के लिए पैंतीस गांवों में नशाखोरी मिटाने का प्रयास किया जा रहा है। उत्तम कुमार सिंह ने पच्चीस गांवों को नशामुक्त करवाया है।

विद्यार्थियों के बीच नैतिकता के प्रचार-प्रसार हेतु शिविर लगाकर छः दिनों तक छोटे-बड़े सात सौ गांवों में अणुव्रत समिति की देखरेख में नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों की अलख जगायी गयी।

समाज में व्याप्त हिंसा एवं कुरीतियों के विरुद्ध जिला अणुव्रत समिति लगातार अभियान चला रही है। घर-घर में फैली हिंसा को रोकने के लिए लगातार अणुव्रत समिति प्रयत्न कर रही है।

देवघर जिला अणुव्रत समिति द्वारा क्षेत्र के विद्यालयों में विद्यार्थी अणुव्रत नियमों की महत्ता समझायी जा रही है। साथ ही नियमित कार्यक्रमों की आयोजना की गयी।

***-- देवधर-झारखंड***

# अणुव्रत समिति राजसमंद

अणुव्रत समिति राजसमंद द्वारा वर्षभर में निम्न कार्यक्रम आयोजित किये गए--

● राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अधिवेशन में आतिथ्य के साथ अन्य व्यवस्थाओं में पूर्ण सहयोग।

● प्रज्ञा विहार में एक्युप्रेशर एवं सुजोग पद्धति से 20 दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटनकर्ता अमेरिकन गांधी मि. बर्लीमेन एवं डॉ. महेन्द्र कर्णावट थे। सान्निध्य मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' एवं मुनि आनन्दकुमार 'कालू' का रहा।

● अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत नगरपालिका क्षेत्र कांकरोली राजनगर के विभिन्न विद्यालयों में नशामुक्त एवं पर्यावरण के कार्यक्रम आयोजित हुए। अध्यक्षता साध ुशरण सिंह 'सुमन', विजयवर्द्धन डागा व रमेश कांडपाल ने की।

● अणुव्रत आचार संहिता के होर्डिंग्स नगर के मुख्य चौराहों पर लगवाए गए।

● अणुव्रती बनो अभियान के तहत विद्यालयों एवं अन्य क्षेत्रों में 5 सूत्रीय अणुव्रत संकल्प-पत्र भरवाकर आचार्य महाश्रमण को समर्पित किये गये।

● राजसमंद एवं आसपास के गांवों में जहां से अहिंसा यात्रा गुजरी, उन मार्गों में दीवारों पर अणुव्रत स्लोगन लिखवाए गए।

● नगरपालिका राजसमंद के चुनाव में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के तहत 2500 पेम्फ्लेट वितरित कर मतदाताओं को जागरूक किया गया। आबिद अली का सराहनीय श्रम रहा।

● अणुव्रत पाक्षिक के ग्राहक बनाये गए।

उक्त सभी कार्यक्रम अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ललित बड़ोला एवं मंत्री मदन ध ोका द्वारा संपादित किये गए।

***-- मदन धोका, मंत्री***

# राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा चलाये गये अणुव्रती बनो अभियान के तहत अभी तक 2500 अणुव्रती संकल्प पत्र प्राप्त हो चुके हैं। इस अभियान में व्यक्तिगत रूप से सपना लूणिया-सरदारशहर एवं विजय सिंह बोथरा जयपुर का कार्य सराहनीय है।

संगठन यात्राओं के तहत लगभग पूरे राजस्थान प्रदेश की सार-संभाल की गयी है।

प्रचार-प्रसार के दौरान--1. अणुव्रत आचार संहिता, 2. नया मोड़ - स्वस्थ समाज, 3. पानी-बिजली-पर्यावरण बचाओ, 4. अणुव्रती बनो अभियान, 5. अणुव्रत पाक्षिक ग्राहक अभियान, 6. अहिंसा यात्रा का मुख्य लक्ष्य एवं 7. अणुव्रत कार्यकर्ता बैल्ट के बैनर एवं स्टीकर बनवाकर वितरित किये गये। उक्त सभी बैनरों व स्टीकरों का सौजन्यकर्ताओं के सहयोग से सभी क्षेत्रीय समितियों को उपलब्ध करवाया जा रहा है एवं सार्वजनिक स्थलों पर लगवाया जा रहा है।

अणुव्रत प्रचार-प्रसार में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भी प्रयोग किया गया। अणुव्रत आचार संहिता के होर्डिंग्स/बोर्ड नगरपालिकाओं द्वारा जनहित में चित्तौड़गढ़, आसीन्द, शाहपुरा में प्रसारित किये गये। उक्त कार्यक्रम में समय-समय पर पदाधिकारियों द्वारा सहभागिता की गयी। आमेट, गंगापुर, आसीन्द, रतनगढ़, शाहपुरा, तारानगर में अणुव्रत कार्यों को बढ़ावा देने की प्रेरणा दी गयी।

अणुव्रत का उपयोग किया हुआ साहित्य एकत्रित कर इसे सार्वजनिक स्थलों पर उपलब्ध कराया गया, ताकि अधिक से अधिक संख्या में जनसामान्य द्वारा इसे पढ़ा जा सके।

अणुव्रत समिति भीलवाड़ा के साथ प्रज्ञा भारती, महावीर कॉलोनी के सहयोग से सघन वृक्षारोपण का कार्यक्रम चलाया गया।

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा प्रेक्षाध्यान शिविर, जन जागरूकता अभियान, भ्रष्टाचार निवारण रैली इत्यादि जनोपयोगी कार्यक्रमों में सहभागिता दी गयी।

राजलदेसर, लूणासर, रतनादेसर, बडवा, भरपालासर, शाहपुरा, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, आमेट, रीछेड़, बगड़ीनगर इत्यादि क्षेत्रों में अणुव्रत कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु नई समितियों का गठन किया गया।

अणुव्रत प्रचार-प्रसार हेतु दौलतगढ़, लाछूड़ा, कटार, शम्भूगढ़, बदनोर, रघुनाथपुरा, राजाजी का करेड़ा, बराणा इत्यादि क्षेत्रों में अणुव्रत ग्राम संयोजकों को नियुक्त किया गया।

अणुव्रत समिति उदयपुर, अणुव्रत समिति सरदारशहर, अणुव्रत समिति आसीन्द, अणुव्रत समिति बालोतरा, अणुव्रत समिति गंगापुर, अणुव्रत समिति लाडनूं एवं अणुव्रत समिति सायरा को प्रोत्सान देने के क्रम में सम्मानित किया गया।

अणुव्रत के प्रति अपने समर्पण भाव को दर्शाने वाले विशिष्ट कार्यकताओं की व्यक्तिगत तौर पर अणुव्रत कार्य को बढ़ावा देने वाले कार्यकर्ताओं की सार-संभाल की गयी।

प्रचार प्रसार की दृष्टि से दीवाल पेन्टिंग, अणुव्रत-अहिंसा-भ्रूणहत्या निषेध इत्यादि स्लोगनों का भित्ती अंकन किया गया।

राजस्थान प्रदेश के जिन व्यक्तियों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान किया गया एवं जिन व्यक्तियों को अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा अणुव्रत सेवी संबोधन से अलंकृत किया गया। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा पुनः कार्यक्रम आयोजित कर उनके प्रति आभार प्रकट किया गया।

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा नियमित बैठकों की आयोजना की गयी एवं क्षेत्र में अणुव्रत आंदोलन की गतिशीलता हेतु भरसक प्रयास किया जा रहा है।

***--सम्पत शामसुखा, अध्यक्ष***

# अणुव्रत समिति राजगढ़-सादुलपुर

अणुव्रत समिति राजगढ़-सादुलपुर द्वारा आलोच्य वर्ष में निम्न कार्यक्रम आयोजित हुए--

समिति के तत्वावधान में इस वर्ष अणुव्रत विज्ञ एवं अणुव्रत विशारद परीक्षाओं के तहत 1240 परीक्षार्थियों ने परीक्षाएं दी।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का राष्ट्रव्यापी आयोजन व्यवस्थित रूप से किया गया।

क्षेत्र में नशामुक्ति अभियान चलाया गया। इस दौरान विद्यालयों, महाविद्यालयों में अणुव्रत गोष्ठियां रखी गयी एवं हजारों विद्यार्थियों तथा सैकड़ों शिक्षक-शिक्षिकाओं से सम्पर्क किया गया।

क्षेत्र में भ्रूणहत्या रोकथाम हेतु पोस्टर एवं फोल्डर तथा अन्य अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य का वितरण किया गया। साथ ही गोष्ठियां एवं नुक्कड़ सभाओं की भी आयोजना की गयी।

समिति द्वारा नियमित अणुव्रत गोष्ठियों की आयोजन की गयी।

अणुव्रत समिति राजगढ़-सादुलपुर द्वारा क्षेत्र में अणुव्रत गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु कार्यकर्ताओं से नियिमत संपर्क किया गया।

***--हरिसिंह भाटी, अध्यक्ष***

# अणुव्रत समिति उदयपुर

अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का राष्ट्रव्यापी आयोजन किया गया। 2 अक्टूबर 2010 को गांधी जयंती के अवसर पर केन्द्रीय कारागृह में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर बंदियों हेतु कारागृह में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था की गयी। साथ ही 30 बंदियों की आंखों की नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टरों से जांच करवाकर निःशुल्क चश्में उपलब्ध करवाये गये।

2 नवंबर 2010 को नशामुक्ति का कार्यक्रम रखा गया। इसमें नशे से होने वाले कुप्रभावों की जानकारी दी गयी। 26 नवंबर 2010 को आतंकवादियों द्वारा शहीद हुए नागरिकों की दूसरी बरसी पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

26 दिसंबर 2010 को अणुव्रत समिति, विज्ञान समिति एवं सभा उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में मुनि शुभकरण के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया।

1 जनवरी 2011 को क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने एवं सुरक्षा की दृष्टि से उच्च पुलिस अधिकारियों के साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित किया।

30 जनवरी 2011 को अणुव्रत समिति तथा मित्र व्यवसाय समिति उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर स्वास्थ्य जांच परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

6 मार्च 2011 को अणुव्रत समिति, एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा एवं पशुपालन विभाग उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

17 मार्च 2011 को अणुव्रत समिति, रोटरी क्लब, महावीर इंटरनेशनल, मुस्कान क्लब इन्स्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग, मास नर्सिंग, एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज, झील हितेषी मंच, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, सेवा समिति एवं गणमान्य नागरिकों द्वारा जापान में आए भूकंप एवं सुनामी पीड़ितों और मृतकों की आत्मा की शांति हेतु फतहसागर पाल पर श्रद्धांजलि दी गयी।

24 मार्च 2011 को साम्प्रदायिक सौहार्द का कार्यक्रम रखा गया। बोहरा समाज के धर्मगुरु डॉ. सैयदना की शोभा यात्रा निकाली गयी।

1 अप्रैल 2011 को विनयपुरम गांव में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

8 अप्रैल 2011 को गणेश डागलिया की अध्यक्षता में भ्रष्टाचार विरोधी कार्यक्रम में सहभागिता दी गयी।

13 मई 2011 को गांधी सेवा सदन राजसमंद में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के द्विवार्षिक अधिवेशन में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के सान्निध्य में सहभागिता रही। साथ ही अणुव्रत आचार संहिता के लेमिनेटिड बोर्ड का विमोचन आचार्य महाश्रमण द्वारा करवाया गया।

23 मई 2011 को राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय सिंधी बाजार, अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा महिला चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया।

28 मई 2011 अणुव्रत समिति उदयपुर एवं केन्द्रीय कारागार के संयुक्त तत्वावधान में 1100 बंदी भाई-बहनों को ''नशामुक्त जीवन'' विषयक संगोष्ठी का आयोजन साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के सान्निध्य में किया गया।

4 जून 2011 को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 471वीं जयंती पर उदयपुर शहर में शोभायात्रा निकाली गयी।

5 जून 2011 को पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित हुआ एवं मारूवास ग्राम में वृक्षारोपण किया गया। मुख्य अतिथि भंवरलाल डागलिया थे। संचालन पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. जयराज आचार्य ने किया।

6 जून 2011 को अणुव्रत समिति, तारा ज्वैलर्स घंटाघर एवं पशुपालन विभाग उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम मारूवास प.स. बड़गांव में निःशुल्क पशु चिकित्सा एवं पशु बांझपन निवारण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 325 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर निःशुल्क औषधियां उपलब्ध करवाई गई। इस अवसर पर पशुपालकों को ''उन्नत पशु प्रबंधन'' की जानकारियां दी गयी।

7 जून 2011 को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में उपस्थित कार्यकर्ताओं की अनुशास्ता द्वारा सराहना की गयी।

16 जून 2011 को अणुव्रत समिति, मित्र व्यवसाय समिति उदयपुर द्वारा 18 वें स्थापना दिवस पर 1008 रोगियों की जांच की गयी। इस अवसर पर 24 सदस्यों ने रक्तदान किया। अरविंद चित्तौड़ा ने 30वीं बार रक्तदान किया।

19 जून 2011 को मित्र व्यवसाय समिति, अणुव्रत समिति, भगवान महावीर विकलांगता सहायता समिति उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम भूताला में निःशुल्क चिकित्सा एवं विकलांगता शिविर का आयोजन। शिविर में 319 रोगियों को महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के विशेषज्ञों द्वारा जांचकर निःशुल्क दवाइयां वितरित की गयी। इस अवसर पर 27 विकलांग पत्र, 7 रोड़वेज पास, 12 पेन्शन योजना, 3 ट्राई साईकिलें, 3 कृत्रिम पैर एवं अन्य उपकरण मुख्य अतिथि उदयपुर जिला प्रमुख मधु मेहता एवं गणेश डागलिया के हाथों वितरित किये गए।

***--गणेश डागलिया, अध्यक्ष***

# अणुव्रत समिति लाडनूं

25 जुलाई 2010 को अणुव्रत समिति लाडनूं के कार्यकर्ताओं की एक संगोष्ठी साध्वी रामकुमारी के सान्निध्य में भिक्षु विहार में ओमप्रकाश सोनी की अध्यक्षता में आयोजित हुई। साध्वीश्री ने प्रत्येक कार्यकर्ता को एक-एक अणुव्रती बनाने और स्वयं को अणुव्रत मूल्यों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। संयोजन डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया।

9 सितंबर 2010 को साध्वी काव्यलता के सान्निध्य में ऋषभद्वार में अणुव्रत चेतना दिवस मनाया गया। डॉ. त्रिपाठी एवं ओमप्रकाश सोनी ने अणुव्रत दर्शन, इतिहास एवं मूल्यों पर प्रकाश डाला।

26 सितंबर 2010 से 2 अक्टूबर 2010 तक अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह विभिन्न सार्वजनिक स्थलों एवं स्कूलों में धूमधाम से मनाया गया।

17 अक्टूबर 2010 को साध्वी काव्यलता के सान्निध्य में अणुव्रत प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की गयी। मुख्य अतिथि कमला कठोतिया ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

27 अक्टूबर 2010 को मेधावी छात्र सम्मान समारोह में कई विद्यार्थियों को विजयसिंह बरमेचा के करकमलों से सम्मानित किया।

5 नवंबर 2010 को डाबड़ी ग्राम में चल रहे अणुव्रत सिलाई केन्द्र का निरीक्षण कर सीताराम टेलर ने प्रशिक्षण में गुणवत्ता लाने हेतु प्रेरित किया।

7 नवंबर 2010 को अणुव्रत दिवस समारोह साध्वी रामकुमारी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने आचार्य तुलसी के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला।

21 नवंबर 2010 को टमकोर के प्रज्ञा भवन में ''शिक्षा में अणुव्रत'' विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल एवं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के दर्शन कर प्रेरणा पाथेय प्राप्त किया।

25 नवंबर 2010 को समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी के आकस्मिक निधन हो जाने पर साध्वी रामकुमारी एवं साध्वी काव्यलता के सान्निध्य में स्मृति सभा का आयोजन हुआ। नगर के कई गणमान्य वक्ताओं ने ओमप्रकाश सोनी के कार्यों को याद कर उनकी आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना की।

12 दिसंबर 2010 को अणुव्रत समिति की बैठक में सर्वसम्मति से अली अकबर रिज़वी को आगामी दो वर्ष हेतु अध्यक्ष चुना गया।

25 जनवरी 2011 को राजकीय स्कूल नं. 3 में अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन किया गया। अली अकबर रिजवी एवं नन्दलाल वर्मा ने विचार रखे।

21 फरवरी 2011 को अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के सान्निध्य में अहिंसा भवन में अणुव्रत दर्शन पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें समिति के पदाधिकारियों एवं अन्य वक्ताओं ने अणुव्रत पर विचार रखे।

27 मार्च 2011 को प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यकर्ताओं की विचार गोष्ठी रखी गयी। आगामी सत्र हेतु कार्यक्रम की रूपरेखा बनायी गयी।

17 अप्रैल 2011 को दूसरी पट्‌टी में अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. त्रिपाठी ने विचार रखे।

5 जून 2011 को अली अकबर रिजवी की अध्यक्षता में नशामुक्ति विषयक गोष्ठी का आयोजन हुआ।

27-28 जून 2011 को विजयसिंह बरमेचा के नेतृत्व में प्रेरणा पाथेय हेतु अणुव्रती दल आचार्यश्री के सान्निध्य में उपस्थित हुआ। साथ ही साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा एवं अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

अणुव्रत समिति लाडनूं द्वारा क्षेत्र में अणुव्रत आंदोलन की गतिशीलता के क्रम में विभिन्न गतिविधियों का सुचारु रूप से संचालन किया जा रहा है।

***--डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, मंत्री***

# अणुव्रत समिति गंगापुर

अणुव्रत समिति गंगापुर द्वारा गोद लिये ग्राम मैलोनी में आलोच्य वर्ष में निम्न गतिविधियों का संचालन हुआ--

- ग्राम सर्वेक्षण के बाद गांव के कायापलट की दिशा में प्रयास।
- गांव के सभी मार्गों में डामरीकरण एवं पक्की नालियों का निर्माण
- ग्राम को पूर्ण शराब मुक्ति के रूप में अग्रसर किया जा रहा है।
- ग्राम में कर्ज मुक्ति, वाद-विवाद मुक्ति एवं बेरोजगार मुक्ति के प्रयास।
- ग्राम की प्राथमिक पाठशाला उच्च प्राथमिक विद्यालय और क्रमोन्नत दो आंगनवाड़ी केन्द्र भी राज्य सरकार द्वारा संचालित हैं।
- ग्राम की आर्थिक व्यवस्था पूर्ण समृद्धि की ओर।
- ग्राम के युवा शैक्षणिक स्तर पर अग्रणी एवं अच्छे तथा वरिष्ठ पदों पर मनोनीत।
- ग्राम के कच्चे मकानों का पक्के मकानों में परिवर्तन।
- ग्राम में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का सुचारु संचालन।
- ग्राम की दीवारों पर आदर्श वाक्यों का लेखन।
- ग्राम के प्रमुख चौराहों पर अणुव्रत आचार संहिता होर्डिंग्स की स्थापना।

अणुव्रत समिति गंगापुर द्वारा नियमित अणुव्रत गोष्ठियों की आयोजना एवं क्षेत्र में अणुव्रत कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही समय-समय पर नशामुक्ति गोष्ठियों की भी आयोजना की गयी।

***-- देवेन्द्र कुमार हिरण, संरक्षक***

# अणुव्रत समिति भीलवाड़ा

अगस्त 2010 में नगर परिषद् चुनाव के संदर्भ में अणुव्रत महासमिति द्वारा निर्देशित चुनाव सुधार अभियान के तहत पोस्टर लगवाए गए। महासमिति द्वारा प्रेषित चुनाव सुधार के बाबत साहित्य पूरे नगर परिषद में वितरित किया गया।

सितंबर 2010 में जनसम्पर्क के माध्यम से संकल्प पत्र भरवाने का क्रम चलाया गया। परिचर्चाओं के दौरान लोगों में अणुव्रत की निष्ठा पैदा करने के प्रयास किये गये।

2 सितंबर 2010 को गांधी सेवा सदन राजसमंद में समिति के पदाधिकारियों ने भाग लिया एवं अणुव्रत पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। आचार्य महाश्रमण के मेवाड़ आगमन पर विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया।

17 सितंबर 2010 को अणुव्रत समिति कार्यसमिति की बैठक सभा भवन में आयोजित हुई। इसमें भावी कार्यक्रमों के सुचारु संचालन की दिशा में विचार-विमर्श हुआ। साथ ही अणुव्रत परिवारों की संगोष्ठियां बुलाने का भी चिंतन किया गया।

26 सितंबर 2010 से 2 अक्टूबर 2010 तक अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का राष्ट्रव्यापी आयोजन क्षेत्र के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों एवं विद्यालयों में किया गया। सप्ताह के अंतिम दिवस 2 अक्टूबर को केन्द्रीय कारागार में नशामुक्ति दिवस का भव्य आयोजन हुआ। मुकेश रांका ने अणुव्रत गीत का संगान किया। मुख्य अतिथि जेल उपअधीक्षक विक्रम सिंह ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर लक्ष्मीलाल गांधी, साध्वी कान्तप्रभा, साध्वी शीतलयशा, समिति के अध्यक्ष पुखराज दक, सुनील दक ने विचार रखे। संचालन अशोक सिंघवी ने किया।

4 अक्टूबर 2010 को अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में महिला आश्रम, सेवा सदन, आदर्श विद्या निकेतन, राजेन्द्र मार्ग एवं अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। संचालन पुखराज दक ने एवं संचालन नवीन वागरेचा ने किया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

5 अक्टूबर 2010 को पशुवध निरोध समिति एवं धार्मिक तथा सामाजिक संगठनों द्वारा पशुवध रोकने हेतु मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया गया। समिति द्वारा तुरन्त प्रभाव से कत्ल खानों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गयी।

25 अक्टूबर 2010 को पर्यावरण शुद्धि हेतु पटाखा त्यागो अभियान के तहत महावीर जन्म जयन्ति समारोह द्वारा जिलाधीश को दिये ज्ञापन में अणुव्रत समिति ने सहभागिता निभायी।

7 नवंबर 2010 को आचार्य तुलसी जन्म दिवस ''अणुव्रत दिवस'' के रूप में मनाया गया।

10 दिसंबर 2010 को अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन किया गया।

जनवरी 2011 में अणुव्रत परिवारों की गोष्ठी आयोजित की गयी एवं अणुव्रत पर चर्चा की गयी।

फरवरी 2011 में अणुव्रत आंदोलन को गति प्रदान करने हेतु कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गयी।

मार्च 2011 को जिलाधीश के माध्यम से राष्ट्रपति को दिये गये ज्ञापन को पुनः निवेदित किया गया।

अप्रैल 2011 में कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गयी। इसमें अणुव्रतों के प्रचार-प्रसार हेतु करणीय कार्यों पर विचार-विमर्श किया गया। विनयपुरम में आचार्य महाश्रमण के कर-कमलों में क्षेत्रवासियों द्वारा भरे गये अणुव्रत संकल्प पत्र दिये गये।

मई 2011 में भारत स्वाभिमान समिति द्वारा चलाये गए भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम में दिये गए धरने में अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत द्वारा आंदोलन के पक्ष को रखा गया और भ्रष्टाचार राकेने में अणुव्रत द्वारा किये जा रहे प्रचार-प्रसार से आम जनता को अवगत करवाया गया। जून 2011 में अणुवत समिति कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गयी।

अणुव्रत समिति भीलवाड़ा के तत्वावधान में अणुव्रत गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

***--पुखराज दक, अध्यक्ष***

# अणुव्रत समिति सायरा

अणुव्रत समिति सायरा द्वारा आलोच्य वर्ष में निम्न प्रमुख कार्यक्रमों की आयोजना की गयी--

- बसंतीलाल बाबेल के उल्लेखनीय कार्य करने पर शुभकामनाएं दी गयी।
- आचार्य महाश्रमणजी से सेरा क्षेत्र में पधारने हेतु पत्र द्वारा निवेदन किया गया।
- प्रदेश अध्यक्ष को अणुव्रत समिति द्वारा किये जा रहे कार्यों से पत्र द्वारा अवगत करवाया गया।
- सायरा ब्लॉक प्रा. स्वास्थ्य केन्द्र को क्षेत्रीय लोगों की बीमारी से अवगत करवाया गया।
- अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य का वितरण किया गया।
- गोगुन्दा में साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का राष्ट्रव्यापी आयोजन किया गया।
- समिति के अध्यक्ष मीठालाल भोगर ने गुजरात में आचार्य महाप्रज्ञ ओवर ब्रिज का मुख्य मंत्री द्वारा उद्घाटन समारोह में भाग लिया।
- आचार्य महाश्रमण को मेवाड़ पधारने का पत्र दिया गया। साथ ही कानूभाई को शुभकामनाएं दी गयी।
- समिति द्वारा अणुव्रत विज्ञ एवं अणुव्रत विशारद की परीक्षाएं आयोजित की गयी।
- अणुव्रत गोष्ठियों की नियमित आयोजना की गयी।
- आलोच्य वर्ष में समिति के मंत्री जसराज जैन के प्रयासों से कुल 303 नये सदस्य बनाये गये।

# अणुव्रत समिति जयपुर

8 एवं 9 जनवरी 2011 को अणुविभा केन्द्र में आयोजित 'उत्सव-11' में अणुव्रत समिति, जयपुर की सहभागिता रही। समिति की अध्यक्ष आशा नीलू टॉक सरोज बैंगानी तथा अन्य सदस्यों ने अणुव्रत की जानकारी दी तथा अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य का वितरण किया।

12 फरवरी 2011 को अणुविभा में बैठक सम्पन्न हुई। समिति द्वारा अब तक किए गए कार्यों की समीक्षा की गई। अधिक से अधिक लोगों को अणुव्रत से जोड़ने हेतु चिन्तन किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्य किए जाने पर विचार विमर्श हुआ।

अणुव्रत समिति जयपुर के तत्वावधान में जयपुर के विभिन्न विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को स्वावलंबन का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही विद्यार्थी अणुव्रत नियमों की भी जानकारी दी गयी।

अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा अणुव्रत प्रचार-प्रसार की दृष्टि से चँदवाजी तक की यात्रा की गई। सहभागियों को अच्छी आदतों के बारे में बताया तथा खेल व गीतों के माध्यम से योगासन का प्रशिक्षण दिया। बच्चों को 'अणुव्रत जानें' पुस्तिका भी वितरित की गयी। बच्चों ने अणुव्रत गीत का संगान कर आगन्तुकों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति, जयपुर के तत्वावधान में किए जा रहे सेवा कार्यों की श्रृंखला में जयपुर के प्रेम निकेतन विद्यालय में वाटर कूलर लगवाया गया। समय के साथ-साथ कम्प्यूटर के प्रयोग की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। इसी दृष्टि से विद्यार्थियों के लिए एक कम्प्यूटर, एक अलमारी भी उपहार स्वरूप प्रदान की गई। इसके साथ ही विद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को अणुव्रत के नियमों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर समिति की ओर से जी.एल. नाहर, सर्व आशा नीलू टाक, पुष्पा बांठिया, सुमन बोरड़, निर्मला सुराणा आदि उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति जयपुर के जयपुर स्थित 'प्रेम निकेतन अस्पताल' में रोगियों की सुविधा हेतु एक पलंग भेंट किया गया। अर्थ सहयोग डालमचंद बाफना की पुण्य स्मृति में उनकी पत्नी फूलदेवी बाफना द्वारा किया गया। 'ज्ञान सरोवर पब्लिक स्कूल' में विजय बोथरा द्वारा अणुव्रत नियमों के बोर्ड तथा बच्चों में पुस्तिकाएँ भी वितरित की गईं। प्रिंसीपल ने अणुव्रत के कार्यों व गतिविधियों की सराहना करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

पर्यावरण रक्षा की दृष्टि से विभिन्न स्थानों पर पौधरोपण का कार्य भी किया जा रहा है। मालवीय नगर स्थित 'प्रेम निकेतन अस्पताल' के परिसर में वृक्षरोपण का कार्य जी.एल. नाहर के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आशा नीलू टाक, कल्पना जैन, पुष्पा बांठिया, सुमन बोरड, निर्मला सुराणा उपस्थित थे।

26 मई 2011 को दो विकलांग व्यक्तियों को 'जयपुर कृत्रिम पैर' लगवाए गए। केन्द्रीय अणुव्रत समिति के तत्वावधान में चलाए जा रहे पोस्टर अभियान के अन्तर्गत भी जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा प्राकृत भारती पुस्तकालय, एस.टी. इन्फोसिस प्राइवेट लिमिटेड, महावीर विकलांग समिति आदि स्थानों पर स्टीकर लगाए गए। विभिन्न विद्यालयों तथा सार्वजनिक स्थानों पर बिजली बचाओ, पानी बचाओ, पृथ्वी बचाओ तथा पर्यावरण बचाओ लिखे स्टीकर लगवाए जा रहे हैं।

अणुव्रत आन्दोलन की गूँज को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा किशोरपुरा गाँव की यात्रा की गई। जयपुर से लगभग 22 किलोमीटर दूर स्थित किशोरपुरा के पंचायत समिति विद्यालय, सांगानेर में कार्यक्रम रखा गया। विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अणुव्रतों के पालन का संकल्प लिया। आशा नीलू टाक ने बच्चों को नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी। पुष्पा बांठिया ने बच्चों को सफाई का महत्त्व समझाते हुए आभार ज्ञापित किया।

समिति द्वारा विद्यालय को पोस्टर्स, विद्यालय संचालक तथा प्रधानाचार्य व शिक्षकों को साहित्य भेंट किया। पर्यावरण से सम्बन्धित सामग्री भी स्थानीय लोगों को दी गई, जिसे उन्होंने पूरे गाँव में लगवाई।

अणुव्रत समिति द्वारा समय-समय पर अणुव्रत प्रदर्शनी, नशामुक्त रैली इत्यादि के माध्यम से अणुव्रत आंदोलन को गतिशील बनाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है।

***-- आशा नीलू टॉक, अध्यक्ष***

***समुदाय के हितों की ओर से उदासीन बनकर व्यक्ति जब अपने हितों की पूर्ति में लग जाता है, तब वह अनैतिक हो जाता है।***

**● आचार्य तुलसी ●**

***संप्रसारक :***

**एम.जी. सरावगी फाउंडेशन**

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

**● दूरभाष : 22809695**

www.terapanthinfo.com



# अणुव्रत समिति सिकंदराबाद

अणुव्रत समिति सिकंदराबाद द्वारा वर्ष 2010-2011 में निम्न प्रमुख कार्यक्रम आयोजित हुए--

● ई.एम.ई. आर्मी ऑफिस में देशभर से आए प्रशिक्षणार्थियों के मध्य अणुव्रत समिति के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम रखा गया। प्रशिक्षणार्थियों को अणुव्रत नियमों से अवगत करवाया गया। अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रेषित बिजली-पानी बचाओ के स्टीकर सार्वजनिक स्थलों पर लगवाये गये। अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य संस्थान की लायब्रेरी में रखवाया गया।

● पूर्व मुख्यमंत्री वाई.एस. रेड्डी के पुत्र सांसद जगमोहन रेड्डी से मुलाकात कर निर्मला बैद एवं हनुमानमल बैद ने अणुव्रत की जानकारी दी एवं साहित्य भेंट किया।

● 'परिवार एक वात्सल्य' संस्था द्वारा अणुव्रत समिति की उपाध्यक्ष निर्मला बैद को ''नारी रत्न'' से सम्मानित किया।

● हैदराबाद के इंजीनियरिंग कॉलेज में निर्मला बैद ने अणुव्रत की विस्तार से जानकारी दी। अणुव्रत साहित्य संस्थान की लाइब्रेरी में रखवाया गया।

● मंदिरमार्गी आचार्य नय पद्मसागर को अणुव्रत साहित्य भेंट किया गया एवं अणुव्रत गतिविधियों की जानकारी दी गयी।

● हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चोटाला को अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान का साहित्य भेंट किया गया।

● हैदराबाद दूरदर्शन केन्द्र में प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम रखा गया। उपस्थित संभागियों को निर्मला बैद द्वारा अणुव्रत की जानकारी दी गयी। दूरदर्शन केन्द्र के डायरेक्टर को अणुव्रत साहित्य भेंट किया गया।

● मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में पेब्बेर स्थित कृष्णवेनी टेलेन्ट विद्यालय में अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन हुआ। हनुमान, निर्मला बैद ने अणुव्रत की जानकारी दी एवं अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

● चैरापल्ली केन्द्रीय कारागृह में समण सिद्धप्रज्ञ के सान्निध्य में अणुव्रत प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम रखा गया। सुप्रिन्टेंडेंट, जेलर एवं कैदियों ने भाग लिया। उपस्थित संभागियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया गया।

● महावीर विकलांग केन्द्र में मरीजों हेतु कृत्रिम पैर वितरित किये गये। तत्पश्चात संभागियों को नशामुक्ति के संकल्प करवाये गये।

● ''जैन वूमेन्स फोर्म'' में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये गये एवं साथ में अणुव्रत नियमों की भी जानकारी दी गयी।

● हनुमान जिनेन्द्र बैद के निवास पर नगर पार्षद रंजना, दूरदर्शन की डायरेक्टर सुमन व विनोद को अणुव्रत तथा प्रेक्षाध्यान की जानकारी दी गयी। साथ ही अणुव्रत से जुड़ने का निवेदन किया गया।

● संस्था की उपाध्यक्ष निर्मला बैद ने श्रीलंका के होटल में अणुव्रत साहित्य रखवाया, ताकि लोग अणुव्रत से परिचित हो सकें।

● सिकंदराबाद कोर्ट में समण सिद्धप्रज्ञ के सान्निध्य में मजिस्ट्रेट, वकीलों के बीच अणुव्रत गोष्ठी आयोजित कर नशामुक्ति के संकल्प करवाये गये।

● स्कूलों में अणुव्रत परीक्षाएं आयोजित करवायी गयी। हनुमान जिनेन्द्र बैद की तरफ से स्कूलों में कॉपी एवं पैन वितरित किये गये।

● अणुव्रत समिति आन्ध्र प्रदेश की बैठक में मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में मंत्री प्रसन्न चंद भंडारी के निवास पर सम्पन्न हुई। बैठक में अणुव्रत कार्यक्रमों की भावी रूपरेखा तैयार की गयी। उपस्थित प्रतिनिधियों एवं मुनिश्री द्वारा क्षेत्र में निर्मला बैद द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की गयी। इस अवसर पर पर्यावरण बचाओ रैली का भव्य आयोजन हुआ।

***--निर्मला बैद, उपाध्यक्ष***

# अणुव्रत समिति तेजपुर

अणुव्रत समिति तेजपुर द्वारा आलोच्य वर्ष में संपन्न किये गये कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण--

- गत वर्ष अणुव्रत पाक्षिक के 60 त्रैवार्षिक सदस्य बनाए गये एवं आगे भी नये सदस्य बनाने का अभियान चलाया जा रहा है।
- अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रेषित अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर उपलब्ध करवाया गया एवं जन जागरूकता अभियान का संचालन किया गया।
- अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह केन्द्र द्वारा निर्देशित तिथिवार शहर के विभिन्न स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थानों पर गोष्ठियों/सेमिनारों के माध्यम से मनाया गया।
- अणुव्रत आंदोलन की जानकारी देकर सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है, ताकि लोगों को ज्यादा से ज्यादा अणुव्रत के साथ जोड़ा जा सके।
- समणी निर्देशिका मुदितप्रज्ञा के सान्निध्य में अणुव्रत आंदोलन पर विस्तृत चर्चा की गयी। समणीजी ने उपस्थित संभागियों को अणुव्रत इतिहास की जानकारी दी।
- नोखा के वर्तमान विधायक कन्हैयालाल झंवर के तेजपुर आगमन पर अणुव्रत साहित्य प्रदान कर सम्मान किया गया।
- वरिष्ठ पत्रकार नथमल टिबडेवाल का अणुव्रत साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

इसके अलावा क्षेत्र में अणुव्रत संबंधी गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है।

***--किशनलाल बोथरा, अध्यक्ष***

www.terapanthinfo.com



# अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण का केलवा में भव्य स्वागत

**केलवा, १० जुलाई।** अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने जैसे ही लालगढ़ से केलवा की ओर प्रस्थान किया, जनता का सैलाब उमड़ पड़ा। मेवाड़ के प्रत्येक श्रद्धालु की आन्तरिक भावना मानों आज साकार रूप ले रही थी। हर कोई अपने आराध्य का अभिनंदन और वर्धापन करने हेतु समुत्सुक था। चारों ओर हर्ष, उत्साह, उल्लास और उमंग का वातावरण था।

स्वागत जुलूस के प्रारम्भ में अहिंसा रथ सुमधुर ध्वनि तरंगों को प्रसारित करता हुआ गतिमान था। समाज के साथ-साथ ध्वज थामे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी बुलन्द जयघोषों से वातावरण को गुंजायमान बना रहे थे। नयनाभिराम प्रस्तुति देने वाली झांकियां दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी। महाश्रमणी, मुख्य नियोजिका आदि साध्वीवृंद पूज्यप्रवर के आगे-आगे गतिमान थी। जैन ध्वज के पीछे धीर-गंभीर कदमों से गतिमान आचार्य महाश्रमण अपने दोनों करकमलों से दर्शनार्थियों पर आशीष की वृष्टि कर रहे थे। कतारबद्ध विश ाल साधु समुदाय अपने गुरु के पदचिह्नों का अनुगमन कर रहा था। हजारों की संख्या में उपस्थित पुरुष वर्ग का जोश शिखरों को छू रहा था। हजारों लोग आचार्य महाश्रमण के दर्शन कर अहोभाव का अनुभव कर रहे थे।

आचार्यश्री के स्वागत हेतु गांव के प्रत्येक समाज का प्रत्येक व्यक्ति आतुर था। बड़ी संख्या में सम्बद्ध समाज के लोगों ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। छोटा रावला के परिपार्श्व में सुशिक्षित जातिमान घोड़ों और बन्दूक की ११ गोलियों द्वारा सलामी देकर राजपरिवार ने अपने कुल की परम्परानुसार आचार्यश्री का गरिमामय स्वागत किया। सभी समाज के लोगों ने आचार्यश्री के प्रति शुभकामनाएं अर्पित कीं। स्वागत जुलूस के मध्य आचार्यश्री रमेश जुगराज नाहर परिवार के नवनिर्मित आवास पर पधारकर साध्वियों के सुखद प्रवास की शुभाशंसा अभिव्यक्त की।

आचार्य महाश्रमण ने अपनी धवलवाहिनी के साथ ६ बजकर ५५ मिनिट पर नवनिर्मित महाप्रज्ञ भवन में प्रवेश किया। इससे पूर्व बिन्दिया रोशनलाल सांखला ने आचार्यश्री से मंगल पाठ का श्रवण कर इस भवन को लोकार्पित किया।

**आचार्य भिक्षु के आसन पर**

आचार्य महाश्रमण जुलूस के मध्य अंधेरी ओरी में पधारे। तेरापंथ की स्थापना भूमि और आचार्य भिक्षु की प्रथम चतुर्मास-स्थली में अणुव्रत अनुशास्ता को देखकर जन-जन पुलकित और प्रफुल्लित था। आचार्यश्री ने चन्द्रप्रभु मंदिर का अवलोकन किया एवं उस चौकी पर विराजमान हुए, जिस चौकी पर मंदिर के यक्षराज ने तेरापंथ के आचार्य को ही बैठने की स्वीकृति प्रदान की थी। आचार्य भिक्षु के आसन पर विराजित आचार्य महाश्रमण ने यहां मंगल पाठ सुनाकर अंधेरी ओरी का अवलोकन भी किया।

**स्वागत में उमड़ा जन सैलाब**

खचाखच भरे विशाल तेरापंथ समवसरण में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर समायोजित स्वागत समारोह का प्रारंभ आचार्यश्री के मंगल मंत्रोच्चारण से हुआ। तत्पश्चात् रमेश जुगराज बोहरा परिवार द्वारा मंच के पीछे बनी अंधेरी ओरी की सुन्दर प्रतिकृति का लोकार्पण किया गया। महिला मंडल के संगान के पश्चात् आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, उपाध्यक्ष संपतलाल मादरेचा, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, स्वागताध्यक्ष परमेश्वर बोहरा, मंत्री लवेश मादरेचा, स्थानीय सभा के अध्यक्ष बाबूलाल कोठारी, राजेन्द्र कोठारी, केलवा मित्र मंडल के अध्यक्ष प्रकाश सिंघवी ने आचार्यश्री का अपने गांव में आस्थासिक्त अभिनंदन किया। स्थानीय सरपंच दिग्विजयसिंह राठौड़ और ठाकुर मोखमसिंह की ग्यारहवीं पीढ़ी के ठाकुर देवीसिंह राठौड़ एवं ठाकुर हरिओमसिंह राठौड़ ने पूज्यप्रवर के केलवा आगमन पर स्वागत किया। सम्पूर्ण गांव की ओर से गणमान्य महानुभावों ने आचार्य महाश्रमण को अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

राजसमंद विधायक भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव किरण माहेश्वरी ने कहा--महाश्रमणजी ने आचार्य बनते ही केलवा को अपना पहला चौमासा प्रदान किया, यह हम क्षेत्रवासियों का परम सौभाग्य है। आपने मेवाड़ के छोटे-छोटे क्षेत्रों में अतिशय परिश्रम किया है, इससे तेरापंथ एवं जैन समाज ही नहीं, अपितु सभी वर्गों के लोग लाभान्वित हुए हैं। मैं इस क्षेत्र की जन प्रतिनिधि होने के नाते यह कामना करती हूं कि आचार्यश्री का यह चातुर्मास ऐतिहासिक बने।

ठाकुर हरिओमसिंह राठौड़ ने केलवा का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा--तेरापंथ के उद्गम के समय से ही राजपरिवार का तेरापंथ के साथ आत्मीय संबंध रहा है, यह हमारे परिवार का अहोभाग्य है। मैं पूरे राज परिवार की ओर से आपका स्वागत करता हूं।

महाराष्ट्र के उत्पाद शुल्क व पर्यावरण मंत्री गणेश नाईक ने कहा--'आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ ने अनेक अवदानों द्वारा मानवजाति के उत्थान का भगीरथ प्रयास किया। आचार्य महाश्रमण उसी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। महाराष्ट्र के मंत्री के नाते मैं सम्पूर्ण महाराष्ट्र की ओर से आपश्री से मुम्बई-महाराष्ट्र पधारने का अनुरोध करता हूं।

राजसमंद के सांसद गोपाल सिंह शेखावत ने कहा--'मैं आचार्य तुलसी के साधनामय जीवन से बहुत प्रभावित हुआ। आचार्य महाश्रमण एक महान समाज सुधारक एवं आध्यात्मिक विभूति हैं। मैं देखता हूं कि आचार्यश्री में तुलसी-महाप्रज्ञ संक्रान्त हैं।

www.terapanthinfo.com



# गुरुवचन को पूरा करने और ऋण चुकाने आया हूं : आचार्य महाश्रमण

केन्द्रीय भूतल परिवहन व राजमार्ग मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी ने कहा--'आचार्य महाश्रमण द्वारा प्रदत्त नैतिक संदेश सबके लिए हितकारी व कल्याणकारी है। आप जैसे संत मार्गदर्शक बनकर देश के आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। आपके इस केलवा प्रवास से सबको नया सम्बोध प्राप्त होगा।

ठाणे (महाराष्ट्र) के सांसद डॉ. संजीव नाइक ने केलवा समाज को एक एंबुलेंस समर्पित करते हुए चाबी का प्रतीक प्रतिनिधियों को भेंट किया।

जिला प्रमुख किशनलाल गमेती, पूर्व जिला प्रमुख हरिसिंह राठौड़, कांग्रेस जिला अध्यक्ष देवकी नंदन गुर्जर 'काका', राजसमंद नगरपालिकाध्यक्ष आशा पालीवाल, नाथद्वारा नगरपालिका अध्यक्ष गीता शर्मा, थानाधिकारी शर्मा आदि महानुभावों ने भी आचार्य के प्रति अपनी भावांजलि समर्पित की।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा--'आचार्यश्री के चातुर्मास प्रवेश पर उत्साह का समंदर लहरा रहा है। केलवा वह पवित्र भूमि है, जहां से क्रांति का संदेश पूरे विश्व में प्रसारित हुआ। यह वह तपोभूमि है, जहां से निकले प्रकंपनों ने सबको प्रभावित किया। आचार्यश्री के इस प्रवास में जन-जन को पावन पथदर्शन प्राप्त हो सकेगा, यही मंगलकामना है।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा--'आचार्य भिक्षु ने केलवा की इस धरती पर वज्र संकल्प स्वीकार किया। पवित्र मार्ग पर उनके चरण चले। आचार्य महाश्रमण के इस चातुर्मास को माध्यम बनाकर श्रावक-श्राविकाएं समाज दर्शन के प्रवक्ता बनें तो बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। आचार्यश्री के पवित्र आभामंडल में सबको त्राण मिले और यह मंगल प्रवेश मंगलकारी बने।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा--आज केलवा प्रवेश को देखकर त्रैयालीस वर्ष पूर्व आचार्य तुलसी के कन्याकुमारी पदार्पण की स्मृति हो आई। उस यात्रा में गुरुदेव ने तीन सागर के संगम पर आसीन होकर पूरे विश्व को मानवता का संदेश दिया था। आज केलवा प्रवेश पर भी तीन सागर का संगम दृष्टिगोचर हुआ--जनता का पारावार, जनता के दिलों में उमड़ रहा श्रद्धा का दरिया तथा मंच पर विराजमान करुणा के महासागर।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा--भौतिक दुनिया में अनेक पदार्थों को मंगल माना जाता है। पर धर्म से बढ़कर कोई मंगल नहीं होता, वह उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा संयम व तप धर्म है। जिसके जीवन में धर्म है, उसके चरणों में मनुष्य ही नहीं देवता भी प्रणत होते हैं।

आचार्यश्री ने आगे कहा--धर्म की साधना करते-करते और धर्मोपदेश देते-देते आज मैं ससंघ केलवा आया हूं, परम पूज्य स्वामीजी के क्षेत्र में आया हूं। प्रवास स्थल आने से पूर्व मैं विशाल जुलूस के मध्य अंधेरी ओरी गया। आचार्य भिक्षु ने वहां अपनी साधना से आलोक प्रस्फुटित किया था। तत्रस्थ चन्द्रप्रभु भगवान के मंदिर के बाहर निर्मित दो चबूतरों में से एक पर मैं बैठा। कहा जाता है कि आचार्य भिक्षु उस पर विराजते थे और उनके उत्तराधिकारियों को ही वहां बैठने का अधिकार है।

केलवा चतुर्मास के संदर्भ में आचार्यश्री ने कहा--यह चातुर्मास मैं मेरा मानूं या आचार्य महाप्रज्ञ का। स्वास्थ्य आदि कारणों से गुरुदेव का पूर्व निर्णित चतुर्मास केलवा नहीं हो सका। गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद मैंने उनकी अवशिष्ट यात्रा को पूरा करने का निर्णय लिया और आज केलवा में चातुर्मासिक प्रवेश किया है। मैं गुरुवचन को पूरा करने और स्थूल भाषा में कहूं तो गुरु का ऋण चुकाने यहां आया हूं। मेरे साथ विशाल साधु-साध्वी समुदाय है। केलवा के सभी वर्गों ने मेरा स्वागत किया, यह मैं उनकी सहृदयता मानता हूं।

आचार्यश्री ने कहा--केलवा का राजपरिवार शालीन है। आचार्य भिक्षु ने ठाकुर मोखमसिंह के हाथ से राजमहल में प्रथम गोचरी ग्रहण कर इतिहास का सृजन किया। मेरी भी इच्छा है कि मैं भी राजपरिवार में गोचरी कर उस इतिहास की पुनरावृत्ति करूं।

द्वितीय आचार्य के बाद केलवा में आचार्यों के चातुर्मास न होने के संदर्भ में आचार्यश्री ने कहा--आचार्य भारमल के बाद मैं यहां चतुर्मास करने आया हूं। इस बीच १९० वर्षों के प्रलंबकाल में आचार्यों ने चतुर्मास क्यों नहीं किए? मंत्री मुनि आदि इतिहास- विज्ञ शोधपूर्वक इसका समाधान खोजकर बताएं।

अहिंसा यात्रा की चर्चा करते हुए आचार्यश्री ने कहा--**मैं चाहता हूं सम्पूर्ण केलवा नशामुक्त बने। इस दृष्टि से इस चतुर्मास में नशामुक्ति अभियान सघनता के साथ गतिमान रहे। यह जनकल्याण का कार्य है। यह अभियान केलवा चतुर्मास की एक बड़ी उपलब्धि हो सकेगी।** उन्होंने आचार्य भिक्षु का पावन स्मरण करते हुए श्रीमज्ज जयाचार्य द्वारा रचित 'भिक्षु म्हारै प्रगट्या जी भरत खेतर में...' गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में समागत मुख्य अतिथियों को साहित्य एवं स्मृति चिह्न से सम्मान किया गया। संचालन मुनि मोहजीतकुमार एवं ओम आचार्य ने किया।

**अणुव्रत मित्र पुरस्कार**

मध्याह्न में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में महाराष्ट्र के पर्यावरण मंत्री गणेश नाइक को जैन विश्व भारती द्वारा अणुव्रत मित्र पुरस्कार समर्पित किया गया। जैविभा अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, मुख्य न्यासी रणजीत कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति के साथ स्मृति चिह्न, प्रशस्ति-पत्र व पुरस्कार राशि दो लाख पचास हजार रु. का चेक प्रदान किया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन जैविभा के सहमंत्री विजयसिंह चौरड़िया ने किया।

मुनि सुखलाल, मुनि किशनलाल, मुनि रजनीशकुमार ने नाइक की अणुव्रत के प्रति निष्ठा को श्लाघनीय बताया। रमेश सुतारिया, सुरेन्द्र कोठारी, नवी मुम्बई शिक्षा समिति सदस्य अर्जुन सिंघवी, ओम आचार्य, शशिकांत विराजदार, लादूलाल श्रीमाल एवं ठाणे के सांसद संजीव नाइक ने गणेश नाइक की सेवाओं का उल्लेख किया।

गणेश नाइक ने कहा--मुझ पर आचार्यजी की जो कृपा है, वही मेरे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। उन्होंने आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए पुरस्कार में प्राप्त राशि जैन विश्व भारती को लौटा दी।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'जैन विश्व भारती' शिक्षा, साधना, सेवा, साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाली महत्त्वपूर्ण संस्था है। आज इस संस्था द्वारा गणेश नाइक को अणुव्रत मित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस सम्मान से भी वह सम्मान बड़ा था, जब आचार्य महाप्रज्ञ ने इन्हें 'कल्याण मित्र राजनेता' के रूप में सम्बोधित किया। जैविभा द्वारा प्रदत्त सम्मान को स्वीकार करके इन्होंने अर्थ को लौटा दिया। धन का त्याग करना बड़ी बात होती है। नाइकजी अहिंसा, अणुव्रत, जीवन विज्ञान आदि कार्यों को आगे बढ़ाते रहें। इनके सुपुत्र सांसद संजीव नाइक अपने साथी सांसदों के बीच अणुव्रत आदि की चर्चा करते रहें। संचालन मुम्बई के चिमन सिंघवी ने किया।

www.terapanthinfo.com



## शिक्षक संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी

**हांसी, 5 जुलाई।** राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के तत्वावधान में शिक्षक संगोष्ठी एवं प्रशिक्षण केन्द्र के संभागियों द्वारा निर्मित कौशल प्रदर्शनी आयोजित हुई। अध्यक्षता मदनलाल जैन ने की।

मुख्य अतिथि डॉ. हीरालाल ने कहा--हम आचार्य महाश्रमण में आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का दर्शन करते हैं। हमें नशामुक्ति अभियान व नैतिकता के प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व मिला, यह संस्था के लिए गौरव की बात है। शिक्षक स्वयं संस्कारवान रहेंगे तो विद्यार्थियों पर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जगदीश चन्द्र एवं प्रकाश जैन ने भी अपने विचार रखे। अवधेश कुमार ने विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। सिलाई संभाग की बहनों ने शारदा तवर के नेतृत्व में प्रदर्शनी लगाई।

साध्वी मंजूरेखा ने कहा--मानव-मानव में ज्योति का उदय हो, युग की मांग है कि दिलों को जोड़ना सीखें। परिवार में सुख शांति और आनन्द है तो स्वर्ग का आभास स्वतः ही होगा। संचालन प्रदीप जैन ने किया।

## अहिंसा प्रशिक्षण सेमिनार

**संगरूर, 8 जुलाई।** साध्वी सुदर्शना के सान्निध्य में अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा आयोजित शिक्षकों का जिला स्तरीय अधिवेशन मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा--आचार्य तुलसी ने तीन महत्वपूर्ण अवदान--अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के रूप में मानव जाति को दिये हैं। आचार्य महाश्रमण के शब्दों में--सुंदर जीवन शैली के लिए आवश्यक है नशामुक्त जीवन शैली। साध्वी लक्षित प्रभा ने शिक्षक वर्ग से आह्वान करते हुए कहा कि यहां उपस्थित सभी यह संकल्प करें कि हम प्रत्येक व्यक्ति कम से कम 10 व्यक्तियों को व्यसनमुक्त बनाने का प्रयास करेंगे। साध्वीश्री की प्रेरणा से उपस्थित शिक्षकों ने कहा कि हम अपने क्षेत्र में व्यसनमुक्ति का भरसक प्रयास करेंगे। साध्वी पुनीतयशा ने जीवन विज्ञान एवं व्यसनमुक्ति की अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाये। कार्यक्रम में आर.सी. जैन, सरदार हरदयाल सिंह, ओमप्रकाश, सरदार टमकोर सिंह, मोहम्मद सिंह, सरदार दलवीन्द्र सिंह, संत अबा सुखमीन्द्र सिंह, बलवंत सिंह, हिम्मतराय, डॉ. जगदीश, डायरेक्टर मोहन शर्मा ने अपने विचार रखे। संचालन संजय भाई ने किया।

## सामाजिक क्रान्ति के सूत्रधार थे तुलसी

**गुवाहाटी।** साध्वी निर्वाणश्री ने आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस पर कहा--आचार्य तुलसी एक नई सामाजिक क्रान्ति के सूत्रधार थे। उन्होंने समाज को नई दिशा दी। गुरुदेव तुलसी ने समाज में पलने वाली अंध-रुढ़ियों को मिटाने का भगीरथ प्रयास किया। 'नया मोड़' के रूप में उन्होंने सड़ी-गली परम्पराओं पर प्रहार किया। वे कलात्मक जीवन के पक्षधर थे।

असम सरकार के शिक्षा सचिव, लालचंद सिंघी ने कहा--आचार्य तुलसी ने अपनी दूरगामी सोच से पूरे समाज को ही उच्च क्षितिज पर आसीन कर दिया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा, समणी निर्देशिका मुदितप्रज्ञा, साध्वी मुदितप्रभा ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। प्रारंभ महिला मंडल के संगान से हुआ। कार्यक्रम में निर्मल कोटेचा, राजेश जाम्मड़, मधु डागा, सुमेरमल सुराणा ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी योगक्षेमप्रभा ने किया।

## प्रज्ञा दिवस का भव्य आयोजन

**सूरत।** साध्वी कुन्थुश्री के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ का 92वां जन्मदिवस ''प्रज्ञा दिवस'' के रूप में रिजेन्सी टावर पिपलोद सूरत में मनाया गया। साध्वीश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के अनेक द्रष्टांत सुनाते हुए कहा--मुनि नथमल हमेशा गुरु के प्रति समर्पित और अनुशासित रहे। उनके समर्पण ने उन्हें युगपुरुष बना दिया। आचार्य महाप्रज्ञ ने 20 वीं सदी को आलोकित किया। साध्वी कंचनरेखा, साध्वी सुमंगला एवं साध्वी सुलभयशा ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर बालचंद बेताला, कमल जैन, मोहन, प्रहलाद एवं पारस दूगड़ ने अपने विचार रखे। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन अर्जुन मेड़तवाल ने किया।

## आचार्य महाप्रज्ञ का जन्मदिवस

**लहरगागा।** मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में सभा भवन में आचार्य महाप्रज्ञ का 92वां जन्मदिवस ''प्रज्ञा दिवस'' के रूप में मनाया गया। मुनिश्री कहा--आचार्य महाप्रज्ञ विद्या विनय विवेक के प्रतिरूप थे। उनकी सरलता, स्वच्छता, सहिष्णुता अद्भुत थी। उन्होंने अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन को मानवता एवं नैतिकता का संदेश दिया। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी प्रज्ञा से जन-जन को प्रज्ञावान बनाया। मंगलाचरण महिला मंडल ने किया। कार्यक्रम में प्रवीण जैन, सुशील जैन, अशोक जैन, सरोज जैन, दिलीप सिंह पंसारी ने अपने विचार रखे। स्वागत एवं धन्यवाद मदनलाल जैन ने किया। संयोजन डॉ. अशोक पाल ने किया।

## दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता जरूरी

**लाडनूं।** दूरस्थ शिक्षा भारत जैसे देश में आज वरदान साबित हो रही है। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में शिक्षा की द्वैध प्रणाली लागू है। दूरस्थ शिक्षा के कारण यह विश्वविद्यालय लाडनूं जैसे छोटे से स्थान पर होते हुए भी देश के कोने-कोने के विद्यार्थी यहाँ के उपयोगी पाठ्यक्रमों का लाभ उठा रहे हैं। ये विचार जैन निदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी व्यक्त किये। डॉ. संजीव गुप्ता ने जीवन विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। जे.पी. सिंह ने एम.ए. शिक्षा एवं बी.लिब. पाठ्यक्रम की महत्ता को प्रतिपादित किया। डॉ. अशोक भास्कर ने एम.ए. अंग्रेजी पाठ्यक्रम की जानकारी दी। इस अवसरपर रामकैलाश जोशी, निर्मल भार्गव, अजय पारीक, शरद जैन एवं विकास शर्मा ने भी दूरस्थ शिक्षा की उपादेयता पर प्रकाश डाला।

## विवेक ही धर्म है

**कोठारिया, 8 जुलाई।** मुनि जतन कुमार 'लाडनूं' ने कहा--विवेक ही धर्म है। विवेक पूर्ण जीवन जीना ही सच्चा जीवन है। विवेक खाने पीने मे भी होना चाहिए। चलने, फिरने मे भी होना चाहिए। प्रत्येक कार्य मे विवेक जरूरी है। मुनि आनन्द कुमार 'कालू'' ने कहा--अपने विवेक के आधार पर धर्म का जीवन व्यवहार मे आचरण करे। धर्म से जीवन उन्नत बनता है। संयम के साथ समय का भी मूल्यांकन जरूरी है।

## रक्तदान शिविर

**शेरपुर।** शेरपुर अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र में स्वैच्छिक रक्तदान क्लब द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर का श्रीगणेश संजय भाई ने अपना रक्त दान कर संभागियों को प्रेरणा दी।

इस अवसर पर 52 अन्य लोगों ने अपना-अपना रक्तदान किया। कार्यक्रम में क्लब के प्रधान विनोद कुमार मोदी, महासचिव बलविन्द्र सिंह धन्ना, कोषाध्यक्ष गुरविन्द्र सिंह कातेरा, पूर्व सरपंच राकेश गर्ग एवं शेरपुर सभा के कोषाध्यक्ष दीपक गर्ग ने भाग लिया।

# 'अणुव्रत द्वार' का लोकार्पण

**खरनोटा, ४ जुलाई।** आचार्य महाश्रमण जवालिया से खरनोटा की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवती खारों की आसन गांव के गुर्जर समाज ने मुख्य मार्ग तक पहुंच कर आचार्यश्री से सम्बोध प्राप्त किया। कालागुमान गांव में अनेक लोगों ने आचार्यवर से प्रेरणा प्राप्त कर नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्य महाश्रमण के 'खरनोटा' आगमन पर गांव की सीमा पर सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री की अगवानी की। आचार्यप्रवर ने मंगलपाठ का उच्चारण कर यहां के घीसूलाल, शंकरलाल, चान्दमल, सुआलाल बोल्या परिवार द्वारा नवनिर्मित विशाल 'अणुव्रत द्वार' का लोकार्पण किया गया। तत्पश्चात आचार्यश्री स्वागत जुलूस के साथ स्थानीय सभा भवन का स्पर्श करते हुए घीसूलाल बोल्या के आवास पर पधारे। एकदिवसीय प्रवास यहीं रहा।

आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा--मोह के प्रभाव से व्यक्ति पाप कर्म का बंध करता है। पराक्रम एवं पुरुषार्थ के द्वारा अपनी मोह चेतना को कमजोर करने का प्रयत्न करें। आचार्यवर ने जप, ध्यान के साथ दिशा के महत्त्व की भी चर्चा की।

इस अवसर पर मुख्य नियोजिका, साध्वीप्रमुखा और मंत्री मुनि ने संभागियों को इस प्रवास का लाभ उठाकर अपने जीवन में परिष्कार लाने की प्रेरणा दी। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अणुव्रत आंदोलन के सन्दर्भ में विचार व्यक्त किए।

कुंभलगढ़ तहसील के प्रधान सूरतसिंह दसाना ने अपने विचार रखे। खरनोटा सभा के अध्यक्ष घीसूलाल बोल्या और श्रवणकुमार बोल्या ने आचार्यश्री का श्रद्धापूर्ण स्वागत किया। भंवरलाल कोठारी ने पूज्यवर से सपत्नी शीलव्रत स्वीकार किया। स्थानीय कोठारी परिवार के पन्द्रह से अधिक सदस्यों ने श्रावक के बारह व्रतों को स्वीकार कर अपने आराध्य का त्यागमय अभिनंदन किया। परिवार की ओर से नीलम कोठारी ने बारह व्रतों का हस्तनिर्मित प्रतीक गुरुचरणों में समर्पित किया। कार्यक्रम में सैंकड़ों ग्रामीण भी उपस्थित थे। आचार्यश्री की मधुर प्रेरणा से प्रभावित अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार कर स्वस्थ जीवनशैली की ओर प्रस्थान किया।

# आ. महाप्रज्ञ को मिले भारत रत्न : स्वदेश भूषण

**दिल्ली।** साध्वी ज्योतिप्रभा के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ का 92 वां जन्मदिवस ओसवाल भवन विवेक विहार में मनाया गया। स्वदेश भूषण जैन ने कहा--अणुव्रत एवं अहिंसा यात्रा के माध्यम से जैन समाज को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने वाले एवं उसको प्रख्यात ख्याति दिलाने वाले महापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ रहे हैं। उन्होंने अणुव्रत के छोटे-छोटे सिद्धांतों के माध्यम से मानवता को नैतिकता का पाठ पढ़ाया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने सर्वधर्म सदभाव, साम्प्रदायिक एकता की दिशा में 60-70 हजार किलोमीटर की पदयात्रा कर विश्व में अपनी विशेष पहचान बनाई। 250 से अधिक पुस्तक लिखने वाले विद्वान महापुरुष को राष्ट्र के सर्वोच्च अलंकरण ''भारत रत्न'' से सम्मानित किया जाना चाहिए। इससे इस सम्मान की भी गरिमा बढ़ेगी। अहिंसा एवं शान्ति की दिशा में आचार्य महाप्रज्ञ को पूर्व में भी कई सम्मान मिल चुके हैं।

# इंटर-रिलीजियस फेस्टीवल गैट-टूगेदर

**येरकाट।** आचार्य महाप्रज्ञ एवं डॉ. कलाम के संयुक्त प्रयासों से वर्ष 2005 में 'सूरत अध्यात्म घोषणा पत्र' की क्रियान्विति हेतु 'फाउंडेशन फॉर यूनिटी ऑफ रिलिजन एंड एनलाइटेन्ड सिटीजनशिप' की शुरुआत हुई। उसकी शाखा तिरूवन्नामलै में चल रही है। सन् 2011 का इंटररिलीजियस फेस्टीवल येरकाट में समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा के सान्निध्य में मनाया गया। हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम, जैन इत्यादि चार धर्मों का प्रतिनिधित्व हुआ। चारों धर्मों के प्रतिनिधि सपरिवार आश्रित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सादिख बाशा ने की। हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व जनरल सेक्रेटरी तमिलनाडु आर्य वैश्य समाज मेडा मोहन ने किया। ईसाई धर्म का प्रतिनिधित्व कार्मेल चर्च के फादर रेवरेन्ट जयगरन ने किया। मुस्लिम समाज की तरफ से जनाब जमालुदीन उपस्थित थे। सभी ने अपनी संस्कृति एवं धर्म की जानकारी दी।

# अणुव्रत लेखक अब्दुल जब्बार का सम्मान

**उदयपुर, ३० जून।** आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित समारोह में कवि अब्दुल जब्बार को वर्ष 2010 का बोधि सम्मान प्रदान किया गया। भंवरलाल कर्णावट फाउंडेशन के अध्यक्ष दरियावसिंह ने सम्मान की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। आचार्य महाश्रमण ने कवि जब्बार को सहज, सरल एवं साधारण व्यक्ति बताते हुए एक असाधारण कवि बताया। साथ ही निरंतर देश एवं समाज हित में निर्भय होकर सृजन करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में लक्ष्मणसिंह कर्णावट, डॉ. ओमानन्द सरस्वती, गांधीवादी विचारक नवरतन पटवारी, डॉ. सीमा श्रीमाली, शायर मुश्ताक चंचल उपस्थित थे।

# जिंदगी चुनिए तम्बाकू नहीं

**जयपुर।** राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपने निवास पर राजस्थान वालंटरी हैल्थ एसोसिएशन द्वारा निर्मित ''तम्बाकू छोड़िए, अच्छी सेहत से जुड़िए'' पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर, सत्यनारायण सिंह, सत्येन चतुर्वेदी, नरेन्द्र सिंह, डॉ. वीरेन्द्र सिंह, डॉ. यू.एस. रहमान, जस्टिस आई एस इसरानी, जस्टिस पानाचंद जैन, धर्मवीर कर्टवा उपस्थित थे। अशोक गहलोत ने समाज द्वारा किये जा रहे उक्त कार्य की सराहना की। जी.एल. नाहर ने नशामुक्ति अभियान फोल्डर की प्रति मुख्यमंत्री को दी एवं अणुव्रत महासमिति द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। जस्टिस आई.एस. ईसरानी पूर्व न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा प्रस्तुत 'पानी बचाओ' पोस्टर का भी विमोचन मुख्यमंत्री ने किया।

# व्यसनमुक्ति संगोष्ठी

**राजलदेसर।** अणुव्रत समिति राजलदेसर एवं जोरापुर के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम जोरावरपुरा में व्यसनमुक्ति संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूनमसिंह राजपुरोहित ने की। मुख्य अतिथि रतनगढ़ के विधायक राजकुमार रिणवां थे। प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। राजकुमार रिणवां ने ग्रामवासियों को बधाई देते हुए महिला शिक्षा एवं कम्प्यूटर शिक्षा पर बल दिया। अणुव्रत समिति राजलदेसर के अध्यक्ष गोविन्दराम पुरोहित ने अणुव्रत समिति के कार्यकलाप एवं प्रगति की जानकारी दी। गोविन्दनारायण शर्मा ने उपस्थित संभागियों से नशामुक्ति के संकल्प पत्र भरवाए। अणुव्रत समिति एवं विकास समिति राजलदेसर द्वारा मेधावी छात्रों को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। पूर्व अध्यक्ष हनुमान सिंह राजपुरोहित का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम की सफलता में मूलचन्द बैद का सराहनीय सहयोग रहा।



www.terapanthinfo.com